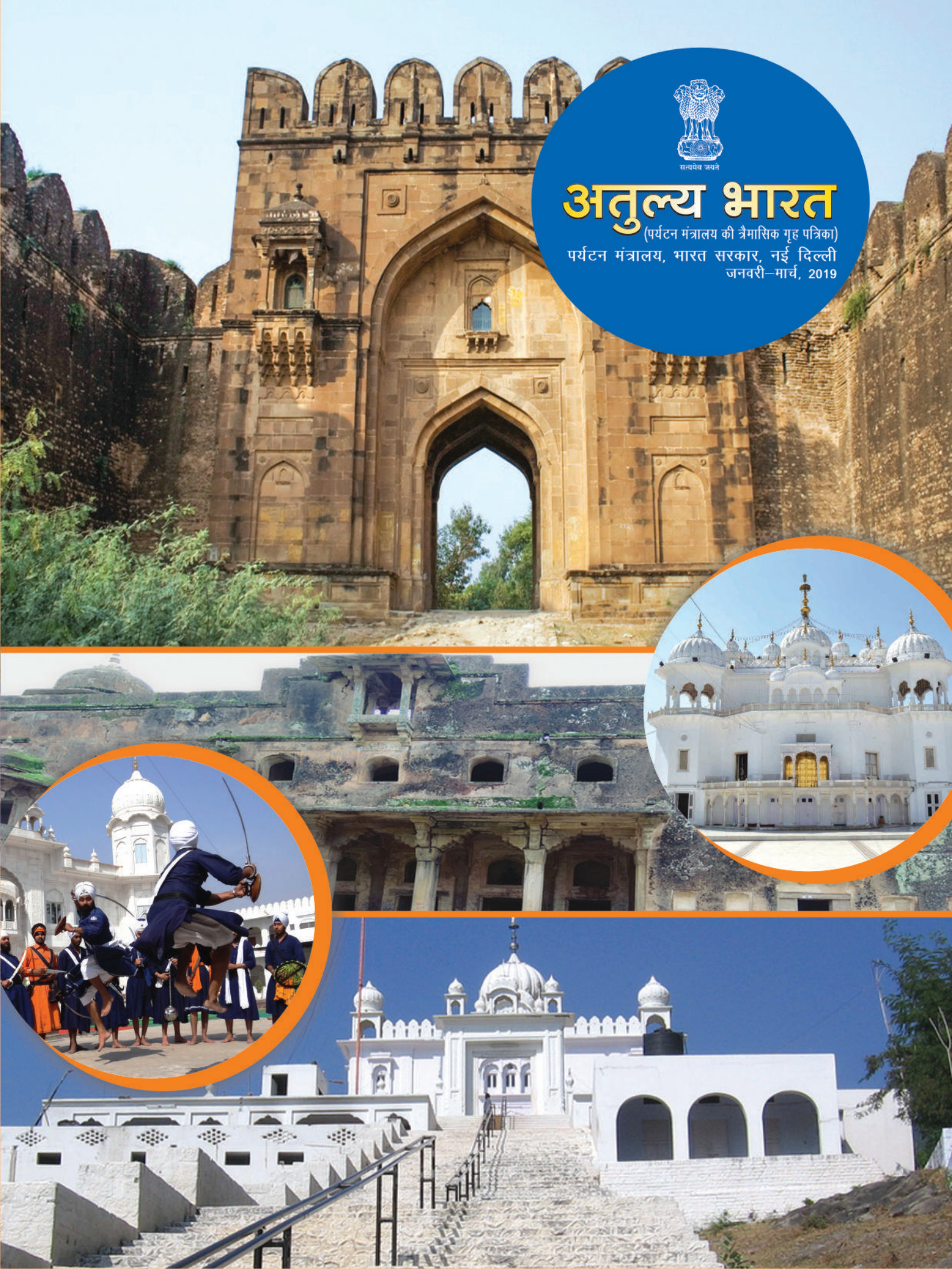

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
जनवरी–मार्च, 2019

किला बाउली साहिब, आनन्दपूर साहिब

अतिथि देवो भवः

सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

जनवरी–मार्च, 2019

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

- संरक्षक : **श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : **श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- संपादक : **श्रीमती सन्तोष सिल्पोकर, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार**
- प्रबंध–संपादक : **श्री मोहन सिंह, कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय**
- अन्य सहयोगी : **श्री राज कुमार**

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंट्स,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली – 110011
ई–मेल– editor.atulyabharat@gmail.com
दूरभाष 011–23015594, 23793858

डॉलफिन प्रिन्टो–ग्राफिक्स
झण्डेवालान एक्सटेंशन
नई दिल्ली से मुद्रित
011–23593541–42

पर्यटन से संबंधित सूचनाओं के प्रसार हेतु निःशुल्क वितरण के लिए

वर्ष 4 अंक 15 जनवरी–मार्च, 2019

इस अंक में...

5 संपादक की कलम से...

शहर अलीगढ देख लें 07

शेर शाह का मक़बरा 16

भारत में स्वास्थ्य पर्यटन 25

तख्त श्री आनंदपुर साहिब 28

देवभूमि : धारचुला 39

कविताएं 48

अनजाने पर्यटन स्थल : आरा 48

रायसेन का किला : स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना 55

जाने अनजाने पर्यटन स्थल : चित्तूर 61

शुक्रताल 70

हाटू मंदिर : नरकंडा 75

भारत रत्न पुरस्कार : 2019 80

प्रतिक्रिया 84

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार 85

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' का 15वां अंक आपके सामने हैं। इसके लिए हम सभी सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों के प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं जिनसे हमें हर बार एक नई उर्जा मिलती है।

इस अंक में ऐसे विभिन्न स्थानों के बारे में विशेष सामग्री का समावेश किया गया है,जिनके बारे में अभी तक पर्यटकों को कम ही जानकारी होगी।

अपनी विरासत को जानने और समझने के लिए किसी किले की यात्रा पर्यटन का एक अनिवार्य स्तम्भ है। इन किलों से भी हमें अपने देश और प्रदेश के इतिहास के बारे मे जानकारियां मिलती हैं। किंतु ऐसा देखने सुनने में आता है कि आजकल कम ही लोग इन किलों में जाना पसंद करते हैं, जिससे इनके महत्व का अहसास नहीं हो पाता है। लेकिन इनके निकट पहुंचने पर यह किले खुद ही लोगों को अपनी ओर खींच लेते हैं। इस अंक में अब की बार कुछ किलों के बारे में बताया गया है जिसमें रायसेन का किला, अलीगढ़ का किला, बिहार में जगदीशपुर का किला और सासाराम तथा रोहतास गढ का किला।

मध्य प्रदेश के रायसेन में स्थित किले की खूबियों के बारे में सुश्री बीना सबलोक पाठक ने अपने आलेख "रायसेन का किला स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना" के माध्यम से अवगत कराया है।

उत्तर प्रदेश के अलीगढ शहर के पर्यटन स्थलों के बारे में सम्भवतः अधिकतर लोगों को पता नहीं है। ब्रज प्रदेश के मुहाने पर गंगा और यमुना के बीच बसे अलीगढ़ को हम अभी तक मुख्यरूप से तालों के लिए प्रसिद्ध मानते रहे हैं। लेकिन इसके अलावा यहां भी देखने योग्य पयर्टन के मनमोहक स्थल मौजूद है, जिन पर साधारणतया ध्यान नहीं गया है। यहां की सबसे बड़ी खासियत है कि इसे संग्रहालयों की नगरी कहा जाए तो अच्छा होगा। श्री क्षेत्रपाल शर्मा ने अपने आलेख "शहर अलीगढ़ देख लें" के माध्यम से अलीगढ़ के पर्यटन स्थलों के बारे में बताया है।

तख्त श्री आनंदपुरसाहिब सिखों का एक पवित्र शहर है। यहां अनेक गुरूद्वारे हैं जिनका अपना एक अलग ही इतिहास रहा है। इन गुरूद्वारों के अलावा भी यहां हाल ही में बनाया का एक विशेष पर्यटन स्थल है, विरासते–ए–खालसा। आनंदपुर साहिब के बारे में जानकारी दे रही है श्रीमती अनिता सच्चर।

मकबरों के शहर सासाराम की कहानी पुरानी है। फिर भी बहुत ही कम लोगों को इसके बारे में जानकारी है। सासाराम और इसके आसपास के पर्यटन स्थलों के बारे में श्री मुर्तजा कमाल ने अपने आलेख 'शेरशाह का मक़बरा' में विस्तार से बताने का प्रयास किया है।

इसी प्रकार बिहार में एक शहर है 'आरा', जिसके मनभावन पर्यटन स्थानों के बारे में भी शायद पाठकों को अभी तक जानकारी नहीं होगी। आरा के पर्यटन स्थलों तथा धार्मिक स्थलों के बारे में अपने लेख "आराः जाने– अनजाने पर्यटन स्थल" के माध्यम से श्री राजेश सिंह ने जानकारी प्रदान की है।

उत्तराखंड के पिथौरागढ़ ज़िले में हिमालय की ऊंची पहाड़ियों से घिरा धारचुला, एक बेहद खूबसूरत, शांत और सुरम्य पर्यटन स्थल है। धारचुला में भी भारत और चीन की सीमा पर अंतिम गांव है कुटी। यहां जाना आसान है और ईको–पर्यटन के प्रेमियों के लिए एक आदर्श स्थल है। धारचुला तथा निकटवर्ती पर्यटन स्थलों के बारे में श्री राजेन्द्र सिंह मनराल ने अपने आलेख 'देवभूमि : धारचुला' के माध्यम से जानकारी देने का अच्छा प्रयास किया है।

दक्षिण भारत के पर्यटन स्थलों के बारे में आंध्र प्रदेश में चित्तूर नगर और उसके आसपास के आश्चर्यजनक और मनमोहक पर्यटन स्थलों के बारे में श्री अनिरूद्ध सिंह ने अपने लेख जाने 'अनजाने पर्यटन स्थल : चित्तूर' में जानकारी दी है।

दिल्ली के निकट प्रकृति की गोद में बसा 'शुक्रताल' एक लोकप्रिय पर्यटन एवं तीर्थ स्थान है। इस स्थान के पौराणिक और ऐतिहासिक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए जानकारी दी है श्री रूपेश कुमार ने।

सुश्री संतोष सिल्पोकर ने शिमला के नरकंडा में हाटू शिखर के बारे में विस्तार से जानकारी दी है।

26 जनवरी 2019 को गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत रतन से सम्मानित भारत की तीन महान विभुतियों के बारे में बताया गया है।

आज हमारे देश में 'मेडिकल टूरिज्म' का महत्व बढ़ता जा रहा है और इसने अपना एक अलग स्थान बना लिया है। इस बारे में सुश्री अंकिता शर्मा ने अपने लेख 'भारत में स्वास्थ्य पर्यटन' के माध्यम से जानकारी दी है।

इनके अलावा डॉ. विश्वरंजन की कविताएं शामिल की गई हैं। साथ ही पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और रिपोर्टें के अंतर्गत मंत्रालय की गतिविधयों के पूर्ण विवरण भी प्रदान किए गए है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत" पत्रिका निश्चित रूप से अपना योगदान दे रही है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा को दर्शाने का अवसर दिया जा रहा है।

आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्सारहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में हम उनके आभारी हैं।

अंत में, उन सभी लेखकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)
प्रधान संपादक

पर्यटन

शहर अलीगढ देख लें

– क्षेत्रपाल शर्मा

ब्रज प्रदेश के मुहाने पर गंगा और यमुना के बीच बसा अलीगढ़, मुख्यरूप से तालों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन इसके अलावा और भी कई बातों के लिए मशहूर है जिस पर किसी का ध्यान नहीं गया होगा। यहां की सबसे बड़ी खासियत है कि इसे संग्रहालयों की नगरी कहा जाए तो अच्छा होगा। यहां संग्रहालय और शिक्षा ही नहीं, अदब भी शामिल है। भारत में हिंदी और उर्दू के सुविख्यात कवि गोपालदास 'नीरज' और हिंदी के हास्य कवि सम्राट काका हाथरसी के संगीत कार्यालय भी अलीगढ़ में पोषित हुए। शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि जाने माने गीतकार और संगीतकार स्व. श्री रवीन्द्र जैन और हिंदी फिल्मों में गुजरे ज़माने की हास्य अभिनेत्री उमा देवी उर्फ टुनटुन भी अलीगढ़ की ही देन हैं। अलीगढ़ को कोल के नाम से भी जाना जाता है।

यूं तो अलीगढ़ में बहुत सी चीजें प्रसिद्ध है, अलीगढ़ में खरीदारी, एक शहर के रूप में इसकी अपनी जीवन शैली, संस्कृति, कई शैक्षिक संस्थानों, संग्रहालयों और सुंदर प्राकृतिक स्थानों के लिए प्रसिद्ध है अलीगढ़। पर्यटन स्थलों के भ्रमण के अलावा भी यह शहर पर्यटकों को साल भर यहां के बाजारों में उनकी मनपसंद खरीददारी के लिए आकर्षित करता है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के साथ ही शेखा झील, मंगलायतन, खेरेश्वर धाम, मौलाना आजाद लाइब्रेरी, मडरॉक किला, मूसा डाकरी म्यूजियम, सर सैय्यद हाउस, इब्ने सीना अकैडमी, जियोलॉजिकल म्यूजियम और तिब्बिया म्यूजियम यहां की विशेषताओं में शामिल हैं।

*पूर्व संयुक्त निदेशक, क.रा.बी.नि. नई दिल्ली

अलीगढ़ का बहुत पुराना इतिहास रहा है। आईआईटी रुड़की में एटकिंसन द्वारा गज़ेटियर संरक्षित रखा गया है जिसमें बताया गया है कि राजा अनंगपाल के वंशज जब राज करते थे तब इसका नाम रामगढ़ के नाम से भी जाना गया था लेकिन अब अलीगढ़ की सदर तहसील को "कोल" के नाम से भी जाना जाता है जो कि इसका पुराना नाम रहा है। 1753 में कोल पर मथुरा और भरतपुर के प्रतापी जाट राजा सूरजमल ने अपना अधिकार कर लिया था।

संग्रहालय हमारे पर्यटन व संस्कृति की अनमोल धरोहर हैं। इनके जरिए हम अतीत की कई घटनाओं के बारे में सटीक और प्रमाणिक जानकारी प्राप्त करते हैं और उनके जरिए हमें सीख मिलती है।

मूसा डाकरी म्यूजियम

यह म्यूजियम अलीगढ़ विश्वविद्यालय परिसर में यूनिवर्सिटी रोड पर कैनेडी ऑडिटोरियम के पास है इसके मुख्य द्वार पर एम एफ हुसैन की बनाई हुई एक पेंटिंग है। विक्टोरिया गेट पर एक पुरानी घड़ी लगी

थी, खराब होने पर वह अब इस म्यूजियम के अंदर रख दी गई है। इसके भूतल पर काफी प्राचीन वस्तुएं संग्रहीत कर रखी गई हैं जो मनुष्य की यात्रा किस

थी। जिसे बाद में सर सैयद एकेडमी के रूप में एक स्मारक में बदल दिया था। संग्रहालय में सर सैयद के कुछ निजी सामान को भी प्रदर्शित किया गया है।

तरह पत्थर लोहे और तांबे से होते हुए आगे बढ़ती है उसका एक सचित्र वर्णन बताती हैं।

प्रथम तल पर प्रोफेसर आरसी गॉड द्वारा एटा के अतरंजीखेड़ा नामक स्थान और आसपास की खुदाई में मिली बेश कीमती वस्तुएं रखी गई है साथ ही दुर्लभ पांडुलिपियों की प्रतिलिपि भी प्रदर्शित की गई हैं।

सर सैयद अकादमी संग्रहालय : सर सैयद अहमद खां एक मुस्लिम दूरदर्शी और विचारक थे। शिक्षा, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें सम्मान से याद किया जाता है। यह भवन मूल रूप से एक सैनिक मैस था। उन्होंने शुरू में अपने पिता के लिए यह इमारत खरीदी

संग्रहालय को कई दीर्घाओं या चरणों में बांटा गया है। जबकि संग्रहालय का अधिकतर हिस्सा सर सैयद के जीवन और शिक्षाओं के लिए समर्पित है, वहीं एक

हिस्सा उनके द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहास और महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रदर्शित करता है।

हकीम करम हुसैन संग्रहालय : हकीम करम हुसैन संग्रहालय अलीगढ़ में प्रमुख शैक्षिक आकर्षणों में से एक है। यह अपने विशाल लेआउट एवं प्रदर्शन की एक विस्तृत श्रृंखला के लिए जाना जाता है। यद्धपि संग्रहालय न केवल बेहतर चिकित्सा और विज्ञान के इतिहास को दर्शाने के लिये प्रसिद्ध है, बल्कि यह चिकित्सकों और नोबल पुरस्कार विजेताओं की पांडुलिपियों, स्मृति चिन्हों एव संस्मरणों के एक विशेष और विशाल संग्रह के लिये भी प्रसिद्ध है। यहां प्रदर्शित विभिन्न मूर्तियों का संबध विभिन्न युगों और मेसोपोटामिया, मिस्र, बेबीलोन तथा अरब सभ्यता सहित अनेक सभ्यताओं से है। यह संग्रहालय खास तौर इतिहासकारों का पसंदीदा स्थान था। आजकल आस पास क्षेत्रों के लोगों के साथ ही अलीगढ़ आने वाले पर्यटकों को भी आकर्षित करता है।

चाचा नेहरू ज्ञान पुष्प संग्रहालय : चाचा नेहरू ज्ञान पुष्प थ्री डॉट्स स्कूल परिसर में स्थित चाचा नेहरू ज्ञान पुष्प संग्रहालय एक सुव्यवस्थित संग्रहालय है। 1982 में स्थापित यह संग्रहालय अपने विस्तृत जैविक, भौगोलिक और ऐतिहासिक प्रदर्शन हेतु प्रसिद्ध है। संग्रहालय बच्चों और युवाओं के लिए देखने और जानने के लिए सभी महत्वपूर्ण प्रदर्शनियां जैसे– विविध चट्टानों, खनिजों, जवाहरात, टिकटों, सिक्कों से सुसज्जित है। चित्रों और आधुनिक विज्ञान उपकरणों के विस्तृत वर्गीकरण से युक्त होने के कारण यह देश के सर्वश्रेष्ठ आधुनिक संग्रहालयों में से एक माना जाता है। यहां आने वाले दर्शकों में मुख्य रूप से स्थानीय स्कूलों के छात्र ही होते हैं। लेकिन पिछले कुछ समय से पर्यटक भी यहां आने में रुचि रखने लगे हैं। संग्रहालय का उद्देश्य बच्चों को बेहतर रूप से विज्ञान, पृथ्वी और अंतरिक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पक्षों की जानकारी इंटरैक्टिव तरीके से समझाने के लिए किया गया था।

मौलाना आजाद लाइब्रेरी : विश्वविद्यालय प्रांगण में मनमोहक बाग बगीचों से युक्त यह लाइब्रेरी देश के दूसरे पुस्तकालयों से कुछ अलग हटकर है। यह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का आधिकारिक मुख्य पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय में चौदह लाख से अधिक पुस्तकों का भंडार है। यहां कई प्राचीनतम दुर्लभ पांडुलिपियाँ भी उपलबध हैं। आज की नई प्रौद्योगिकी को देखते हुए इसे ई–पुस्तकालय के रूप में नई पहचान देने की पहल की गई है। इसका एक केंद्रीय पुस्तकालय है तथा विभिन्न तलों पर फैले 80 से अधिक विभागीय पुस्तकालय हैं। इन पुस्तकालयों में पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह है जो स्नातकोत्तर छात्रों और पेशेवरों की जरूरतों को यह पूरा करता हैं। यह लाइब्रेरी भारत में सबसे बड़ी और एशिया में दूसरी सबसे बड़ी लाइब्रेरी मानी जाती है। यह न केवल छात्रों के ज्ञान की जरूरतों को पूरा करती है, बल्कि भारत के इतिहास और संस्कृति पर भी प्रकाश डालती है। यहां खास तौर पर उल्लेखनीय सातवीं मंजिल पर स्थित एक पुस्तकालय है जिसकी शानदार साज सज्जा पुरानी मुस्लिम शैली के अनुसार की गई है। पुस्तकालय की इमारत के चारों ओर खूबसूरत लॉन व बगीचे हैं। देश में सबसे बड़ा पुस्तकालय होने के अलावा, मौलाना आजाद लाइब्रेरी सबसे सुंदर भी मानी जाती है।

अलीगढ़ में दो किले हैं, एक ऊपरकोट और दूसरा अलीगढ़ किला।

अलीगढ़ किला : अलीगढ़ का किला इस क्षेत्र में भारत के सबसे मजबूत किलों में से एक माना जाता है। यह इब्राहिम लोधी के दरबार में पीठासीन राज्यपाल के पुत्र द्वारा 16 वीं सदी में बनाया गया था। अलीगढ़–बरोली रोड पर(मेहरावल की तरफ) स्थित यह किला एक बहुभुजाकार की तरह है तथा इसके चारों ओर एक बहुत गहरी खाई है। बाद के वर्षों में, किले के और अधिक विस्तार और इसकी सीमाओं को मजबूत करने के लिए कई बार फिर से बनाया गया। इस किले पर ज़्यादातर देसी राजाओं का अधिपत्य रहा, फिर नवाब का उसके बाद फ्रांसीसियों

के अधिकार में भी रहा है। 1803 में अंग्रेजों ने इस कब्जा कर लिया था। इस किले का सैनिकों को युद्ध की यूरोपीय तकनीक सिखाने हेतु एक प्रमुख प्रशिक्षण केंद्र के रूप में उपयोग किया जाता था। ब्रिटिश शासन के खिलाफ 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भी इस किले का नाम आया था, लेकिन यहां के सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या नहीं की थी। यह किला भारतीय और फ्रांसीसी शैली की वास्तुकला का मिश्रण है। अब यह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और विशेष रूप से, वनस्पति विज्ञान विभाग के नियंत्रण में है। भीतरी आंगन में एक वनस्पति उद्यान है।

यहां फ्रांसीसी सेना की एक तोप थी, जिस पर अलीगढ़ के साथ सन् भी लिखा है, जिसे 1857 के आसपास अलीगढ के किले से दिल्ली ले जाई गई थी और अब यह तोप नई दिल्ली तीन मूर्ति हाउस में हैं।

किले के द्वार पर लेखक

1200 बीघा जमीन में फैला अलीगढ़ का किला जो 99 साल के पट्टे पर रामपुर – पंजीपुर पंचायत से लिया गया था और अब जिस पर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय स्थापित है, भी एक प्राचीन धरोहर है। यह पानी से भरी खाई द्वारा सुरक्षित है।

डोर किला : डोर किला अलीगढ़ के सिटी सेंटर में खंडहर में निहित है। 18वीं सदी तक अलीगढ़ को कोल या कोइल नाम से जाना जाता था। हालांकि इसके नाम का मूल अस्पष्ट है। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि "कोल" शहर मूल रूप से डोर जनजाति द्वारा बसाया गया था और किले का नाम राजा बुद्ध सेन डोर के नाम पर है। उनके शासनकाल के दौरान सभी कानूनी कार्यवाहियां इस किले में ही की जाती थीं। डोर किला प्राचीन काल में सबसे शानदार किलों में से एक माना जाता था। कोल के क्षेत्र का दौरा करने वाले यात्रियों की किताबों में कई संदर्भ मिलते हैं। किले का एक सुनियोजित लेआउट है तथा इसमें भव्य मीनारें है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय पूर्व में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज (माओ कॉलेज) के नाम से

प्रसिद्ध अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय 18वीं और 19वीं सदी में शिक्षा और अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र माना जाता था। मुस्लिम समुदाय को आधुनिक शिक्षा देकर उन्हें एक बेहतर भविष्य प्रदान करने के लिए उद्देश्य से इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। बाद के वर्षों में, इसका प्रयोग जाति, रंग, राष्ट्रीयता या धर्म के भेदभाव के बिना प्रत्येक छात्र को उच्च गुणवत्ता वाली अंग्रेजी शिक्षा देने के लिए किया जाने लगा। विश्वविद्यालय को भारत में सबसे अच्छे अनुसंधान संस्थानों में से एक माना जाता है तथा एशिया में भी इसको अच्छा स्थान प्राप्त है। सर सैयद अहमद खान द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में देश का सबसे बड़ा पुस्तकालय है तथा यह विदेशी तथा देशीय छात्रों को 300 से अधिक शैक्षिक पाठ्यक्रमों की शिक्षा प्रदान करता है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का प्रवेश द्वार

धरणीधर सरोवर

यह अलीगढ़ मथुरा मार्ग पर बेसन टाउन के पास स्थित है मंदिर महर्षि विश्वामित्र की तपस्थली है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर ही ऋषि विश्वामित्र की तांबे की प्रतिमा लगी है। सबसे प्रमुख गोवर्धन घाट है, जहां रावण के वध की ब्रहम हत्या के पाप से मुक्ति हेतु यज्ञ किया गया था। इस स्थान पर खुदाई में शिवलिंग व खरल मिले हैं। यहां मिली कुछ वस्तुओं को मथुरा के संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। सरोवर में कछुए भी हैं। धरणीधर सरोवर एक धार्मिक स्थल है। प्रति वर्ष यहां कई मेले आयोजित होते हैं। लाखों श्रद्धालुओं की श्रद्धा व आस्था का केंद्र धरणीधर सरोवर आजादी के बाद से ही पर्यटन स्थल बनने की बाट जोह रहा है। इस क्षेत्र में मंगलायतन विश्वविद्यालय की स्थापना

के पश्चात इसे पर्यटन स्थल घोषित कराने की अरसे पुरानी मांग एक बार फिर जोर पकड़ने लगी है। पर्यटन स्थल घोषित होने से न केवल इस क्षेत्र का संपूर्ण विकास होगा, अपितु बेरोजगार नवयुवकों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

तीर्थधाम मंगलायतन : अलीगढ़ का तीर्थधाम मंगलायतन भारत में जैन संस्कृति और धर्म को समर्पित सबसे बड़ी भूमि माना जाता है। यह परिसर 16 एकड़ में फैला हुआ है तथा एक प्रगतिशील सामाजिक, धार्मिक सोच को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता है तथा जिसमें प्रार्थना, भक्ति, समाज सेवा, शिक्षा एवं अनुसंधान शामिल हैं। इसके भीतर चार मुख्य मंदिर हैं। परिसर के बाकी हिस्से अनुसंधान और अन्य कार्यो के लिए समर्पित है। अलीगढ़ – आगरा राजमार्ग पर स्थित तीर्थधाम मंगलायतन दर्शकों के लिए आसानी से सुलभ है।

खेरेश्वर धाम

अलीगढ़ पलवल मार्ग पर अलीगढ़ से लगभग सात कि.मी. दूर है, खेरेश्वर धाम शिव मंदिर। यहां सावन के महीने में कांवर चढाई जाती हैं। कहते हैं कि यह स्वामी हरिदास जी की तपोस्थली है। स्वामी हरिदास मध्य काल में शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध गायकों – बैजू और तानसेन – के गुरु थे। मंदिर गंगा के तट पर स्थित है। इसे और अधिक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस स्थल के आस–पास कई अन्य मंदिर और कॉलेज हैं। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा स्वदेश दर्शन योजना के तहत खेरेश्वर धाम मंदिर का एक करोड़ रुपये की धनराशि से सौंदर्यीकरण किया जा रहा है।

खेरेश्वर धाम समिति के अध्यक्ष सतपाल सिंह बताते हैं कि वहां के प्रमुख मंदिरों को भी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है

और कुछ ही समय बाद खेरेश्वर मंदिर एक पर्यटन स्थल के रूप में अलग से पहचाना जाएगा। इसके सौन्दर्यीकरण में हाइवे की ओर मंदिर का नया गेट, एक ओपन एयर थिएटर, दो पार्क, टिनशेड समेत पार्किंग और महिलाओं एवं पुरुषों के अलग–अलग 12 शौचालय आदि का अन्य कार्य होना है।

बाबा बर्ची बहादुर दरगाह

बाबा बर्ची बहादुर दरगाह 600 साल पुरानी दरगाह है। इस दरगाह में सभी धर्मों तथा आस्था वाले श्रृद्धालु माथा टेकने आते हैं। यहां लोगों का मानना है कि श्रद्धा से जो भक्त यहां आते हैं, उनकी सभी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। शायद यही कारण है कि सभी विश्वासों और समुदायों के लोगों को यह आकर्षित करती है। इसलिए इसे सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है।

जामा मस्जिद

यह जामा मस्जिद साबित खान द्वारा 1724 में बनवाई गयी थी। यह अलीगढ़ में सबसे पुरानी और भव्य मस्जिदों में से एक है। इसको बनने में 14 साल लगे थे। मस्जिद बलाई किले के शिखर पर स्थित है जो शहर का सबसे ऊंचा स्थान है। अपने स्थिति की वजह से, इसे शहर के सभी स्थानों से देखा जा सकता है। नमाज अदा करने के लिए मस्जिद में छह स्थल हैं। मस्जिद का जीर्णोद्धार कई दौर से गुजरा तथा यह कई वास्तु प्रभावों को दर्शाता है। सफेद गुंबद वाली संरचना तथा खूबसूरती से बने खम्भे मुस्लिम कला और संस्कृति की खास विशेषताएं हैं। यहां प्रतिदिन श्रृद्धालुओं के साथ ही पर्यटकों की भी अच्छी खासी तादाद देखी जा सकती है।

पर्यटन के अन्य स्थल

शेखा झील : शेखा झील जैव विविधता से समृद्ध एक सुंदर झील है। यह मुख्य शहर से 17 कि. मी. दूर है तथा इस क्षेत्र के लिए पानी का एक प्रमुख स्रोत है। झील के एक ओर दूर दूर तक फैली कृषि

भूमि है और दूसरी तरफ सर्दियों के दौरान प्रवासी पक्षियों का निवास है। वनस्पति विशेषज्ञ और पक्षी प्रेमी, खासकर सर्दियों के मौसम में, यहां अक्सर ही देखे जाते हैं जो विभिन्न प्रजातियों पर अध्ययन हेतु आते हैं। आजकल यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही शहर के लोग भी अक्सर सप्ताह के आखिरी दिनों में झील के प्राकृतिक सौंदर्य और परिवेश का आनंद लेने के लिये आते हैं।

नगलिया : नगलिया विभिन्न वनीय प्रजातियों के संरक्षण के लिए समर्पित अलीगढ़ जिले में एक छोटा सा गांव है। यहां स्थित आरक्षित काला हिरण संरक्षण क्षेत्र का अपना खासा महत्व है। यह रिजर्व एक बड़े

क्षेत्र में फैला हुआ है तथा जंगली जानवरों के आश्रय एवं संरक्षण हेतु समर्पित है। एक और कारण जो इस गांव को प्रसिद्ध बनाता है। गांव तक पक्की सड़क और अच्छी परिवहन की अच्छी सुविधा है इसलिए यहां आना बहुत आसान है। अलीगढ़ शहर से इसकी दूरी लगभग 15 कि.मी. है।

अचल तालाब अलीगढ़

अचल तालाब : शहर के बीचोबीच पांडव कालीन प्रसिद्ध अचल तालाब है। कभी इस तालाब में नौकाएं चला करती थी, हर पूर्णमासी को यहां मेला लगा करता था, दूर दराज से श्रद्धालु यहा स्नान करने आया करते थे, ऐसी मान्यता थी कि इस तालाब में स्नान करने से कुष्ठ रोग दूर हो जाते थे। अलीगढ़ रेलवे स्टेशन के पास स्थित अचल तालाब आज बदहाली के दौर में पहुंच चुका है। प्रशासन की उदासीनता के चलते यह तालाब समाप्त के कगार पर है। इसका जल इतना दूषित हो चुका हैं कि इसमें जल जंतु भी रहना पसंद नहीं करते। मछलियां व कछुए यहां से लुप्त हो चुके हैं। अलबत्ता वानर सेना जरूर जलक्रीड़ा करते देखी जा सकती हैं। इसके जीर्णोद्धार के उपाय किए जाने की आवश्यकता है।

इगलास कस्बे की चमचम मिठाई भी प्रसिद्ध है। कुछ सबसे प्रमुख बाजारों में सेंटर प्वाइंट मार्केट, रेलवे रोड मार्केट, फूल चौराहा, हलवाई खाना, जमालपुर बाजार, शमशाद मार्केट, महावीर गंज, अपर फोर्ट या अपर कोट, तस्वीर महल तथा आमिर निशा शामिल हैं। ज्यादातर ब्रांड आउटलेट्स और अंतर्राष्ट्रीय शैली की दुकानें प्वाइंट बाजार तथा इसके आसपास स्थित हैं। शमशाद मार्केट शैक्षिक पुस्तकों के लिए जाना जाता है, जबकि अमीर निशा एक प्रमुख शॉपिंग हब है।

कैसे पहूंचे : अलीगढ़ दिल्ली से सड़क मार्ग के अलावा रेल मार्ग से भी सीधे ही जुड़ा है।

कहा ठहरें : अलीगढ़ में स्टार होटल तो नहीं है लेकिन अच्छे महंगे तथा बजट दोनों तरह के होटल उपलब्ध हैं।

अब देर किस बात की वीक एंड में शहर अलीगढ़ भी देखने एक प्रोग्राम बना ही लिया जाए।

बिहार

हिन्दू और इस्लामी वास्तुकला एवं स्थापत्य के समन्वय का सुन्दर नमूना

शेर शाह का मक़बरा

– मुर्तजा कमाल

भारत के इतिहास में बिहार राज्य के रोहतास जिले में स्थित मुख्यालय ''सासाराम" का भी अहम योगदान रहा है। यदि बिहार के पर्यटन क्षेत्रों के बारे में चर्चा हो और ''सासाराम" का नाम न आये तो ये पर्यटन क्षेत्र ही नहीं अपितु पर्यटकों के साथ भी बहुत ना–इंसाफी होगी।

सासाराम बिहार राज्य का एक विख्यात शहर है तथा यह रोहतास जिले का मुख्यालय है। इसे ''सहसराम" के नाम से भी जाना जाता है। इसे भूतकाल में मूल रूप से शाह सेराय अर्थात राजा का स्थान कहा जाता था क्योंकि यह अफग़ान राजा शेर शाह सूरी का जन्मस्थान है यहीं से शेर शाह दिल्ली पर शासन करते थे।

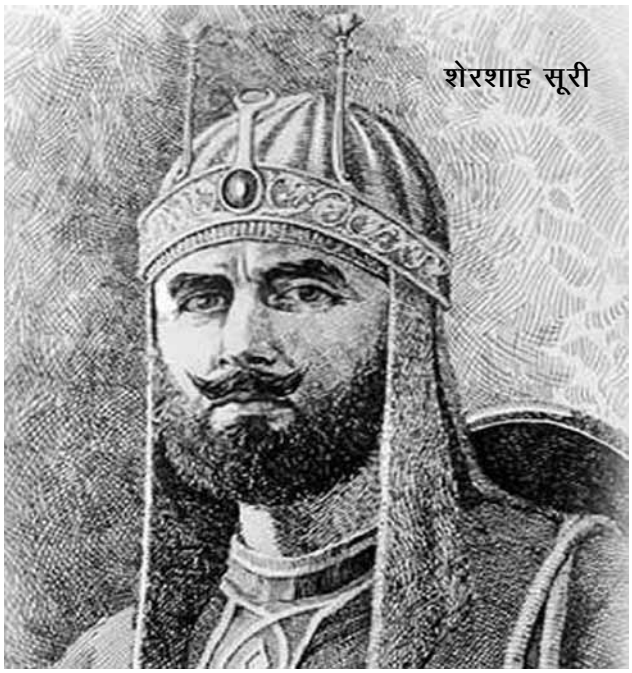

शेरशाह सूरी

*निजी सहायक, होटल प्रबंध संस्थान, हाजीपुर, बिहार

सासाराम को अधिकांश लोग लोग बाबू जगजीवन राम का चुनाव क्षेत्र होने के कारण ही जानते थे। इतिहास के पन्ने अब धुंधले हो गए हैं और अब शायद कम ही लोगों को याद है कि सासाराम शेरशाह सूरी के शहर था। शेरशाह सूरी को सासाराम शहर से इतना लगाव था कि उसने अपने जीते जी यहां अपना मक़बरा बनवाना शुरू कर दिया था। यह मक़बरा, निर्माण कार्यों में उनकी रूचि का श्रेष्ठ उदाहरण है, ठीक उसी तरह जैसे कि सड़क–ए–आज़म अर्थात ग्रैण्ड ट्रंक रोड, जिसे हम 'जीटी रोड' के नाम से जानते हैं। यह शेरशाह सूरी के पांच साल के शासन काल का ऐसा योगदान है, जिसे इतिहास के पन्नों से कभी मिटाया नहीं जा सकेगा। चंदेल राजपूतों के खिलाफ लड़ते हुए शेरशाह सूरी की कालिंजर किले की घेराबंदी में 22 मई 1545 को आग्नेयास्त्र से निकले गोले के फटने से उसकी मौत हो गयी।

सासाराम के बारे में ....

मकबरों के शहर सासाराम की कहानी पुरानी है। सासाराम से ही मध्यकालीन भारत पर शासन करने वाले सूरी वंश के उत्थान की कहानी शुरू हुई थी। परन्तु सासाराम का इतिहास मध्यकाल तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि इससे भी बहुत पुराना है। यह शहर दुनिया के उन गिने चुने शहरों में से एक है, जिसकी पहाड़ी गुफाओं में मध्यपाषाण कालीन आदि मानव ने हजारो वर्षो तक निवास किया था। सासाराम के पूरब और दक्षिण स्थित पहाड़ियों में, ऐसी ही गुफाएं

है जिनके बारे में कहा जाता है कि यह लगभग अठारह हजार वर्ष ईसापूर्व से चार हजार दो सौ वर्ष ईसापूर्व तक मानव का वास रही थीं। नकटा जआफर बथान और गीता घाट की इन गुफाओं में हजारो वर्षो तक रहने के दौरान जब आदि मानवों में कला जागृत हुई होगी तो उनके लिए इन गुफाओं की दीवारें कैनवास बन गईं और उनपर मोटे ब्रशों से तरह–तरह के चित्र उकेरे गए होंगे। यहां की गुफाएं आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों के अवशेष के साथ आज भी मौजूद है। पुरातत्वविदों का मानना है कि यहीं सासाराम के पहाड़ी क्षेत्रों के आस–पास सोनवागढ़, कोटागढ़, भताढ़ी, सकास, मलाँव, सेनुवार आदि स्थानों पर हमारे आदिमानवों ने खेती और पशुपालन की शुरुआत की थी।

पौराणिक भूगोलवेत्ता सुबिमल चंद्र सरकार के अनुसार, वाल्मीकि रामायण के बालकांड को देखें तो इसी सासाराम की पहाड़ियों की गोद में ही महर्षि विश्वामित्र का सिद्धाश्रम था। भगवान राम और लक्ष्मण तड़का वध के पश्चात् यहां आए थे।

सासाराम अशोक स्तंभ (तेरह लघु शिलालेखों में से एक) के लिए भी प्रसिद्ध है। मौर्य काल में सम्राट

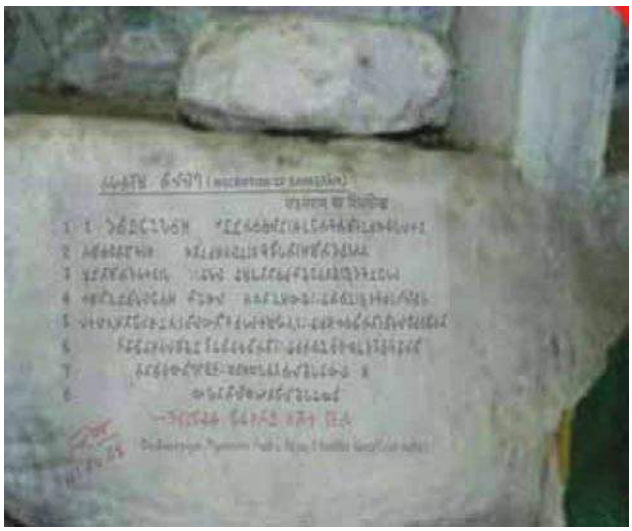

अशोक की दृष्टि इस प्राचीनतम शहर पर पड़ी। सासाराम के पूरब स्थित चंदन शहीद पहाड़ी की एक गुफा में सम्राट अशोक का एक लघु शिलालेख उस समय लिखा गया था जब उन्हें बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए दो सौ छप्पन रातें हो चुकी थी। ब्राह्मी लिपि में इस पर उत्कीर्ण लेख है– एलेन च अंतलेन जंबुदीपसि। इस पंक्ति का अर्थ है–जम्बू द्वीप, में सभी धर्मो के लोग सहिष्णुता से रहें।

इतिहासकार, पुरातत्वविद् व पर्यटक शिलालेख को पढ़ने की चाहत में पहाड़ी पर पहुंचने के बाद वहां से निराश होकर लौटते हैं। खासकर बौद्ध पर्यटक ज्यादा निराश होते हैं। इस पर इतनी बार चूना पोता गया है कि इसका अस्तित्व ही मिटने को है। यह स्थल पुरातत्व विभाग के अधीन है, पर इस पर स्थानीय मरकजी दरगाह कमेटी का दावा है।

इतिहास करवट लेता रहा। सासाराम की बागडोर जनजातीय राजाओं के हाथो में बनी रही। सासाराम वही शहर है, जहाँ से खरवार वंशी राजा प्रताप धवल देव ने बारहवीं सदीं में ही वाराणसी के गहड़वाल राजसत्ता के भ्रष्टाचार के विरुद्ध हुंकार भरी थी।

शेरशाह सूरी ....

शेरशाह सूरी के बारे में बताए बिना सासाराम के पर्यटन क्षेत्रों का वर्णन अधूरा है। बंगाल प्रांत के सासाराम ग्राम में एक पठान परिवार में जन्मे बच्चे का नाम फरीद खां रखा गया था। उनके दादा इब्राहिम खान सूरी नारनौल क्षेत्र में एक जागीरदार थे और दिल्ली के शासकों का प्रतिनिधित्व करते थे।

फरीद खां ने सबसे पहले अमीर बहार खान लोहानी के दरबार में सेवा आरम्भ की और जल्दी

ही उसके सहायक और बहार खान के नाबालिग बेटे के शिक्षक नियुक्त हो गए। एक दिन शेर से लड़ते हुए उसके जबड़े को दो हिस्सों में फाड़कर अलग कर दिया तो उसकी इस वीरता से बहार खान बहुत प्रभावित हुआ और उसने फरीद को शेर खां की उपाधि से सम्मानित किया और फरीद खां शेरशाह 'सूरी' बन गए। उन्होने अपने गांव "सूर" को दर्शाने के लिए 'सूरी' उपनाम लगाया था। लेकिन कुछ समय बाद ही किसी बात पर नाराज होकर उसे सेवा से हटा दिया गया। इसलिये वह 1527–28 में शेरशाह सूरी बाबर की सेना में सैनिक बन गए और अपनी बहादुरी के कारण जल्दी ही बाबर के करीब आ गए। बाबर ने उन्हे पदोन्नत कर सेनापति बनाया और फिर बिहार का राज्यपाल नियुक्त किया। 1537 में, जब हुमायूं कहीं दूर अभियान पर था तब शेरशाह ने बंगाल पर कब्ज़ा कर सूरी वंश की नींव डाल दी। फिर भी, वह हुमायूं के साथ सीधे टकराव से बचता रहा।

सन् 1539 में, चौसा में शेरशाह और हुमायूं की लड़ाई हुई जिसमें शेरशाह की जीत हुई। अगले साल हुमायूं ने अपने खोए हुये क्षेत्रों पर पुनः कब्ज़ा करने के लिये शेरशाह की सेना पर बिलग्राम (कन्नौज) में आक्रमण किया। मगर 17 मई 1540 को शेरशाह ने हुमायूं को बुरी तरह से हराया और उसे भारत छोड़ने को विवश कर दिया। इस हार ने बाबर के मुगल साम्राज्य का लगभग अंत ही कर दिया शेर खान की उपाधि लेकर सम्पूर्ण उत्तर भारत पर सूरी साम्रज्य की स्थापना कर दी, जो लोधी साम्राज्य के बाद भारत में दूसरा पठान साम्राज्य था।

अब अपने साम्राज्य को वैध बनाने के लिये उन्होंने अपने नाम के सिक्के चलाने का आदेश दिया। शेरशाह सूरी ने सबसे पहला रुपया जारी किया। सिक्के में देवनागरी और फ़ारसी में लिखा है। तीन धातुओं की सिक्का प्रणाली जो मुगलों की पहचान बनी वो शेरशाह द्वारा शुरू की गई थी।

शेरशाह के शासन में जारी हुआ पहला रुपया, आज के रुपए का अग्रदूत है। आज पाकिस्तान, भारत, नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, मॉरीशस, मालदीव, सेशेल्स में राष्ट्रीय मुद्रा को "रुपया" के नाम से ही जाना जाता है।

सरकार और प्रशासन : शेर शाह ने खुद को एक शानदार रणनीतिकार, सक्षम सेनापति और एक प्रतिभाशाली प्रशासक भी साबित किया। अपने पांच साल के शासन के दौरान उन्होंने एक नए नगरीय और सैन्य प्रशासन की स्थापना की, पहला रुपया जारी किया, है, भारत की डाक व्यवस्था को संगठित किया और अफ़गानिस्तान के काबुल से लेकर सुदूरवर्ती बंगाल (आज का बांग्लादेश) के चटगांव तक सड़क–ए–आजम बनवाई, जिसका बाद में अंग्रेजो ने ग्रांड ट्रंक रोड नाम कर दिया। आज "ग्रांड ट्रंक रोड" को एशिया की एतिहासिक सड़कों में जाना जाता है।

शेरशाह सूरी और ग्रैण्ड ट्रंक रोड पर अध्ययन करने वाले इतिहासकार कहते हैं कि शेरशाह सूरी ने सड़के–आजम पर सत्रह सौ सरायों का निर्माण करवाया और उन पर कर्मचारियों को तैनात किया। इन सरायों की वजह से व्यापारियों को लूटने आदि की घटनाएं कम होने लगीं और पूरे देश में व्यापार बहुत बढ़ा। कुछ इतिहासकार मानते हैं कि सड़क का कुछ भाग तो पहले भी था लेकिन शेरशाह सूरी ने उसका पुनर्निर्माण करा कर इसे यात्रा और व्यापार के योग्य बनवाया था। लेकिन आज सासाराम में इस पुरानी ग्रैण्ड ट्रंक रोड की ओर किसी का ध्यान नहीं है। अब तो वहाँ चलने तक की जगह नहीं है और अब स्वर्णिम चतुर्भुज के राष्ट्रीय राजमार्ग–2 ने शेरशाह सूरी के सासाराम को मानो किनारे कर दिया है।

शेरशाह सूरी में एक कुशल सैन्य नेतृत्व के साथ–साथ योग्य प्रशासनिक सोच भी थी। उसके द्वारा बनाई गई नागरिक और प्रशासनिक संरचना को बाद में मुगल सम्राट अकबर ने अपनाया तथा उसमें सुधार कर और विकसित किया था।

दर्शनीय है सासाराम में शेरशाह का मक़बराः शेरशाह ने अपने जीवनकाल में ही अपने मक़बरे का काम शुरु करवा दिया था। उनके गृहनगर सहसराम स्थित एक कृत्रिम झील से घिरा, यह मक़बरा हिंदू मुस्लिम स्थापत्य शैली का बेजोड़ नमूना है। इसे उत्तर भारत की श्रेष्ठ इमारतों में से एक तथा अपने समय की कला का श्रेष्ठतम नमूना माना जाता है। सासाराम में यह शानदार मक़बरा स्वयं शेरशाह सूरी ने अपने जीवन काल में बनवाया था। एक विशाल झील के बीच चबूतरे पर बना यह मक़बरा उनके व्यक्तित्व का प्रतीक है। यह तुग़लक बादशाहों की इमारतों की सादगी एवं मुगल स्थापत्य कला की सुंदरता के बीच की कड़ी है। यह भवन अपनी परिकल्पना में इस्लामी है पर इसका भीतरी भाग हिन्दू वास्तुकला से सजाया–सँवारा गया है। इतिहासकार कानूनगो के अनुसार, "शेरशाह के मकबरे को देखकर ऐसा लगता है कि वह अन्दर से हिंदू और बाहर से मुस्लिम था। इस पर हिन्दू और इस्लामी कला का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।"

इसकी सुंदरता का बखान करते हुए अंग्रेज पुरातत्वविद कनिंघम ने कहा था कि शेरशाह का यह रौज़ा वास्तुकला की दृष्टि से ताजमहल की तुलना में अधिक सुन्दर है। इस मकबरे से भी सुन्दर रौजे को बनवाने का प्रयास सूरी वंश के अगले शासकों ने जारी रखा।

भारत–अफगान शैली में, 122 फुट लाल बलुआ पत्थर से बना शेर शाह सूरी का मक़बरा लोदी शैली पर आधारित है। इसके फर्श को नीले और पीले रंग की टाइलों से सजाया गया था, जो ईरानी प्रभाव को दर्शाते थे। मुक्त खड़े गुंबद में बौद्ध स्तूप शैली के मौन काल के सौंदर्य पक्ष को भी देखा जा सकता है।

पर्यटन के अन्य स्थल....

मध्यकाल में पंद्रहवी सदी के अंतिम दशक में जब दिल्ली में सिकंदर लोदी की सत्ता थी, उसी समय हसन खां सूरी को सासाराम की जागीर मिली थी। सासाराम का सितारा बुलंद होने लगा था। हसन खां ने सबसे पहले अपने रहने के लिए किला बनवाना शुरू किया जो नगर थाना के पास आज जीर्ण शीर्ण अवस्था में है।

हसन खां का किला : 1540 ई. में सुल्तान शेरशाह के नाम से दिल्ली की राजगद्दी पर बैठने के बाद भी शेरशाह अपने सासाराम को नहीं भूले थे सबसे पहले शेरशाह ने अपने पिता हसन खां सूरी के मकबरे की नींव रखी। यह रौज़ा 345 फीट लंबे और 296 फीट चौड़े कंगूरेदार चहारदीवारी से घिरे आंगन के बीच बना है। पूरब की ओर इसका भव्य मेहराबदार मुख्य दरवाज़ा बना हुआ है। इस मकबरे के बाहरी भाग का व्यास 112 फीट है। आठों पहलों में आठ फीट चौड़ा बरामदा है। बरामदे के बाद मुख्य कक्ष का व्यास 62 फीट है। मुख्य कक्ष में पश्चिमी पहल को छोड़कर शेष सात पहलों में दरवाजे है। पश्चिमी पहल के बीच में मिम्बर बना हुआ है। जिसपर कलाम–ए–पाक की आयतें खुदी हुई है। मिम्बर पर बिना तिथि के इस शिलालेख में यह भी लिखा है की मियाँ हसन की बन्दगी में गुबंद का निर्माण सुल्तान शेरशाह ने कराया था। इस मकबरे में सूरी परिवार की 25 कब्रें हैं। इसके ठीक बीच में शेरशाह के पिता हसन खाँ सूरी का मजार है। आधार के ऊपर रौज़े का भव्य गुबंद बना है। इसके ऊपर कलश तथा अष्टकोणीय आधार के कोनों पर छः स्तंभो पर बनी बुर्जियां मकबरे की खूबसूरती में चार चाँद लगा देती है।

लगभग 22 एकड़ में फैले आयताकार तालाब के बीच स्थित इस रौज़ा की, दुनिया में अपनी एक अलग ही पहचान है। तालाब के पानी को साफ रखने के लिए इसके पश्चिम की ओर पानी के आगमन और निकास के लिए नहर बनाई गई है। मुख्य रौज़े तक जाने के लिए तालाब के उत्तर में स्थित दरबान के चौकोर मकबरे से होकर गुजरना पड़ता है। इस मकबरे के बीच में दरबान की कब्र देखकर यह अंदाज लगाया जा सकता है कि शेरशाह को अपने कारिंदों से कितना प्रेम रहा होगा तालाब के बीच तीन सौ फीट लंबी एक पुलनुमा सड़क दरबान के मकबरे और शेरशाह के रौज़े को जोड़ती है। पहले यहां दोनों मकबरों को जोड़ने के लिए उनके आधार की ऊचाई में पुल बना था, जो बाद में टूट गया था। 1882 ई. में अंग्रेज सरकार ने इसका जीर्णोद्धार कर यह सड़क बनाई थी। तालाब के बीच में तीस फीट ऊंचे चबूतरे पर अष्टपहलदार रौज़ा बनाया गया है।

शेरशाह की मजार मकबरे के ठीक बीच में है। कालिंजर युद्ध में मारे जाने के बाद एक सप्ताह बाद उन्हें यहां सुपुर्दे ख़ाक किया गया था। इस मकबरे के मिम्बर पर भी कलाम–ए–पाक की आयतें खुदीं है। इसमें यह भी लिखा है कि बादशाह शेरशाह की मृत्यु के तीन माह बाद यह रौज़ा बादशाह इस्लामशाह के हाथों पूर्ण हुआ। बाहर चबूतरे से 120 फीट ऊँचा और 80 फीट चौड़ा गुबंद सीना ताने खड़ा है। इसकी भव्यता देखते ही बनती है। चबूतरे के चारों कोनों पर चार बड़ी अष्टकोणीय बुर्जियां तथा दूसरी ओर तीसरी मंजिल के आठों कोनों पर क्रमशः छोटी होती षट्कोणी छतरियाँ पठान वस्तुकला के चरम उत्कर्ष को दर्शाती है।

पर्यटन के अन्य आकर्षण...

रोहतास जिले के मुख्यालय सासाराम के पास कई स्मारक हैं, जिनमें अकबरपुर, देवोंमारदे, रोहतास गढ़, शेरगढ़, ताराचंडी, धवल कुंड, गुप्त धाम, भालूनी धाम, ऐतिहासिक गुरुद्वारा और चन्दन शहीद पहाड़ी आदि शामिल हैं।

ऐतिहासिक गुरुद्वारा चाचा फग्गूमल

सासाराम में सिख इतिहास से जुड़ी एक महत्वपूर्ण यादगार भी है। सासाराम के लोग भाग्यशाली रहे हैं जिन्हें कई दिनों तक हिंद की चादर नवम पातशाही के आशीर्वचन सुनने को मिले। साल 1666 में गुरु तेगबाहदुर अपने लश्कर के साथ पूरब की यात्रा पर निकले। शहर के जानी बाजार में है। ऐतिहासिक गुरुद्वारा चाचा फग्गूमल, जहां सिखों के नौंवे गुरू तेगबहादुर जी 21 दिनों तक रहे और संगतों को अपने आशीर्वाद से निहाल किया था।

यहां पर वे नानकशाही संत चाचा फग्गूमल की कुटिया में रहे। उनके साथ माता नानकी, उनकी धर्मपत्नी माता गुजरी और पत्नी भ्राता बाबा कृपाल चंद भी थे। इस ऐतिहासिक शहर में ही उन्होंने कई रचनाएं भी की। उन्होंने यहां पर राग जैजैवंती महला, धूर की वाणी, रामु सुमरी रामु सुमरी इहे तेरे काजि हैए मैया को सरनि तियागु प्रभू के सरनि लागूए जगत सुख मानु मिथिया झूठो सब साझु है.. की गुरुवाणी बक्शीश की थी। इसकी चर्चा गुरु ग्रंथ साहिबजी के 1352 पन्ने पर शोभायमान है।

रेलवे स्टेशन से इस गुरुद्वारे की दूरी महज दो कि.मी. है। हालांकि जाने का रास्ता संकरी गलियों से होकर है। श्रद्धालु शहर के धर्मशाला रोड से होकर गोला नवरतन बाजार होते हुए अथवा चौक से लश्करीगंज होते हुए भी जानी बाजार पहुंचते हैं।

इस सिलसिले में थोड़ा सा ध्यान गुरुद्वारा चाचा फग्गूमल के आसपास के सौंदर्यीकरण पर भी दिया जाता तो बेहतर होता।

रोहतासगढ़

रोहतासगढ़ या रोहतास दुर्ग, बिहार के रोहतास जिले में एक प्राचीन दुर्ग है। यह भारत के प्राचीन दुर्गों में से एक माना जाता है। यह सासाराम से लगभग 55 कि.मी. दूर कि.मी. के बहाव वाली दिशा में पहाड़ी पर स्थित है। कहा जाता है कि हिंदु शास्त्रों में सुविख्यात तथा त्रेता युग के सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के पुत्र रोहिताश्व ने इस प्राचीन और मजबूत किले का निर्माण कराया था। प्रारम्भ से ही यह दुर्ग हिन्दू राजाओं के अधिकार में रहा था। मगर 16वीं सदी में मुस्लिम शासकों के अधिकार में चला गया और अनेक वर्षों तक उनके अधीन रहा। अकबर के शासनकाल के दौरान

यह किला बिहार और बंगाल के गवर्नर का मुख्यालय था। इतिहासकारों का मत है कि किले की चारदीवारी का निर्माण शेरशाह ने सुरक्षा के दृष्टिकोण से कराया था ताकि कोई किले पर हमला न कर सके। बताया जाता है कि स्वतंत्रता संग्राम की पहली लड़ाई (1857) के समय अमर सिंह ने यहीं से अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का संचालन किया था।

ताराचंडी का मंदिर

देवी ताराचंडी का मंदिर, दक्षिण में लगभग छः कि. मी. दूर है और यहां बड़ी संख्या में हिंदु धर्मावलम्बी एकत्रित होकर देवी की पूजा तथा हवन आदि करते हैं। यहां एक कुंड भी है। शहर के दक्षिण–पश्चिम, आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक है और यह एक सुंदर प्राकृतिक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

धवल कुंड..

चंडी देवी के मंदिर के निकट चट्टान पर प्रताप धवल का एक शिलालेख है।

आपको लगता होगा कि कलियुग में ही भ्रष्टाचार पैदा हुआ और पहले के युगों में तो लोग पूरी ईमानदारी से काम करते होंगे। मगर यह सच नहीं है। भारत में भ्रष्टाचार प्राचीन समय से ही मौजूद रहा है और इस बात का प्रमाण है 12वी शताब्दी का यह प्राचीन शिलालेख। बताया जाता है कि यह शिलालेख 12वीं सदी के खरवार के राजा महानायक प्रताव धवलदेव ने 212 से.मी. लंबे और 38 से.मी. चौडे पत्थर पर लिखवाया गया था। यह शिलालेख ताराचंडी देवी प्रतिमा के पास ही में स्थित है।

इस शिलालेख में राजा के अधिकारियों के रिश्वत लेकर गांव को पाने की मंशा के बारे में उल्लेख किया गया है। राजा के अधिकारियों ने एक ताम्रपत्र पर राजा के जाली हस्ताक्षर करके यह सब किया था। इसकी जानकारी खुद राजा को नहीं थी लेकिन जैसे ही उन्हें इस षड्यंत्र का पता चला तो उन्होंने इसे ताम्रपत्र को ही रद्द कर दिया। ताराचंडी में मिले इस शिलालेख में प्रताप धवल देव को जपिलपति कहा गया है और यह शिलालेख संस्कृत में लिखा गया है।

गुप्त धाम

जिले के चेनारी ब्लॉक में स्थित है। गुप्त धाम भी एक आकर्षक पर्यटक और धार्मिक स्थान है, यह जगह शिव–अराधाना का एक प्रसिद्ध केंद्र है। यहां भी भगवान शिव की पूजा करने के लिए हिंदू धर्मावलम्बी बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं।

झारखंड बंटवारे के बाद शेष बिहार में बचे गिने–चुने प्राकृतिक शिवलिंगों में शुमार रोहतास जिले के गुप्तेश्वर धाम की गुफा में स्थित भगवान शिव की महिमा का बखान आदिकाल से ही होता आ रहा है। कैमूर की प्राकृतिक सुषमा से सुसज्जित वादियों में स्थित इस गुफा में जलाभिषेक करने के बाद भक्तों की सभी मन्नतें पूरी हो जाती है। भारत में एक कथा प्रचलित है कि भस्मासुर नामक राक्षस सबसे शक्तिशाली बन कर ब्रहमांड पर शासन करना चाहता था। उसने कठोर तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर वरदान प्राप्त कर लिया कि वह जिसके सिर पर हाथ रखे, वह भस्म हो जाए। एक दिन भस्मासुर मां पार्वती के सौंदर्य पर मोहित हो गया और शिव जी के सिर पर हाथ रखने के लिए दौड़ा। तब भगवान शिव इसी गुफा में आकर छुपे थे। तब विष्णुजी ने मोहिनी रूप धारण कर भस्मासुर को नष्ट किया। उसके बाद गुफा के अंदर छुपे भोलेबाबा बाहर निकले।

शाहाबाद गजेटियर में दर्ज फ्रांसिस बुकानन नामक अंग्रेज विद्वान की टिप्पणियों के अनुसार गुफा में जलने के कारण उसका आधा हिस्सा काला होने के सबूत देखने को मिलते हैं।

शिवरात्रि के दिन बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और नेपाल से हजारों शिवभक्त यहां आकर जलाभिषेक करते हैं। गुप्ता धाम आने वाले भक्तों की 48 घंटे पहले से ही भीड़ लग जाती है। जिला मुख्यालय सासाराम से 65 कि.मी. दूर इस स्थान पर पहुंचने के लिए रेहल, पनारी घाट और उगहनी घाट से तीन रास्ते हैं जो अतिविकट हैं। दुर्गावती नदी को पांच बार पार कर पांच पहाड़ियों की यात्रा करने के बाद लोग यहां पहुंचते हैं।

श्रद्धालु दुर्गावती नदी के किनारे–किनारे वाहन से गुप्ता धाम तक पहुंच जाते थे। ताराचंडी–प्रकटनाथ मार्ग बनाया गया है। कैमूर पहाड़ी पर स्थित इस स्थान को सुंदर प्राकृतिक स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

श्री श्री स्वामी परमेश्वरानंद जी महाराज की समाधि है जिसे अद्वैत आश्रम, दक्षिण कुटिया के नाम से भी जाना जाता है। यह सासाराम से 12 कि.मी. दूर पारम्पुरी (रायपुर चौरा) में स्थित है। इस अद्वैत आश्रम की देश के कई राज्यों में 24 शाखाएं और मुख्यालय सासाराम में है। इसे नवलखा आश्रम के रूप में भी जाना जाता है।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ रहे बाबू कुंवर सिंह के सेनापति बाबू निशान सिंह सासाराम के ही रहने वाले थे।

भलुनी भवानी धाम...

प्रखंड मुख्यालय से सात कि.मी. पूरब में भलुनी स्थित यक्षिणी भवानी धाम अति प्राचीन व प्रसिद्ध शक्तिपीठ हैं। श्रीमददेवी भागवत, मार्कण्डेय पुराण के अलावा वाल्मीकि रामायण में भी यक्षिणी भवानी का वर्णन मिलता है। मान्यता के अनुसार देवासुर संग्राम के बाद अहंकार से भरे इंद्र को यक्षिणी देवी ने यहीं सत्य का पाठ पढ़ाया था। इंद्र ने देवी दर्शन के पश्चात उनकी स्थापना की थी। कहा गया है, "हंस पृष्ठे सुरज्जेष्ठा सर्पराज्ञाहिवाहना, इन्द्रस्यच तपो भूमिरू शक्तिपीठ कंचन तीरे। यक्षिणी नाम विख्याता त्रिशक्तिश्च समन्विता।"

पुराणों व अन्य धर्म ग्रंथों के अनुसार देवी अति प्राचीन हैं। यक्षिणी मां दुर्गा का ही एक नाम है। मंदिर में देवी की प्रतिमा के अलावा भगवान शंकर तथा कुबेर की प्राचीन प्रतिमाएं स्थापित है। पुरातत्विदों के अनुसार, मंदिर में स्थापित यह प्रतिमाएं पूर्व मध्यकाल की हैं। मंदिर के बाहर एक अति प्राचीन व विशाल तालाब है। आसपास में सघन वन हैं। जिसमें काफी संख्या में लंगूर रहते हैं। सरकार ने इस वन क्षेत्र को बचाने के लिए इसे वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित किया है। भलुनी धाम के विकास का कार्य भोजपुरी साहित्य समिति द्वारा किया जाता है। भलुनी धाम विकास के लिए समिति द्वारा जैविक उद्यान बनाने का प्रस्ताव है।

कैसे पहुंचे :

सासाराम सड़क और रेलवे दोनों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग–19 (पुराना नंबरः एनएच 2) (ग्रांड ट्रंक रोड) शहर से गुजरता है। स्थानीय परिवहन का मुख्य साधन राज्य सरकार तथा निजी ऑपरेटरों द्वारा संचालित बसें हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 19 उत्तर–पश्चिम में वाराणसी और पूर्व में कोलकाता से जुड़ा है। राज्य के विभिन्न राजमार्गों से भी सासाराम, पटना से जुड़ा हुआ है।

अंत में....

पर्यटन विभाग द्वारा इसका व्यापक प्रचार प्रसार किये जाने से इस ओर पर्यटकों का आकर्षण और भी बढ़ जायेगा। यदि यहां के झील की सफाई कराकर और इसमें बोट इत्यादि चलाने की व्यवस्था की जाए तो यहां पर्यटकों की संख्या में ही केवल वृद्धि नहीं होगी अपितु सरकारी राजस्व में इजाफा होगा। इसके अतिरिक्त वहां के बगीचों में विशिष्ट प्रजाति के पौध रोपण कर वहां के दृश्य को मनमोहक एवं सुंदर बनाया जा सकता है।

इसके अलावा भी सासाराम शहर में बहुत सारे ऐतिहासिक स्थल हैं। जिनका पर्यटन विभाग द्वारा और भी आकर्षक एवं सुंदर बनाकर प्राकृतिक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित कर सरकारी राजस्व एवं रोजगार में वृद्धि की जा सकती है।

विशेष लेख

भारत में स्वास्थ्य पर्यटन

– अंकिता शर्मा

विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुरसत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। तदनुसार, "पर्यटक उस व्यक्ति को कहा जा सकता है जो यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाता है। उसकी यह यात्रा कम से कम एक रात और अधिकतम एक वर्ष के लिए मनोरंजन, व्यापार अथवा किसी अन्य उद्देश्य से हो सकती है। लेकिन यह उस स्थान पर किसी ख़ास क्रिया से सम्बंधित नहीं होती है। लेकिन जब इस यात्रा का उद्देश्य एक देश से दूसरे देश अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान पर मनोरंजन सहित वहां की परम्पराओं की अनुभूति के साथ ही स्वास्थ्य लाभ के मिले–जुले उद्देश्य से की गई हो तो इसे स्वास्थ्य पर्यटन कहते है।

भारत में स्वास्थ्य पर्यटन के लाभः भारत प्राचीन परंपराओं से संपन्न देश है। हमारे पास पुरातन ज्ञान के भण्डार है, जिनका विगत वर्षो में वैश्विक स्तर पर अधिक प्रचार हुआ है। इसके अलावा भारत एक नवीन, प्रगतिशील एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति के विशेषज्ञों से भरपूर देश है। हमारे देश में आधुनिक एवं प्राचीन दोनों ही चिकित्सा प्रणालियों के विशेषज्ञ मौजूद हैं। हमारे देश के यह चिकित्सा विशेषज्ञ हर प्रकार की बीमारियों का उपचार एवं बचाव करने में समर्थ है, जिसके कारण भारत वर्ष स्वास्थ्य पर्यटन में एक अग्रिम देश बन कर उभरा है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं :

भारत के पास विश्व के दिग्गजों के समकक्ष ही चिकित्सा विशेषज्ञ मौजूद है। यहां पर अत्याधुनिक प्रणाली के उपचार तकनीक का इस्तेमाल अनेक

जड़ी बूटियों से इलाज

*सहायक व्याख्याता, होटल प्रबंधन संस्थान, भोपाल

शहरों में किया जा रहा है। यह उपचार कई विकसित देशों के मुकाबले में सस्ता, अच्छा एवं सुविधाजनक है। यहां ऑपरेशन इत्यादि के लिये अन्य विकसित देशों की तरह महीनों का इंतजार नही करना होता है। हमारे बड़े नगरों के अस्पताल किसी भी विदेशी अस्पताल में उपलब्ध आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों से युक्त है। कुछ अस्पताल किसी पांच सितारा होटल से कम प्रतीत नही होते एवं जिनमें मरीज के साथ उसके तीमारदार–रिश्तेदारों को ठहराने के लिये सर्वसुविधायुक्त व्यवस्था रहती है। पर्यटक को कम खर्च में अनुकूल समय पर अच्छे उपचार की सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण ही स्वास्थ्य पर्यटन के क्षेत्र में विगत वर्षो में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हुई है।

मिट्टी से उपचार

वैकल्पिक उपचार पद्धति :

भारत में वैदिक काल से ही उपचार तकनीक एवं ज्ञान आज तक प्रचलित है। आधुनिक एलोपैथिक इलाज पद्धति उपचार के अलावा यहां आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथी, योग तथा प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के साथ ही दक्षिण भारत मे प्रचलित चिकित्सा की "सिद्ध" पद्धति के द्वारा भी सफलतापूर्वक उपचार किया जाता रहा है। देश के केरल राज्य में आयुर्वेदिक स्पा, पहाड़ों के आस पास स्थित प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र एवं उत्तर भारत के यूनानी दवाखाने प्रसिद्ध है।

इन वैकल्पिक उपचार पद्धतियों का एक बहुत बड़ा फायदा यह है कि इनका कोई प्रतिकूल प्रभाव (side effects) जैसा नुकसान नही होता और कई बार एलोपैथिक इलाज के साथ ही इसका उपयोग किया जा सकता है। यह पद्धतियां जड़ी बूटियों इत्यादि से इलाज करने में ज्यादा विश्वास करती हैं एवं बीमारी को जड़ से निकाल फेंकने के दावे भी करती हैं। यह इलाज दवाओं के साथ साथ ही जीवन शैली को बदलने में भी विश्वास रखता है। इसलिये अधिकतर आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा के केन्द्र प्राकृतिक सुदंरता से भरपूर जगहों पर होते हैं। यहां कुछ समय व्यतीत कर अपनी जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव लाने की शुरूआत की जा सकती है।

योग शिविर

भारत द्वारा विश्व को सबसे महत्वपूर्ण उपहार योग दिया गया है। योग न केवल एक तरह का व्यायाम है बल्कि इससे बहुत से कष्ट एवं बीमारियों से बचाव व उपचार भी होता है। योग की सराहना एवं इससे होने वाले लाभों से विश्व परिचित है। एक तरफ यहां हमारे

प्रधान मंत्री के अथक प्रयासों से अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस से दुनिया में योग का महत्व बढ़ा है, वही अब देश के लोग अपने जीवन शैली की वजह से बीमारियों से निदान पाने के लिये योग की तरफ आकर्षित हो रहे है।

भारत एक विशाल देश है उत्तर में हिमाच्छादित चोटियों से लेकर दक्षिण के पठार तथा पश्चिम में मरूस्थल से लेकर पूर्व की हरियाली। इतनी प्राकृतिक विविधता स्वयं ही पर्यटकों को आकर्षित करने में समर्थ है। इसके साथ सांस्कृतिक विविधता से किसी भी पर्यटक के अनुभवों में चार चांद लग जाते है। कई विदेशी पर्यटक न केवल स्वास्थ्य लाभ लेने आते है बल्कि साथ–साथ यहां की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को जानने भी आते हैं। अस्पताल या शिविर में इलाज के उपरांत मरीज अपने रिश्तेदारों के साथ कुछ समय भारत भ्रमण में व्यतीत करते हैं या किसी पहाड़ या समुद्र किनारे विश्राम करके पूर्णतयः स्वस्थ होकर ही अपने देश वापिस लौटते हैं।

भारत हर मौसम के लिए हर प्रकार की प्राकृतिक सुन्दरता से लैस है। इसी वजह से दुनिया भर के पर्यटक हिमालय में वादियों केरल के बैक वार्टस गोवा के समुद्र तट एवं राजस्थान के रेगिस्तान में न केवल छुटिट्यां बिताने आते है बल्कि यदि इन जगहों पर उपयुक्त नेचुरोपैथी एवं योग केन्द्र इत्यादि उपलब्ध करवा दी जाए तो इनकी संख्या में और वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य पर्यटन और पर्यटक देश के लिये आय तथा विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत भी है। हमारे देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये बहुत सारे संसाधन है। जिसका उपभोग सही तरीके से किया जाए तो इसमें अभूतपूर्व वृद्धि की जा सकती है। लेकिन इसमें शासकीय स्तर के अतिरिक्त नागरिको का सहयोग, जिसमें निजी होटलों, ढाबों एवं पर्यटन स्थलों पर कार्यरत कर्मचारियों, गाइडों आदि भागीदारी भी जरूरी है जिसमें पर्यटन स्थलों तथा उनके आसपास साफ–सफाई स्वच्छता एवं पर्यटकों के साथ अच्छा आचरण पेश किया जाये तो हम इसमें दिन दूनी रात चैगुनी प्रगति कर सकते है।

भारत की विविध प्राकृतिक धरोहर

भारत कश्मीर से कन्या कुमारी और गुजरात से लेकर पूर्वोतर प्रान्तों में हर प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा से ओतप्रोत है। जहां उत्तर की बर्फभरी गगन चुम्बी चोटियां और दक्षिण–पश्चिम के समुद्री किनारे मन को मोहित करते है वही पश्चिम के रेगिस्तान की खूबसूरती एवं पूरब के घने जंगल और चाय के बागान एक पर्यटक को अपने मायाजाल में उतारने में कामयाब होते है। इस के अलावा भारत के लगभग हर प्रान्त में नदियां, तालाब व झरने मौजूद है। इन प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर स्थानों पर योग का अपना अलग ही आनंद होता है। यहां न तो प्रदूषित पर्यावरण है और न ही रोजमर्रा की जिन्दगी का शोर। ऐसे पावन स्थलों पर पर्यटक न केवल स्वास्थ्य लाभ लेने आते है बल्कि साथ में उन्हें अंतर्मन की शांति भी प्राप्त होती है। आजकल की गलाकाट प्रतिस्पर्धा वाली जिन्दगी में न केवल शरीर ही स्वस्थ होना चाहिए अपितु मानसिक रूप से तरोताजा रहना भी जरूरी है, तभी हम अपनी जिन्दगी के कठिन संघर्ष में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

आस्था के पर्यटन

तख्त श्री आनंदपुर साहिब

– अनिता सच्चर

अभी कुछ दिन पहले पंजाब में गुरदासपुर जाना हुआ था। हमें वहां से चंडीगढ जाना था और रास्ते में परमानंद का नगर था आनंदपुर साहिब। इसलिए मन में आया कि क्यों न शहर के गुरुद्वारों के दर्शन कर लिए जाएं। आनंदपुरसाहिब का गुरुद्वारा देश के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में सर्वोपरि है। सिख धर्मावलम्बियों में यह गुरुद्वारा एक पवित्र आस्था का केन्द्र है। मान्यता है कि इस गुरुद्वारे में मत्था टेकने वाले श्रद्धालुओं की मनोकामनाएं पूरी होती है। इन गुरुद्वारों के दर्शन करने देश के कोने कोने से ही नहीं बल्कि कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन और अफ्रीका यानी पूरी दुनिया में जहां कहीं भी सिख धर्मावलम्बी बसे हैं, जीवन में कम से कम एक बार यहां दर्शन करने जरूर आते हैं।

आनंदपुर साहिब

आनंदपुर साहिब, पंजाब के रोपड़ जिले में शिवालिक पहाड़ियों की तलहटियों में बसा है। सिखों के सर्वोच्च महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र होने के नाते इसे श्रद्धापूर्वक आनंदपुर साहिब कहा जाता है। आनंदपुर में 1699 की बैसाखी के दिन, गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ और पंज पियारे (पांच प्यारे) की स्थापना की थी। गुरु जी समाज के दुर्बल, वंचित तथा शोषित वर्ग का उत्थान चाहते थे। इसके लिए उन्होंने संत–सैनिकों यानि निहंगों को आदेश दिया कि वह जरूरतमंदों और गरीबों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए खुद को समर्पित कर दें। यह दुनिया के सबसे महान शहीदों में से एक 9वें गुरु गुरु तेग बहादुर जी की परंपरा थी। गुरु गोबिंद सिंह की इच्छा के अनुसार आदेश था कि खालसा पांच ककार (प्रतीक) अर्थात केश, कंघा, कच्छा, कड़ा और किरपाण अवश्य धारण करें ताकि किसी के भी हमले में उन्हें आसानी से पहचाना जा सके। सिखों को उच्चतम नैतिक जीवन जीने और अत्याचार और अन्याय से लड़ने के लिए हमेशा तैयार रहने का निर्देश दिया गया।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही "स्वदेश दर्शन" योजना के अंतर्गत 2018–19 में "पंजाब में विरासत परिपथ" के लिए 99.95 करोड़ रूपए स्वीकृत किए गए हैं। विरासत परिपथ में आनंदपुर साहिब–फतेहगढ़ साहिब–चमकौर साहिब–फिरोजपुर–अमृतसर–खटकर कलां – पटियाला को शामिल किया गया है।

*पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

शहर के बारे में.....

आनंदपुर साहिब की स्थापना 1665 में नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी ने की थी। उन्होंने यहां जमीन खरीद कर माखोवाल के टीले पर एक निवास स्थान बनाया। बाबा गुरदित्ता ने गुरु की माता नानकी के नाम पर नए गांव का नाम चक्क नानकी रखा। वह स्थान बाद में आनंदपुर साहिब के नाम से जाना जाने लगा। सन् 1664 में श्री गुरु तेग बहादुर ने आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा बनवाया था। गुरु गोबिंद सिंह जी आनंदपुर साहिब में 25 बरस तक रहे थे।

अन्य प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल

10वें सिख गुरु गुरु गोबिंद सिंह जी ने शहर को बाहरी आक्रमणों से बचाने के लिए इसकी सीमा पर पांच किले बनवाए थे।

किला आनंदगढ़ साहिबः यह मुख्य किला था, जिसके बाद शहर का नाम आनंदपुर साहिब पड़ा। किला होलागढ़ साहिब, किला फतेहगढ़ साहिब, किला तारागढ़ साहिब और किला लोहागढ़ साहिब।

किला लोहागढ़ : यहां सेना के लिए हथियार बनाए जाते थे।

आनंदपुर साहिब भारत के पंजाब राज्य के रूपनगर जिले (रोपड़) में एक शहर है। इसे परमसुख के स्थान के रूप में जाना जाता है, यह सिखों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पवित्र स्थानों में से एक है, जो उनकी धार्मिक परंपराओं और इतिहास से जुड़ा हुआ है। आनंदपुर शहर प्रकृति के सुन्दर नजारों घिरे हिमालय की निचली तलहटी में स्थित है, यहां से सतलुज नदी दक्षिण पश्चिम में चार मील ही दूर है।

त्यौहार और मेले

सिक्खों के पवित्र धर्मस्थान श्री आनन्दपुर साहिब में होली के अगले दिन से लगने वाले मेले को होला मोहल्ला कहते है। सिखों के लिये यह धर्मस्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह होली को पौरुष के प्रतीक पर्व के रूप में मनाया जाता है। होला महल्ला का उत्सव आनंदपुर साहिब में छः दिन तक चलता है। इस अवसर पर, भांग की तरंग में मस्त घोड़ों पर सवार निहंग, हाथ में निशान साहब उठाए तलवारों के करतब दिखा कर साहस, पौरुष और उल्लास का प्रदर्शन करते हैं। पंज पियारे नगर कीर्तन यानि जुलूस का नेतृत्व करते हुए रंगों की बरसात करते हैं और नगर कीर्तन में निहंगों के अखाड़े तलवारों के करतब दिखते हैं। आनन्दपुर साहिब की सजावट की जाती है और विशाल लंगर का आयोजन किया जाता है।

प्रति वर्ष होला मोहल्ला के अवसर पर आनंदपुर साहिब जीवंत हो उठता है। यह परंपरा दशम गुरु, गुरु गोबिंद सिंह के समय से चली आ रही है। गुरु ने फैसला किया कि होली के त्यौहार का अवसर उनके लोगों के युद्ध कौशल को दिखाने का साक्षी बने। उन्होंने होली के इस त्यौहार को 'होला मोहल्ला' का सिख नाम दिया। प्रति वर्ष होने वाले होला मोहल्ला त्यौहार के समय देश भर से ही नहीं विदेशों से भी

श्रृद्धालुओं की भीड़ एकत्रित होती है और प्रतिदिन एक लाख से भी अधिक श्रृद्धालु रंग और उल्लास से मत्था टेकने आते हैं।

कहते है दसवेंगुरू श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी मुगलों और पहाड़ी राजपूतों के बीच फंसे थे और हाल ही में उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की थी, गुरु महाराज ने लोगों को युद्ध के लिए तैयार करने हेतु लोहगढ़ किले में छद्म युद्ध यानि नकली लड़ाई और कवि दरबार की एक दिन की प्रतियोगिता करके इस मेले की शुरुआत की थी। आनंदपुर सहिब से शुरू हुए नगर कीर्तन का जुलूस हिमाचल प्रदेश की सीमा पर बहती एक छोटी नदी चरण गंगा के तट पर समाप्त होता है। हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में बसे कीरतपुर साहिब से शुरू हुई यह परम्परा और दुनिया भर के अन्य गुरुद्वारों के लिए उदाहरण बन गई है।

होला मोहल्ला के दौरान, आनंदपुर साहिब एक मेले का रूप धारण कर लेता है। इस मौके पर गुरुद्वारों को विशेष रूप से सजाया जाता है। हालांकि यह मेला तीन दिनों तक चलता है लेकिन मार्च से ही कार्यक्रमों की हलचल तेज हो जाती है। समारोह के लिए देश भर के निहंग एकत्रित होते हैं। मेले के अंतिम दिन, निहंगों द्वारा अपनी पारंपरिक पोशाक में और हथियारों के साथ एक बड़ा नगर कीर्तन निकाला जाता है, जो गुरुद्वारा आनंदगढ़ साहिब के सामने निहंग मुख्यालय से शुरू होकर बाजार से गुजरता हुआ, होलगढ़ के किले तक पहुंचता है। इसके बाद, चरण गंगा के रेतीले तल पर नगर कीर्तन रुकता था। आज इस स्थान पर चरण गंगा स्टेडियम बनाया गया है यहां बहुत से श्रृद्धालु घुड़सवारी तथा घुड़सवारी करते हुए ही अनेक प्रकार के करतब दिखाते हैं। युद्धक क्रीड़ाओं (मार्शल गेम) जिसमें तलवार, पट्टा,गदका आदि शामिल होते हैं, का भी प्रदर्शन किया जाता है। इन्हें देखने बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं। लेकिन चरण गंगा स्टेडियम की दयनीय स्थिति को देख कर अच्छा नहीं लगा।

होला मोहल्ला

होला महल्ला एक सिख कार्यक्रम है, जो चैत के महीने के दूसरे दिन होता है और आम तौर पर मार्च में पड़ता है। होला एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होली से अलग है और यह होली से एक दिन पहले होता है।

महलिया, एक पंजाबी शब्द है, जो सेना के एक संगठित जुलूस का अर्थ देता है। जिसमें युद्ध के नगाड़ों के साथ सशस्त्र सैनिक एक निश्चित स्थान की ओर बढ़ते हैं।

महान कोष (पहला सिख विश्वकोश) के संकलनकर्ता भाई काहन सिंह लिखते हैं, "होला शब्द हल्ला (सैनकों के जोश) से लिया गया है और मोहल्ला शब्द एक संगठित जुलूस या सेना के एक अंग के लिए है। 'होला मोहल्ला' शब्द का अर्थ 'सेना का जोश दिखाना' हो सकता है।

डॉ. एम.एस. अहलूवालिया ने लिखा है कि महालिया एक पंजाबी शब्द है जो रूट हॉल से लिया गया था, जिसका अर्थ है प्रकाशमान होना। दोनों को मिलाकर हम इसे "युद्ध के नगाड़ों के साथ एक संगठित जुलूस" कह सकते हैं। लेकिन संगत इसे नगरकीर्तन कहती है।

गुरु गोविंद सिंह के दरबारी कवि भाई नंदलाल के अनुसार, इस नकली युद्ध के बाद प्रतिभागी खुशी मनाने एक दूसरे पर रंग और गुलाल फैंकते थे। सिख परंपरा यह मानती है कि गुरु गोबिंद सिंह ने भी रंगोत्सव में भाग लिया था। आज भी निहंग एक दूसरे पर गुलाल छिड़कते हैं।

होला मोहल्ला होली के त्यौहार पर मनाया जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णन है कि होली के रंग प्रभु के प्रेम में प्रकट होते हैं। फागण या फाल्गुन की पूर्णिमा की रात होलिका दहन के साथ होली शुरू होती है और अगले दिन इसे फाल्गुन के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी ने होली मनाने की इस पद्धति को एक सैन्य शक्ति से जोड़ने और होली के एक दिन बाद एक–दूसरे पर रंग डालकर प्रसन्नता व्यक्त करने के निमित्त होला मोहल्ला मनाने की परम्परा शुरू की थी। कुछ विद्वानों का विचार है कि गुरु साहिब ने होला मोहल्ला को सिखों के लिए एक नकली युद्ध के द्वारा अपने युद्ध कौशल को दिखाने का अवसर बनाया। यह संभवतया लोगों में तत्कालीन सत्ता के विरूद्ध संघर्ष के लिए एक नई ऊर्जा भरने की एक क्रियाकलाप के रूप में किया गया होगा।

आनंदपुर साहिब में होली और होला के दौरान मनाया जाने वाला मेला पारंपरिक रूप से तीन दिन का कार्यक्रम है, लेकिन प्रतिभागी एक सप्ताह के लिए आनंदपुर साहिब में रहते हैं। बाहर डेरा डालते हैं और युद्ध कला कौशल के खेलों के विभिन्न प्रदर्शन देखते हैं, कई लोग खुद भी हिस्सा लेते हैं। साथ ही संगीत, कीर्तन और कवि दरबार (कवि सम्मेलन) सुनते

हैं। गुरुद्वारे में लंगर का भोजन करने, श्रद्धालु पंगतों (कतारों)में एक साथ बैठते हैं और शाकाहारी परसादा खाते हैं। सिखों के अस्थायी अधिकार के पांच तख्तों में से एक तख्त श्री केशगढ़ साहिब के पास एक लंबे नगर कीर्तन के साथ होला मोहल्ला के दिन कार्यक्रम का समापन होता है।

होली एक ऐसा त्यौहार है, जब लोग पानी में रंग मिला कर एक दूसरे पर डालते हैं या फिर सूखे रंगीन गुलाल छिड़कते हैं। चैत के पहले दिन एक होला स्थापित करके इसे एक नया आयाम दिया गया। गुरु गोबिंद सिंह ने चैत बदी प्रथमा, 1757 तदनुसार 22 फरवरी 1701 को आनंदपुर में पहला होला आयोजित किया था।

गुरुद्वारा तख्त श्री केशगढ़ साहिबः पंथ के प्रकाश के दो सौ साल बाद, 1699 में बैसाखी के दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने शांति, समानता और न्याय के लिए प्रतिबद्ध संत–सैनिकों के साथ खालसा पंथ की औपचारिक रूप से नींव रखी थी और इसी स्थान पर पंज प्यारों को नाम दिया गया था। उस युगांतरकारी आयोजन स्थल पर आज गुरुद्वारा तख्त श्री केशगढ़ साहिब है। अकाल पुरूख की सत्ता के पांच अलौकिक तख्तों में से एक, तख्त श्री केशगढ़ साहिब आनंदपुर साहिब का केंद्रीय स्थान है। यह खालसा पंथ के उदय का साक्षी और श्रद्धास्थल है।

गुरुद्वारा तख्त श्री केशगढ़ साहिब

आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना के बाद, गुरु गोबिंद सिंह जी ने इस पहाड़ी पर सभाएं आयोजित की थी। उस समय यह पहाड़ी आज के हिसाब से 3.0 से 4.50 मीटर ऊंची थी। इस पहाड़ी के किनारे एक और दूसरा थड़ा था जिसे "तम्बू वाली पहाड़ी" के नाम से जाना जाता था क्योंकि "खालसा पंथ की घोषणा" के दिन यहां एक विशेष तम्बू लगाया गया था। यह पहाड़ी अब मौजूद नहीं है। खालसा पंथ की स्थापना के अगले दिन एक विशेष सभा या मण्डली यहां बुलाई गई थी, जिसमें हजारों सिखों ने भाग लिया था।

गुरुद्वारा गुरु का महलः चक नानकी आनंदपुर साहिब में पहली इमारत थी यह माना जाता है कि गुरुद्वारे की केंद्रीय पद–पीठ (आसन) चक नानकी, आनंदपुर साहिब की सबसे पुरानी संरचना है। गुरु गोबिंद सिंह, माता गुजरी, माता जीत कौर, माता सुंदर कौर, माता साहिब कौर और गुरु साहिब के चार साहिबजादों ने यहीं निवास किया था। साहिबजादा जुझार सिंह, साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह का जन्म भी यहीं हुआ था। गुरुद्वारा भोरा साहिब, गुरुद्वारा मंजी साहिब और गुरुद्वारा दमदमा साहिब गुरुद्वारा गुरु के महल परिसर का हिस्सा हैं।

गुरुद्वारा भोरा साहिबः यह गुरुद्वारा गुरु तेग बहादुर जी का निवास स्थान था। उन्होंने जिंदगी में रोजाना की भागदौड़ से अलग यह एक गर्भगृह (भूमिगत कमरा) है जहां नौवें गुरु महाराज ध्यान करते और भजनबाणी की रचना करते थे।

गुरुद्वारा थड़ा साहिबः यह गुरु का महल परिसर का एक हिस्सा था। यह "दीवान–ए–आम" था। यहां पर गुरु तेग बहादुर सभा प्रवचन करते और सिखों को संबोधित करते थे।

गुरुद्वारा दमदमा साहिबः यह गुरुद्वारा गुरु के

महल परिसर का हिस्सा है। इसे गुरुद्वारा तख्त साहिब के नाम से भी जाना जाता है, गुरु तेग बहादुर जी इसी स्थान से अकाल तख्त साहिब के कार्यों का संचालन करते थे। यह "दीवान–ए–ख़ास" था। यह गुरु तेग बहादुर और उनके बाद गुरु गोविंद सिंह का दरबार था। यहां पर गुरु विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों के साथ–साथ अन्य महत्वपूर्ण अतिथियों का स्वागत करते थे। इसी स्थान पर गुरु गोबिंद सिंह जी को दसवें गुरु के रूप में नामित किया गया था। इस भवन के एक किनारे, गुरु गोबिंद सिंह जी के समय का एक पुराना कुआं है, जो आज भी मौजूद है।

गुरुद्वारा मंजी साहिब/गुरुद्वारा डुमलगढ़ साहिबः यह गुरुद्वारा तखत श्री केश गढ़ साहिब के उत्तर की ओर है। यहीं पर गुरु गोबिंद सिंह अपने बेटों को प्रशिक्षण देते थे। इस स्थान को अखाड़े और खेल के मैदान के रूप में उपयोग किया जाता था। यहां कुश्ती और अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती थीं। 2 नवंबर,1703 को जब बिलासपुर के शासक अजमेर चंद ने आनंदपुर साहिब को अपने राज्य में मिलाने के लिए हमला किया तब गुरु गोबिंद सिंह यहां बरगद के पेड़ के नीचे बैठे ध्यानलीन थे। युद्ध के मैदान में, भाई मान सिंह निशांकी की कमान में सिखों ने पहाड़ी सेना को करारा जवाब दिया। इस लड़ाई के दौरान भाई मान सिंह घायल हो गए और खालसा का निशान/झंडा टूट गया। एक सिख ने गुरु गोबिंद सिंह जी को इसकी सूचना दी।

इस पर गुरुजी ने अपनी केस्की (पगड़ी) से एक दुमला (फेरा – यानि कपड़े का एक टुकड़ा) फाड़ दिया और उसे अपनी पगड़ी में एक झंडे के रूप में स्थापित किया। गुरु ने घोषणा की कि भविष्य में खालसा झंडा कभी नहीं गिरेगा और न ही उतारा जाएगा। यह हर सिख की पगड़ी का हिस्सा होगा। साहेबजादा फतेह सिंह, जो उस समय सिर्फ पांच साल के थे, ने भी अपनी पगड़ी में फरा लटका दिया। इस घटना के बाद से फरा की परंपरा हर सिख नेताओं की पगड़ी का हिस्सा बन गई। लेकिन अब, सिवाय निहंगों के, यह परंपरा व्यवहार में नहीं है। इस गुरुद्वारे को डुमलगढ़ साहिब के नाम से भी जाना जाता है। यह भी एक पवित्र स्थान है।

गुरुद्वारा शहीदी बागः यह गुरुद्वारा तख्त श्री केश गढ़ साहिब और किला आनंद गढ़ साहिब के बीच सड़क पर स्थित है। 18वीं शताब्दी के शुरु के दिनों में यहां एक बड़ा बगीचा था। इसी बाग में सिख सेना और बिलासपुर की सेना के बीच झड़पों के दौरान, अनेक सिख सैनिकों ने पंथ पर अपने जीवन न्योछावर किए थे। इसलिए इस स्थान को गुरुद्वारा शहीदी बाग कहा जाता है।

गुरुद्वारा माता जीत कौरः गुरु गोबिंद सिंह जी की पत्नी माता जीत कौर जी को "दिव्यदृष्टि" प्राप्त थी और उन्हें सिखों और युवा साहिबजादों पर होने वाले अत्याचारों और उनके साथ की जा रही क्रूरताओं के बारे में पहले ही पता लग गया था। उन्होंने गुरु से मुक्ति मांगी और 5 दिसंबर,1700 को शरीर त्याग दिया। किला होलागढ़ साहिब के पास उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस जगह को अब गुरुद्वारा माता जीत कौर कहा जाता है।

गुरुद्वारा सीसगंज साहिबः गुरुद्वारा केशगढ़ साहिब से 20 मिनट की पैदल दूरी पर है गुरुद्वारा सीसगंज साहिब। गुरु तेग बहादुर जी ने 11 नवंबर,1675 को दिल्ली में शहादत दी। गुरु साहिब के सीस को भाई जीवन सिंह और उनके साथी कीरतपुर साहिब से गुरुद्वारा लाए थे। यही वह स्थान है जहां गुरु तेग बहादुर जी के सीस का अंतिम संस्कार किया गया था। सिरमौर के राजा मत प्रकाश के निमंत्रण पर गुरू जी ने पांवटा साहब में रहने का मन बना लिया था। 5–6 दिसंबर,1705 की रात को आनंदपुर साहिब छोड़ने से पहले जब गुरु गोबिंद सिंह जी यहां आए और उन्होंने भाई गुरबक्श दास उदासी को इस तीर्थ का सेवादार नियुक्त किया और अपनी यात्रा शुरू की।

गुरुद्वारा अकाल बुंगा साहिब : यह गुरुद्वारा गुरुद्वारा सीसगंज साहिब के बिल्कुल सामने है। यहां गुरु गोबिंद सिंह जी ने "गुरु तेग बहादुर के शीश" के दाह संस्कार के बाद उन्होंने संबंधियों और अनुयायियों के साथ विश्राम किया था, जिसके बाद अकाल पुरूख से प्रार्थना की गई थी और सिखों को "सर्वशक्तिमान अकाल पुरूख की इच्छा" के सामने झुकने के लिए संबोधित किया। उन्होंने सिखों को अत्याचार और अन्याय के खिलाफ विश्वास और युद्ध के लिए संघर्ष करने हेतु तैयार रहने के लिए कहा।

किला बाउली साहिब : आनंद पुर साहिब गुरूद्वारे से थोड़ा हटकर मुख्य सड़क पर सामने ही किला बाउली साहिब है। इसकी विशेषता है कि इसके नीचे बने कूंए तक जाने के लिए 139 सीढीयां हैं। भक्तगण नीचे उतर कर चुल्लू में पानी भर कर पीते हैं। किले में ऊपर जाने के लिए भी 32 सीढीयां हैं। हम लोगों ने भी किले में नीचे तक जाकर पानी का स्वाद चखा। इस किले के सामने आजकल श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए बैंच लगाए गए हैं और खान पान की अच्छी व्यवस्था की गई है।

किला बाउली साहिब के सामने कोई एक किलोमीटर है विरासत–ए–खालसा।

गुरुद्वारा श्री हरगोबिंदसर साहिबः श्री हरगोबिंदसर साहिब नगर में सबसे सुंदर गुरुद्वारों में से एक है। यह कीरतपुर साहिब से एक कि.मी. दूर ऐतिहासिक गाँव डाढ़ी में है।

गुरु–का–लाहौरः श्री आनंदपुर साहिब के उत्तर में हिमाचल प्रदेश की ओर जाने वाले, आनंदपुर–गंगोवाल मार्ग पर लगभग 12 कि.मी. दूर बसंतगढ़ गांव के पास चार गुरुद्वारें हैं। यहीं 10वें गुरु जी का माता के साथ विवाह–कारज सम्पन्न किया गया था। यहां दो पहाड़ी झरनें आज भी मौजूद हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि गुरुसाहेब ने पथरीले पहाड़ों को खोद कर बनाए थे।

गुरु का लाहौर का इतिहास : तख्त श्री केसगढ़ साहिब के मैनेजर भाई रणजीत सिंह ने बताया कि साहिबजादा गोबिंद राय का विवाह लाहौर के भाई हरिजस खत्री की पुत्री जीतो जी के साथ तय हुआ था। हरिजस की यह इच्छा थी कि श्री गुरु

तेग बहादुर जी बारात लेकर लाहौर आवें, मगर श्री आनंदपुर साहिब में गुरुजी ने कुछ जरूरी काम शुरू किए थे। इसलिए लाहौर जाना ठीक नहीं समझा। गुरु जी ने भाई हरिजस से कहा कि उनकी रिहायश और विवाह कारज की खातिर यहीं लाहौर बना देते हैं। वह गुरु जी की बात मान गए। फिर गुरु जी ने सिखों को आदेश दिया कि श्री आनंदपुर साहिब से 12 कि.मी. दूर उत्तर की ओर लाहौर जैसा ही एक शहर बनाया जाए। जब यह शहर बनकर तैयार हो गया तो गुरु साहिब ने इस नगर का नाम गुरु का लाहौर रखा।

यहां प्रति वर्ष बसंत पंचमी के दिन गुरु साहिब के विवाह पर्व पर जोड़ मेला लगता है। इस दिन श्री आनंदपुर साहिब से विवाह रूपी एक विशाल नगर कीर्तन गुरु का लाहौर के लिए सजाया जाता है। इस जोड़ मेले में पंजाब सहित देश के कोने–कोने से लाखों लोग शामिल होते है। किला आनंदगढ़ साहिब की ओर से संगत के लिए अनेक प्रकार की मिठाइयों का लंगर लगाया जाता है।

गुरु का लाहौर में हैं चार गुरुद्वारे

गुरुद्वारा त्रिवैणी साहिब : एक प्रथा के अनुसार गुरु का लाहौर में पानी की कमी को दूर करने के लिए गुरु साहिब ने इस स्थान पर बरछा मार पानी की तीन धाराएं बहाई थी। इन तीनों धाराओं का पानी एक सरोवर में गिरता है। इस स्थान पर एक खूबसूरत गुरुद्वारा साहिब बना हुआ है।

गुरू का लाहौर

गुरुद्वारा पोड़ साहिब : यह गुरुद्वारा एक झरने पर बना हुआ है। एक प्रथा के अनुसार यह झरना गुरु साहिब के घोड़े की टापों से फूटा था। इस झरने का पानी खारा है।

गुरुद्वारा सेहरा साहिब : एक प्रथा के अनुसार गुरु साहिब ने गुरु का लाहौर में पहुंचने से पहले यहां सेहरा बांधा था। यह जगह गुरु का लाहौर से कुछ दूर गांव बस्सी में है।

गुरुद्वारा श्री आनंद कारज साहिब : इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंह जी का माता जीतो जी के साथ विवाह कारज सम्पन्न हुआ था। इस याद कायम रखने के लिए यहां गुरुद्वारा साहिब बनाया गया है।

कैसे पहुंचे :

सड़क मार्ग : चंडीगढ़ से आनंदपुर साहिब 80 कि.मी. है और लगभग दो से अढाई घंटे लगते हैं। यहां से आनंदपुर साहिब के लिए ए.सी., डीलक्स, सेमी–डीलक्स या साधारण बसें मिलती हैं। दिल्ली से हिमाचल प्रदेश के ऊना तक जाने वाली सभी बसें आनंदपुर से होकर जाती हैं।

रेलमार्ग : नई दिल्ली. ऊना हिमाचल एक्प्रेस, नई दिल्ली–ऊना जनशताब्दी से सीधे ही आनंदपुर पहुंचा जा सकता है।

वायुमार्ग : चंडीगढ़ के हवाई अड्डे से भी आनंदपुर साहिब के लिए टैक्सियां और बसें मिल जाती है।

इसके अलावा भी जब आप आनंदपुर आ ही जाते है तो आस पास के भी कुछ और स्थानों का भ्रमण जरूर करें। इनमें सबसे महत्वपूर्ण है कीरतपुर साहिब, जो नंगल–रूपनगर–चंडीगढ़ रोड पर रूपनगर से 34 कि.मी. उत्तर में है। कीरतपुर शहर को इसके

गौरवशाली इतिहास और गुरुद्वारों के लिए जाना जाता है। गुरुद्वारा पतालपुरी यहां का सबसे प्रसिद्ध स्थान है, जहां सिख दिवंगतों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं। इसकी स्थापना 1627 में गुरू हरगोबिंद सिंह जी ने की थी। यह गुरू हर राय और गुरू हरकृष्ण का जन्म स्थान भी है। 9वें सिक्ख गुरू, गुरू तेग बहादुर सिंह जी की दिल्ली में शहादत के बाद, गुरू के सीस को इस स्थान पर लाया गया था। यहां पर बब्नगढ़ नाम से एक गुरुद्वारा भी बनवाया गया था। साथ ही एक मुस्लिम संत पीर बुड्ढन शाह (पौराणिक कथाओं के अनुसार जिनकी उम्र 800 साल थी) का संबंध भी इस स्थान से है। गुरुद्वारा के अलावा कीरतपुर साहिब में कई मंदिर और दरगाह भी हैं।

गुरुद्वारा चरण कमल, गुरुद्वारा शीश महल, गुरुद्वारा श्री तख्त साहिब, गुरुद्वारा बब्न गढ़, गुरुद्वारा बाबा गुरदिता, गुरुद्वारा बाथा साहिब, गुरुद्वारा टिब्बा साहिब, नांगल झील, एएसआई संग्रहालय, श्री नैना देवी मंदिर आदि।

विरासत–ए–खालसा सिख धर्म का एक संग्रहालय है, जो पवित्र शहर, आनंदपुर साहिब में स्थित है। संग्रहालय सिख के इतिहास के 500 साल और खालसा के जन्म की 300 वीं वर्षगांठ, दसवें और अंतिम गुरु, गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा लिखित शास्त्रों के आधार पर मनाता है। संरचना औपचारिक और सुन्दर पुलों से जुड़ी, एक शिल्पनिर्मित झील के दोनों ओर दो परिसर हैं।

पश्चिमी परिसर में एक प्रवेश द्वार, 400 बैठने की क्षमता वाला एक सभागार, दो मंजिला अनुसंधान और संदर्भ पुस्तकालय और प्रदर्शनी दीर्घा शामिल हैं।

पूर्वी परिसर में एक गोल स्मारक भवन के साथ ही स्थायी प्रदर्शनी स्थल है, जिसमें दो दीर्घाएं हैं जिनमें क्षेत्र के किलों की वास्तुकला को दर्शाने का प्रयास किया गया है। आसपास की चट्टानों पर छायाचित्र अंकित किए गए हैं। पांच समूहों में दीर्घाओं का जमाव पांच गुणों को दर्शाता है, जो सिख धर्म का एक केंद्रीय स्थान है।

विरासत–ए–खालसा को पहले खालसा हेरिटेज मेमोरियल कॉम्पेक्स के नाम से जाना जाता था। इसे बनाने में 13 साल का समय लगा और यह 2011 में बनकर तैयार हुआ। म्यूजिम में सिख धर्म की स्थापना और बाद में बने खालसा पंथ से जुड़ी घटनाओं का विस्तृत विवरण उपलब्ध कराया गया है। यहां लाइब्रेरी और प्रदर्शनी गैलरी के अलावा एक सभागार भी है, जिसमें 400 लोग बैठ सकते हैं। इस म्यूजियम की डिजाइन में आधुनिक और किला निर्माण वास्तुशिल्पी झलक देखी जा सकती है। बाहरी दीवारों पर शहद के रंग अर्थात गाढ़ा बादामी रंग के खुरदरे पत्थर से म्यूजियम और भी शानदार हो उठा है।

इस घटना के तीन सौ साल को एक यादगार के रूप में मनाने के लिए पंजाब सरकार ने खालसा हेरिटेज कॉम्प्लेक्स की एक स्मारक के रूप में परिकल्पना की थी, जिसे अब आनंदपुर साहिब में विरासत–ए–खालसा के नाम से जाना जाता है। यह सिखों और पंजाब की वीरभूमि के प्रति एक प्रेरक श्रद्धांजलि है। यहां दुनिया और खुद को प्रदान करने वाली दृष्टि,समझदारी बेहतरीन संवेदनशीलता और

सौंदर्यबोध सहित पंथ के भव्य इतिहास, गुरुओं के जीवन और सत्य के लिए किए गए उनके प्रयासों को बताया गया है।

विरासत–ए–खालसा, अपनी तरह का पहला ऐसा स्थान है जहां धरोहर को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया गया है। सिखों के लिए यह परिसर एक पुनर्जागरण के रूप में तथा गैर–सिखों के लिए यह एक सांस्कृतिक तथा प्रेरणादायक यात्रा है, जो उन्हें पंथ और उसके इतिहास के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करता है।

परियोजना के बारे में

इमारतों में जगह.जगह कंक्रीट से इस प्रकार निर्माण किया गया है कि कुछ बीम और स्तंभ तो स्पष्ट दिखाई देते हैं। संरचनाओं के एक बड़े हिस्से पर शहद जैसे गाढ़े बादामी रंग का पत्थर लगाया गया है। स्टेनलेस स्टील से बनी छतें दोहरी वक्रता में आकाश को प्रतिबिंबित करती हैं। जबकि नहर में झरनों बांधों की एक श्रृंखला दिखाई गई है।

पुल को पार करके संग्रहालय में प्रवेश करने वाले पर्यटक/ दर्शक छोटे खुले आंगन में कुछ समय बिता सकते हैं। चारों तरफ से खुला पुलनुमा रास्ता (फोयर) पर्यटकों के आने और जाने का स्थान है। संग्रहालय से अधिकतम सुविधा प्रदान करने के लिए बड़ी प्लाज्मा स्क्रीन पर 'वार्तालाप' के रूप में की जा रही उद्घोषणा से आगंतुक पर्यटकों को सिख जीवन की एक झलक दिखाई जाती है। बताया जाता है। यहां का ओरिएंटेशन रूम म्यूज़ियम कॉम्प्लेक्स में आने वाले पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह बहुभाषी ऑडियो रूम एक तरह से गाइड जैसी विभिन्न सुविधाएं भी प्रदान करता है।

आनंदपुर साहिब में विरासत–ए–खालसा की शुरुआत 1999 में गुरु गोविंद सिंह द्व ारा खालसा पंथ की स्थापना के त्रिशताब्दी समारोह के लिए की गई थी। 6,500 वर्ग मीटर में फैला, विरासत–ए–खालसा संग्रहालय हाथ से तैयार की गई कलाकृतियों और नवीनतम तकनीक का उपयोग करते हुए पंजाब और सिख धर्म के बारे में एक यादगार कहानी बताता है। इस प्रकार कहानी के रूप में घटनाओं के बारे में बताने वाला दुनिया में अपनी तरह का पहला संग्राहलय है और इसे एक ही समुदाय को समर्पित दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संग्रहालय के रूप में मान्यता दी गई है है। इसे दुनिया के जानेमाने वास्तुकार मोशे सफी द्वारा डिज़ाइन किया गया है। इमारतों के दो कार्यात्मक रूप से एकीकृत सेटों के

रूप में कल्पना की गई, पश्चिमी परिसर, शहर के लिए प्रवेश द्वार का निर्माण 165 मीटर के पुल पर पूर्वी परिसर से आने वाले आगंतुकों को पैदल प्रवेश प्रदान करता है। परावर्तित पूलों की एक श्रृंखला दोनों परिसरों के बीच एक बनाया गया जलमार्ग का निर्माण करती है, जिनके दोनों ओर मेहोगदार पैदल मार्ग और उद्यान हैं। सार्वजनिक सुविधाएं और एक कैफेटेरिया पुल के शुरू में ही स्थित हैं।

विरासत–ए–खालसा में
प्रवेश शुल्क : निःशुल्क
समय : प्रातः10 बजे से सायं 5 बजे तक
(मंगलवार से रविवार) सोमवार अवकाश

गैलरी

उत्तराखण्ड

देवभूमि : धारचुला

– राजेन्द्र सिंह मनराल

आज की मशीनी ज़िन्दगी में अपने लिये भी कुछ समय निकालना मुश्किल लगता है। थोड़ी देर के लिए ही सही पुराने दोस्तों और रिश्तेदारों के घर जाने के लिए दो दिन पहले सोचना पड़ता है। फिर भी इस भागदौड़ की जिंदगी में कुछ सुकुन पाने के लिए ज्यादातर लोग सप्ताह भर की छुट्टी लेकर पहाड़ों में ही जाना पसंद करते हैं। लेकिन आपको शांति–सुकून चाहिये तो किसी भीड़–भाड़ वाले स्थान पर जाने के बजाय क्यों न किसी ऐसे स्थान की ओर चले जाएं, जहां अधिक भीड़ न हो और घूमने का आनंद भी दोगुना हो जाए?

हिमालय की ऊंची–ऊंची पहाड़ियों से घिरा, उत्तराखंड के पिथौरागढ़ ज़िले में बसा धारचुला,एक बेहद खूबसूरत शहर है। अधिकतर लोग शायद इसे शहर नहीं कहेंगे क्योंकि न तो यहां बड़े–बड़े शॉपिंग सेंटर हैं और न ही शहरों जैसी सुविधाएं लेकिन हिमालय की गोद में बसे धारचुला में घूमने का अपना एक अलग ही आनंद है।

समुद्र तल से 915 मीटर की ऊंचाई पर पिथौरागढ़ के दिल में बसा धारचुला अपनी खास समृद्ध संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह कुमाऊं क्षेत्र में एक प्रमुख पर्यटन स्थल है जिसे छोटा कैलाश और कैलाश मानसरोवर यात्रा का प्रवेश द्वार माना जाता है। प्राचीन काल में कई मुनियों ने यहां अपनी तपोस्थलियां बनाईं जिनमें व्यास मुनि अधिक प्रसिद्ध थे। किवदंती है कि धारचुला कि जब व्यास मुनि अपना भोजन बनाते थे तो धारचुला के आसपास तीन पर्वतों के बीच अपना चूल्हा जलाते थे इसलिए इसका नाम धारचुला पड़ा। शहर के नाम में निहित है एक घाटी जिसमें पर्वत चोटी (धार) और चूल्हा। धराचुला को यह नाम इसलिए भी दिया गया था क्योंकि काली नदी के किनारे स्थित यह घाटी चूल्हे जैसी दिखती है।

धारचुला के बारे में....

ग्रीष्म ऋतु कुछ गर्म होती है मगर पहाड़ों पर चमकदार बर्फ होती है। सर्दियां बहुत ठंडी होती है। धारचुला के अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सर्दियों के मौसम (दिसंबर– फरवरी के अंत) के दौरान भारी हिमपात होता है।इस क्षेत्र में बरसात के मौसम (जुलाई–सितंबर) में भारी बारिश होती है जिससे लोगों के सामान्य जीवन में बाधा उत्पन्न होती है।

*पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

इससे पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन होता है। सर्दी के के दौरान शहर के चारों ओर बर्फ से ढके पहाड़ एक सुंदर सपना सा लगते हैं। मगर जैसे ही सूर्य चमकने लगता है, बर्फ पिघलने लगती है और नदियों की कलकल करती धाराएं तेज गति से बहने लगती हैं।

टनकपुर तक रेलगाड़ी की यात्रा के बाद वहां से सड़क से पिथौरागढ़ तक पहुंच सकते हैं। हालांकि, टनकपुर से पिथौरागढ़ तक की दूरी कम है और वहां से लगभग छः घंटे लगते हैं। इस तरफ पहाड़ियों की सड़कों कुछ अधिक ही वक्राकार या टेढ़ी–मेढ़ी होती हैं जो आम आदमी में मितली पैदा करती हैं। काली नदी के तट पर स्थित, धारचुला में काली नदी के साथ साथ चलने का अपना एक अनोखा ही अनुभव है।

भारत और नेपाल की सीमा पर स्थित होने के कारण धारचुला को रणनीतिक रूप से संवेदनशील माना जाता है। पिथौरागढ़ से 90 कि.मी. दूर पहाड़ों से घिरे इस शहर के पश्चिम में बर्फ से ढ़की पंचचुली चोटी है जो इसे जौहर घाटी से अलग करती है। यहां पर्यटन के अनेक आकर्षण हैं। चूंकि यह स्थान अभी महानगरों के पर्यटकों के बीच अधिक लोकप्रिय नहीं है, इसीलिये यहां ज्यादा भीड़ नहीं रहती है। अपने में समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराएं, भव्य हिमालयी चोटियों के शानदार नजारे समेटे धारचुला, यहां आने वाले पर्यटकों को भारत – नेपाल सीमा, भारत – चीन सीमा, ओम पर्वत और नारायण आश्रम के साथ ही ग्रामीण पर्यटन की सभी सुविधाएं प्रदान करता है।

इतिहास

मध्यकाल से ही धारचुला हिमालयी व्यापार मार्ग पर एक प्राचीन व्यापारिक शहर था। 'बार्टर सिस्टम' यानि आदान–प्रदान पर आधारित व्यापार ही धारचुला के निवासियों के जीवन निर्वाह का साधन था।

हाथ से बना कालीन

कालीन के स्थानीय हस्तशिल्प,(जिसे स्थानीय लोग 'दान' कहते हैं) तिब्बतियों को अनाज और कपड़ों के बदले में दिए जाते थे। इन्हें तिब्बत के व्यापारी उनके अपने देश में बेचते थे। सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध के बाद, तिब्बतियों के साथ सभी प्रकार के व्यापार पर लगभग पूर्ण विराम ही लग गया जिससे यहां के लोगों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इन मुश्किलों ने लोगों को रोजगार के लिए वैकल्पिक साधनों की ओर देखने के लिए विवश कर दिया और यहां की स्थानीय आबादी खेती (ढाल खेती), छोटे व्यवसाय और मवेशी पालन करने लगी। नेपाल के व्यापारियों, आसपास के पर्वतीय स्थलों पर ट्रैकिंग करने वाले सैलानियों तथा मानसरोवर जाने वाले श्रद्धालुओं के आने जाने से इस क्षेत्र में व्यापार के अवसर बने तो मैदानों और तलहटी के दूसरे हिस्सों के लोग, धारचुला में बसने लगे। धारचुला में अभी भी अधिकांश आबादी रंग् जनजाति की है लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश तथा पंजाब आदि से आए बहुत सारे अन्य लोग भी हैं। यह बढ़ती भीड़ ने धारचुला के व्यावसायीकरण की नींव रखी थी। बाद में सरकार की ओर से शहर में पर्यटन की सुविधाएं विकसित की गईं।

भाषा और संस्कृति

शहर और आसपास रूंग शौका, भोटिया जनजाति की आबादी है। जिन्हें आमतौर पर रंग् उच्चारित किया जाता है। छोटा कद के रूंग बहुत सरल स्वभाव के और मेहमान नवाज होते हैं। धारचुला के निवासी, पहाड़ों के उस पार बसे नेपाल के दारचूला के निवासियों से काफ़ी मिलते–जुलते हैं। यह लोग सदियों से धारचुला घाटी के आसपास के पहाड़ों में बसे हुए हैं। शुरु में, यह लोग गर्मी के मौसम के दौरान आस–पास की अधिक ऊंचाई वाली पहाड़ियों में रहते थे और सर्दियों के बेहद ठंडे मौसम से बचने के लिए धारचुला की घाटी में आ जाते थे। कुछ लोग खानाबदोस भी होते थे, जो उत्तराखंड के तराई क्षेत्रों, जैसे उधम सिंह नगर तथा नैनीताल, में आ जाते थे। यहां की आबादी के ज्यादातर लोग आज भी टनकपुर, बनबसा तथा अन्य तराई क्षेत्रों में बसे हुए हैं। धीरे–धीरे लोगों ने घाटी के अपेक्षाकृत गर्म वातावरण में रहना शुरू कर दिया और यह स्थान लोगों के लिए एक स्थायी निवास बन गया। तंबू और लकड़ी के घर जल्द ही ईंट गारे के पक्के घरों में बदल गए। 1900 के दशक के शुरु में एक छोटी सी बस्ती के रूप में बसा यह स्थान 1940 के दशक तक एक कस्बे में विकसित हो गया था।

कंडाली त्यौहार के अवसर पर

आज यह शहर न केवल क्षेत्रीय लोगों के लिए स्थायी आश्रय प्रदान करता है बल्कि शहर को पार कर अपने गंतव्यों तक जाने वाले व्यापारियों और तीर्थयात्रियों को विश्राम स्थान भी प्रदान करता है।

आज भी धारचुला में रूंग जनजाति की अपनी एक अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत है। यहां के रूंग आपस में स्थानीय भाषा रूंगलो ही बोलते हैं। इसकी कोई लिखित लिपि नहीं होने के बाद भी यह भाषा मौजूद है। इस बात को देखते हुए कि अब इस बोली का देश में उपयोग संभव नहीं है, स्थानीय आबादी ज्यादातर हिंदी, अंग्रेजी और नेपाली खूब अच्छी तरह से बोलती–समझती है। रूंग अपने स्थानीय देवताओं सियांग–से और गैबला की पूजा करते हैंजो वास्तव में हिंदू देवताओं के ही प्रतिरूप हैं।

रूंग अपने सभी त्यौहार और महत्वपूर्ण अवसरों के जश्न बड़े उत्साह से मनाते हैं। ऐसे किसी भी समारोह में नृत्य, बाईरा (गीत) का सथाणी (स्थानीय रूप से तैयार शराब) के साथ आनंद लिया जाता है। अन्य जातीय समूहों की तरह, रूंगों में भी उनके पारंपरिक वस्त्र होते हैं। महिलाओं के आभूषणों में चांदी के बड़े हार, नाक और कान के बड़े छल्ले वाले आभूषण यहां की विशेषता है। पुरुषों के वस्त्रों में पगड़ी

का आज भी महत्व है। किन्तु आजकल पारंपरिक वस्त्रों का उपयोग केवल बड़े उत्सवों या विवाह आदि के अवसरों तक ही सीमित है। फिर भी, यह कहना उचित नहीं होगा कि इस भौगोलिक दूरी के कारण यहां लोग फैशन के प्रति जागरूक नहीं हैं। बढ़ते व्यावसायीकरण के कारण नेपाल के छोटा मोती बाजार से आकर यहां लेविस जीन्स, लहंगे और घाघरे से लेकर आदिदास के जूते जैसे बड़े ब्रांड यहां की सड़कों पर बिकते देखे जा सकते हैं।

यहां एक छोटा सा खेल स्टेडियम पहले ही है। रूंग के गौरव के रूप में एक सांस्कृतिक संग्रहालय बनाया गया है जो इस समुदाय की जीवंत संस्कृति का प्रतीक है। इसके अलावा एक छोटा सभागार भी बनाया गया है जहां जहां पर्यटकों के लिए प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। धारचुला में एक अच्छा सामुदायिक पुस्तकालय भी है।

वनस्पति और जीव

क्षेत्र में पाया जाने वाला विशेष फल आड़ू

जलवायु की कठिन परिस्थितियों और मानव के कम हस्तक्षेप ने इस क्षेत्र में वनस्पति को फलने फूलने का भरपूर अवसर दिया है। यहां चीड़, बलूत और देवदार के पेड़ आपका स्वागत करते हैं। इसके अलावा, कई तरह के फलों के वृक्ष भी देख सकते हैं। यहां कई दुर्लभ जड़ी बूटियां और झाड़ियां पाई जाती हैं। अब छोड़े गए खेतों और घास के मैदानों में यह खूब फलफूल रहीं हैं। लेकिन हम इस तथ्य को नकार नहीं सकते कि बढ़ती 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण, यहां पेड़ कम होते जा रहे हैं।

यहां के वनों में तेंदुए, भालू, लोमड़ी, बंदरों और हिरण जैसे जंगली जानवरों को देखा जा सकता है।

धारचुला के रमणीक स्थल : नारायण आश्रम: यह एक लोकप्रिय धार्मिक स्थान है जो समुद्र तल से 2734 मीटर की ऊंचाई पर सोसा नामक क्षेत्र में है। इस आश्रम की स्थापना 1936 में एक संत श्री नारायण

स्वामी जी ने की थी। स्थानीय लोग इसे बंगबाबा या चौदास भी कहते हैं। यहां आश्रम से कुछ दूरी पर धौली गंगा और कालीगंगा नदियों का संगम स्थल है।

आश्रम सदस्यों के लिए विभिन्न सामाजिक–आध्यात्मिक गतिविधियों का नियमित संचालन करता है। पर्यटक भी ऐसे कार्यक्रमों में शामिल होते हैं। यहां अधिकतम 40 श्रद्धालु पर्यटकों के ठहरने के लिए भी व्यवस्था की गई है। सर्दियों के दौरान भारी हिमपात के कारण आश्रम बंद रहता है। आस्था न भी हो, तब भी यहां की प्राकृतिक सुंदरता का लुत्फ़ उठाने के लिए जरूर जाएं

काली नदी

काली नदी 3,600 मीटर की ऊंचाई पर ग्रेटर हिमालय में स्थित कालापानी ग्लेशियर से निकलती है। इस नदी को महाकाली या शारदा नदी के नाम से भी जाना जाता है। भारत–तिब्बत सीमा पर लिपु–लेख पास के निकट कालापानी में श्री मां काली का एक भव्य मंदिर है। मां काली के नाम पर ही नदी का नाम काली नदी रखा गया है। अपने ऊपरी जलमार्ग पर, यह नदी नेपाल के साथ भारत की पूर्वी सीमा बनाती है।

यहां आकर आप अपनी सारी चिंताएं भूल जाएंगे। इसके अलावा, काली नदी में राफ्टिंग का आनंद लिया जा सकता है। इस नदी पर चिरकिला बांध बना हुआ है। यहां अब एक खूबसूरत झील और सुंदर पिकनिक स्पॉट बनाया गया है।

चिरकिला डैम : उत्तराखंड नदियों और पहाड़ों की भूमि है अतः यहां जल–विद्युत उत्पादन की अच्छी संभावनाएं हैं। ऐसी ही पहल करते हुए धारचुला से 20 कि.मी. दूर चिरकिला में काली नदी पर 1500 किलोवाट बिजली उत्पादन की क्षमता के चिरकिला बांध का निर्माण किया गया है। बांध एक कि.मी. तक फैली एक खूबसूरत झील से घिरा हुआ है। उत्तराखंड सरकार ने पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए यहां पानी के खेल शुरू किए हैं। पर्यटक यहां आकर इस खूबसूरत झील का आनंद लेते हुए जिंदगी का एक अनोखा अनुभव ले सकते हैं।

जौल्जिबी

यहां गोरी और काली नदी का संगम स्थल है। यह कस्बा अपने वार्षिक व्यापार मेले के लिए प्रसिद्ध है, हर साल नवंबर के महीने में लगने वाला मेला "जौल्जिबी मेला" के नाम से लोकप्रिय है।

जौल्जिबी काली और धौली नदियों के संगम पर स्थित भारत–नेपाल सीमा का छोटा बाजार है। यह नाम नदी के दोनों किनारों पर बने बाज़ारों को संदर्भित करता है, जिसमें नेपाल की ओर का बाजार भारत की ओर के बाजार की तुलना में अपेक्षाकृत छोटा है। काली नदी पर बना झुलापुल कई सालों से दोनों देशों के लोगों को जोड़ रहा है।

कुछ लोग बताते हैं कि राजशाही के समय में और उसके बाद भी कई साल तक जौल्जिबी मेले के दौरान ही थल सेना के लिए भर्तियां भी की जाती थी, जिससे भी बहुत अधिक भीड़ हुआ करती थी। उत्तराखण्ड बनने के बाद अब इस ऐतिहासिक मेले का पूरे सप्ताह के लिए आयोजन राज्य सरकार

द्वारा किया जाता है। परन्तु व्यापारिक गतिविधियां पूरे 10 दिनों तक चलती रहती हैं। राजकीय मान्यता प्राप्त इस व्यापार मेले में पड़ोसी गांवों तथा जिलों से तो हजारों लोग पहुंचते ही हैंए साथ ही उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और नेपाल के व्यापारी भी भाग लेते हैं।

अस्कोट कस्तूरीमृग अभयारण्य

प्रकृति प्रेमियों के लिए यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है। कुमाऊं क्षेत्र में वर्ष 1986 में बना यह अभयारण्य समुद्र तल से 5412 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इस अभयारण्य में आप अनेक प्रकार के फूल–पौधे और पशु–पक्षी देख सकते हैं। धारचुला आकर यहां जाना न भूलें।

पिथौरागढ़ से 54 कि.मी. दूर स्थित अस्कोट कस्तूरीमृग अभयारण्य एक लोकप्रिय पर्यटक स्थल है। अस्कोट कस्तूरीमृग अभयारण्य की स्थापना कस्तूरीमृग के संरक्षण के लिए की गई थी। कस्तूरीमृग के अलावा भी इस पार्क में अन्य वन्यजीव जैसे तेंदुआ, जंगली बिल्ली, ऊदबिलाव,कांकड़ (हिरण की एक प्रजाति), छोटे सींगों वाला बारहसिंगा, गोराल (घूमे हुए सींगों वाले बारहसिंगे), सफेद भालू, चीते, कस्तूरी मृग, काले भालू और भरल यानि मेंढा आदि देखने को मिलते हैं। इस अभ्यारण्य में बर्फ में पाया जाने वाले मुर्गा, तीतर तथा यूरोपियन तीतर सहित कई पक्षी देखे जा सकते हैं। अभयारण्य के बाहर कई मंदिर हैं।

यहां पहुंचने में तीन से साढ़े तीन घंटे की यात्रा करनी होती है। परिवहन के उपलब्ध साधनों में निजी जीप और राज्य सरकार की बसें ही हैं।सड़कें अच्छी है और रास्ते में कई अच्छे ढाबे हैं।फिर भी, बरसात के मौसम में भूस्खलन यात्रा थोड़ा खतरनाक और असुविधाजनक हो जाती है।

'ऊं' पर्बत

ऊं एक पवित्र शब्द है और हिंदू, बौद्ध तथा जैन धर्मावलम्बियों में इस शिखर का विशेष धार्मिक महत्व है। ओम पर्वत को आदि कैलाश, छोटा कैलाश या जोन्गलिन्ग कोन्ग भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत श्रृंखला में यह एक प्राचीन पर्वत है।

पुराणों के अनुसार माना जाता है कि पृथ्वी पर आठ पर्वतों पर प्राकृतिक रूप से 'ऊ' अंकित हैं जिनमें से अभी तक एक को ही खोजा जा सका है। यह स्थान भारत – तिब्बत सीमा के पास में है। यहां से प्रकृति के शानदार दृश्य देखे जा सकते हैं। 6,190 मीटर की ऊंचाई पर स्थित आदि कैलाश या छोटा कैलाश शिखर भारतीय हिमालयी क्षेत्र में दुर्गम चोटियों में से एक है। आदि कैलाश की यात्रा कई जनजातीय गांवों से घिरी एक हरिभरी समृद्ध घाटी के बीच से होकर जाती है। रास्ते की विभिन्न ऊंचाईयों पर वनस्पतियों और जीवों को देखा जा सकता है।

'ऊं पर्वत' तिब्बत के रास्ते पर 'लिपुलेख पास' क्षेत्र में नवीधांग गांव के पास है। कहा जाता है कि भारी हिमपात के बाद जब बर्फ पिघलती है तो पर्वत पर "ऊं" जैसी आकृति बनती है जो बहुत दिनों तक रहती है। यह तेजस्वी शब्द दूर से भी स्पष्ट दिखाई देता है। इसी कारण इस स्थान का नाम ओम पर्वत पड़ा। हालांकि कुछ लोग, जो कैलाश–मानसरोवर नहीं जा सके हैं, इसे ही कैलाश पर्वत समझते हैं। जबकि यह तिब्बत के कैलाश से एकदम अलग है। ऊं पर्वत के पास में ही पार्वती झील है।

ओम पर्वत अथवा आदि कैलाश जाने के लिए धारचूला से सूमो और मैक्स गाड़ियां मिलती है। इनके अलावा यदि आपका मन खच्चर पर बैठकरजाने का हो तो वह भी यहीं से मिलते हैं। सड़क पक्की मगर कुछ जगह कच्ची है। यहां ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। राज्य सरकार के आंकड़ों के अनुसार यहां लगभग 5000 घरेलु तथा 100 विदेशी पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं।

आदि कैलाश की यात्रा धारचुला से शुरू होती है। यात्रियों को पहले गूंजी पहुचना पड़ता हैं। उसके बाद मार्ग सिरखा की ओर जाता है, यहां पेंगु से लगभग आठ कि.मी. पैदल का रास्ता है। उसके बाद वापस गूंजी आकर, आदि कैलाश की ओर प्रस्थान करते हैं। ओम पर्वत की इस यात्रा के दौरान हिमालय के बहुत से प्रसिद्ध शिखरों के दर्शन होते हैं।

पर्यटक इस स्थान से अन्नपूर्णा की विशाल चोटियों को भी देख सकते हैं। आदि कैलाश जाते समय रास्ते में घने जंगलों के साथ दूर से काली नदी और नारायण आश्रम का सुन्दर दृश्य भी देख सकते हैं। यहां पड़ने वाले गौरी कुंड की भी अपनी एक अलग ही विशेषता है बताया जाता है कि अगर कोई इस कुंड को देखे तो उस व्यक्ति को उसमें विशाल हिमालय नज़र आता है दूसरे शब्दों में हिमालय का पूरा प्रतिबिम्ब इसमें देखा जा सकता है।

यहां पार्वती झील है। जिसमें कभी–कभी हंस पक्षियों को भी देखा जा सकता है। यहां से थोड़ी दूरी एक शुष्क झील के अवशेष पाए जाते हैं। कुट्टी नदी के साथ दो पास – लैंपिया धुरा और मंगसा धुरा – तिब्बत की ओर चले जाते हैं।

आपकी शारीरिक फिटनेस के आधार पर आदि कैलाश की पैदलयात्रा (ट्रैकिंग) में आने जाने में लगभग 20 दिनों का समय लग सकता है। भारतीय हिमालयी बेल्ट में कठिन ट्रेक एक होने के कारण सलाह दी जाती है कि यहां आने से पहले कम से कम दो ट्रेकिंग का अनुभव होना चाहिए। आदि कैलाश के लिए ट्रैकिंग पर जाने का सबसे अच्छा समय गर्मियों या शरद ऋतु का मौसम होता है। अगर आप रोमांच के इच्छुक हैं तो आप यहां आकर ट्रेकिंग का आनंद ले सकते हैं। पहाड़ियों का भी आनंद ले सकते हैं जो बहुत सुन्दर है कहा जाता है की जब इस बर्फ पर धूप पड़ती है तो इसकी सुन्दरता किसी का भी मन मोह सकती है।

भारत-चीन सीमा पर अंतिम गांव : कुटी

उच्च हिमालयी क्षेत्र में भारत–चीन सीमा पर स्थित अंतिम भारतीय गांव कुटी है। इसका इतिहास द्वापर युग के पांडवों से जुड़ा है। उल्लेख मिलता है कि जब पांडव स्वर्गारोहण के लिए जा रहे थे तब यह स्थान पांडवों की माता कुंती को बहुत पसंद आया था। इसीलिए वह इस गांव में काफी समय तक रहे थे। कालांतर में कुंती के नाम से इस गांव का नाम कुटी पड़ गया।

उनके प्रवास के अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। यहां पर पांडवों ने जिस स्थान पर अपना निवास बनाया वह समतल मैदान से लगभग पांच मीटर ऊंचा है। इस स्थान पर पांडवों के बैठने के लिए रखे गए पत्थर आज भी मौजूद हैं। यहां एक पांडव पर्वत हैं जिसकी पांच चोटियां हैं तथा इन्हें पांच पांडवों का प्रतीक माना जाता है। पांडवों के आवास को आज हम खर नाम से जानते हैं। पांडव निवास के अवशेष अभी भी देख सकते हैं। खर के निकट स्थानीय नामछका (नमक की खान) है। इसके कुछ दूर शालीमार है जहां छोटे–छोटे पत्थरों की खान है। इन पत्थरों को निकालने पर विभिन्न आकृतियों के पत्थर निकलते हैं। लोग इन्हें श्रद्धा से ले जाते हैं।

समुद्रतल से 11500 फीट की ऊंचाई पर स्थित कुटी गांव तिब्बत (चीन) सीमा पर भारत का अंतिम गांव है। इस गांव के निकट कभी निखुर्च मंडी होती थी। वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध से पूर्व इस मंडी में भारत–तिब्बत व्यापार होता था और इसी मंडी से तिब्बत जाने का मार्ग था। कैलास मानसरोवर जाने वाले इस मार्ग से भी जाते थे। 1962 के युद्ध के बाद यह मंडी भी समाप्त हो गई और तिब्बत में प्रवेश वर्जित हो गया। कुटी गांव यांगती (नदी) के तट पर आदि कैलास मार्ग पर है। इतनी ऊंचाई पर बसे इस गांव में समतल मैदान भी है। इसके पास में ही है आदि कैलास।

आम तौर पर कुटी के लिए जाने वाले लोगों में ट्रेकर्स, पर्वतारोही, रोमांच पसंद पर्यटक और कुछ प्रकृति प्रेमी होते हैं जिनके लिए यह क्षेत्र किसी सपने से कम नहीं है। नीले आकाश के नीचे ऊंची चोटियों से घिरी हरियाली के विस्मयकारी दृश्य आपको स्तब्ध कर देंगे। असली सुंदरता इस स्थान और इसके लोगों में निहित है। यहां की मुख्य निवासी भोटिया जनजाति हैं। इन जनजातियों ने अपनी समृद्ध विरासत को खूबसूरती से संभाला हुआ है। जब आप इनके साथ बैठते हैं और इन लोगों के साथ इनके खाने का स्वाद लेते हैं तो आपकी यात्रा और अधिक आनंदमय हो जाती है।

कुटी घाटी में ठहरें...

घनघोर आवाजें करते रमणीय झरने, वनस्पतियां और वन्यजीवों का उत्कृष्ट स्थल होने के नाते कुटी में ज्यादा आवास नहीं हैं। बस बुनियादी सुविधाओं वाले चार–पांच लॉज उपलब्ध हैं। दो तीन दिन के लिए एक घर भी किराए पर ले सकते हैं। इस सुंदर गांव में आप किसी घर में होम स्टे करके उनकी समृद्ध संस्कृति का अनुभव कर सकते हैं।

सामरिक और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हिमालयी व्यास घाटी में चीन की सीमा के निकट गुंजी से कुटी होते हुए तक सड़क ऊँ पर्वत का निर्माण पूरा हो चुका है। आज सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित कुटी गांव तक पक्की सड़क है। यह सड़क कुटी गांव होते हुए आदि कैलास के निकट तक बन चुकी है।

दो वर्ष पहले ही सीमा सड़क संगठन की हीरक परियोजना के तहत ग्रेफ की निगरानी में इस संगठन की टीम ने बहुत कम समय में कठोर पहाड़ को काट कर गांव तक सड़क बनाई है। अब सड़क बनने से पर्यटक तथा श्रृद्धालु भक्त ऊं पर्वत के दर्शन हेतु वाहन से पहुंच सकते हैं।

उच्च हिमालय में छियालेख से नाबीढांग तक सड़क तैयार है। गर्बाधार से चीन सीमा लिपूलेख तक उच्च हिमालय के प्रवेश द्वार छियालेख के समीप चम्पू नाला पर मोटर पुल है। कुटी के निकट गम्फू नाले पर भी पुल का काम पूरा होने को है।

कहां ठहरें :

धारचुला कैलाश मानसरोवर यात्रा और आदी कैलाश यात्रा के लिए आधार शिविर है। इसे देखते हुए सरकार की ओर से यहां कुमाऊं मंडल विकास निगम के गेस्ट हाउस हैं। इसके अलावा होम स्टे की सुविधाएं भी उपलब्ध है। फिलहाल यहां लगभग 15 साधारण होटल उपलब्ध हैं।

कब जाएं?

वैसे तो कभी भी धारचुला के घाटियों में जा सकते हैं, लेकिन सबसे अच्छा समय मार्च से जून या फिर सितंबर से दिसंबर के बीच होता है। इस दौरान यहां मौसम काफी सुहाना रहता है यानि न तो ज़्यादा गर्मी पड़ती है और न ही अधिक सर्दी।

कैसे पहुंचे?

हवाई मार्ग : सबसे निकट नैनी सैनी हवाई अड्डा, पिथौरागढ़ है। यहां से धारचुला के लिए टैक्सी या सरकारी बसें उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग : नई दिल्ली से कई कुमाऊं क्षेत्रों के लिए सीधी बसें उपलब्ध हैं। यदि आप कम खर्च करना चाहते हैं तो सार्वजनिक परिवहन आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

अंत में ...

यूं तो इंसानों ने हर जगह सरहदें बना दी हैं, पर धारचुला में आपको नेपाल के साथ दोस्ताना रिश्तों की अनोखी झलक दिखेगी।

धारचुला जाने का सबसे अच्छा समय मार्च और जून के महीनों के बीच और फिर सितंबर और दिसंबर के बीच है। ग्रीष्म ऋतु सुखद होते हैं। जब यहां काफी ठंडक होती है। इस दौरान यहां का मौसम सुहावना आरामदायक रहता है। धारचुला की सैर की इच्छा रखने वाले पर्यटक यहां सर्दियों के दौरान भी घूमने आते हैं क्योंकि इस दौरान यहां अच्छा हिमपात होता है। हमारी मानिए और इस बार धारचुला का प्रोग्राम बना लीजिए।

कविता

मेरी कलम

– डॉ. विश्वरंजन

होगी जब जब चुभन तो कलम, मेरी आवाज लिखेगी।
हर शब्दों में मेरे जज्बात लिखेगी।
अमृत की एहसास दिखेगी।
मेरी कलम हर वह बात लिखेगी।
रूह में हो सनसनाहट तो रुककर अपनी आवाज सुनो।
हर आवाज में करुणा की धार बहेगी।
निर्मलता की बात कहेगी।
जी होगी जब चुभन तो मेरी कलम मेरी आवाज लिखेगी।
जब मिले कोई धारा, यह अविरलता की बात कहेगी।
तो मन में है, मेरे हर कण में है, उस क्षण में है।
जिसमें तरलता के अहो भाव दिखेगी।
साथ देना,हिम्मत देना तेज धार में, न छोड़ना मझधार में।
होगी जब फतह, यह दुनिया गुणगान करेगी।।

अमृत की बरसात

है मुझ में एहसास तुम्हारे पास होने का।
एहसास है ख्वाबों में बात होने का।
अमृत की हुई बरसात, उसकी लहरों में बह जाने का।
करो जो गुजारिश सांसों से,
मुझे बहती धार में अविरल करा दे।
किससे कहूं जी हां किससे कहूं, वे सिरमौर है मेरे।
क्योंकि उनकी निर्मलता इबादत है मेरी।

*कन्सल्टेंट
पेय जल एवं स्वच्छता मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली
मो. : 9852583535
ई–मेल : vishwranjan@yahoo.com

बिहार

अनजाने पर्यटन स्थल : आरा

– राजेश सिंह

बिहार की राजधानी पटना से करीब 50 कि.मी. पश्चिम में स्थित आरा, भोजपुर जिले का मुख्यालय है। इसका अपना एक गौरवशाली अतीत है और इसमें कई ऐतिहासिक स्थल और मंदिर हैं। यह जिला 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में से एक वीर कुंवर सिंह के सहयोग के लिए भी प्रसिद्ध है। आरा का प्राचीन नाम आराम नगर भी था।

अरण्य देवी मंदिर यह आरा में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है। लोगों का विश्वास है कि अरण्य देवी यानी कि वन देवी सुख समृद्धि की वर्षा करती है।

इस मंदिर में स्थापित बड़ी प्रतिमा को सरस्वती का स्वरूप माना जाता है, वहीं छोटी प्रतिमा को महालक्ष्मी का रूप माना जाता है। इस मंदिर में वर्ष 1953 में श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, भरत, शत्रुघन व हनुमान जी के अलावा अन्य देवी–देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित की गयी थी।

*पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

लेकिन वीर कुंवर सिंह विवि के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डा.विक्रमादित्य सिंह लिखते हैं कि पुराणों में लिखित मयूरध्वज की कथा से इस नगर का सीधा संबंध है। राजा मयूरध्वज ने भक्ति की परीक्षा देने के लिए अपने पुत्र को लकड़ी चीरने वाले आरा से काट दिया था। भगवान के प्रकट होने के बाद जब मयूरध्वज का बेटा जिंदा हुआ तो इस नगर का नाम आरा रखा गया। इस संदर्भ में सुधि पाठकों के लिए एक पौराणिक कथा का उल्लेख करना समीचीन होगा जो इस प्रकार है :

द्वापर युग में मयूरध्वज रत्नपुर के राजा थे। इनकी धर्मशीलता, प्रजा प्रेम और भगवान के प्रति भक्ति की कीर्ति अतुलनीय थी। वह अक्सर बड़े यज्ञ करते रहते थे। एक कथा के अनुसार, एक बार उन्होंने अश्वमेध यज्ञ करने हेतु एक घोड़ा छोड़ा हुआ था और उसकी रक्षा के लिए इनके वीर पुत्र ताम्रध्वज कुछ सैनिकों के साथ थे। उधर इन्हीं दिनों धर्मराज युधिष्ठिर ने भी अश्वमेध यज्ञ करने का विचार कर एक घोड़ा छोड़ा रखा था जिसकी रक्षा के लिए अर्जुन और उनके सारथि के रूप में श्रीकृष्ण साथ थे। अरण्य वन में दोनों का सामना हुआ। अनेक वीरों पर विजय प्राप्ति के कारण अर्जुन के मन में वीरता का गर्व था। अर्जुन का गर्व दूर करने और भक्त की महिमा दिखाने करने के लिये श्रीकृष्णजी ने एक अद्भुत लीला रची और युद्ध में श्रीकृष्ण तथा अर्जुन दोनों को मूर्छित करके ताम्रध्वज दोनों घोड़ों को ले गया। पुत्र की विजय के बारे में पूछने पर मन्त्री ने बड़ी प्रसन्नता से पूरा

वृतांत सुनाया। लेकिन सब कुछ सुन लेने के पश्चात मयूरध्वज ने खेद प्रकट करते हुए कहा– "तुमने बुद्धि मानी का काम नहीं किया। श्रीकृष्ण को छोड़कर घोड़े को पकड़ लेना या यज्ञ पूरा करना अपना उद्देश्य नहीं है। भगवान के दर्शन पाकर भी उन्हें छोड़ आए।" राजा बहुत दुःखी हुए।

इधर जब अर्जुन की मूर्छा टूटी, तो उन्होंने श्रीकृष्ण से घोड़े के लिये बड़ी व्यग्रता प्रकट की। भक्ति की महिमा दिखाने के लिये श्रीकृष्ण ने स्वयं ब्राह्मण वेश धारण किया और अर्जुन को अपना शिष्य तथा यमराज को सिंह बनाकर मयूरध्वज की यज्ञशाला में आ गए। इनके तेज को देखकर राजा ने आसन से उठकर ब्राह्मणों को प्रणाम किया और योग्य सेवा हेतु निवेदन किया। ब्राह्मणरूपी श्री कृष्ण ने राजा से कहा कि चारों ओर उनकी कीर्ति है उनके दान की बहुत प्रशंसा सुनी है कि कोई भी याचक उनके द्वार से खाली हाथ नहीं जाता है।

राजा ने ब्राह्मण से कहा कि यह शायद यह नारायण की ही कृपा है कि मैं किसी के काम आ सका। साथ ही, यह विनती की कि ऐसी कोई वस्तु नहीं मांगें जो उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो।

ब्राह्मण ने राजा से कहा, "हम तीन प्राणी बहुत लंबे समय से यात्रा कर रहे हैं। हम दोनों तो कंदमूल खाकर अपनी भूख शांत कर लेते हैं। परंतु यह सिंहराज तो केवल मनुष्य के मांस का भक्षण करते हैं।"

राजा ने ब्राह्मण से कहा, ''मैं सिंहराज के समक्ष प्रस्तुत हूं यदि वह मेरा भक्षण करेंगे तो मैं स्वयं को धन्य समझूंगा।" इस पर ब्राह्मण ने कहा कि पृथ्वी पर स्वयं को दान करने वालों की कमी नहीं है। यदि तुम जैसे वृद्ध का भोजन करते तो हमें आपके पास आने की आवश्यकता नहीं थी। राजा के यह पूछने पर कि वही बताएं कि कैसे सिहंराज की क्षुधा शान्त हो, ब्राह्मण ने राजा से कहा कि इनके भोजन हेतु आप सपत्नीक आरा लेकर अपने युवा पुत्र को चीर कर उसका दायां अंग दें ताकि सिंहराज भोजन कर सकें।

ब्राह्मण की बात सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए। श्रीकृष्ण की बात से स्वयं अर्जुन भी भयभीत हो गए। एक क्षण के लिए राजा मयूरध्वज भी डगमगा गए, परंतु समझ गए कि यह कोई साधारण ब्राह्मण नहीं है।

राजा ने कहा कि उनका पुत्र ताम्रध्वज धन्य है, जिसे आपने सिंहराज के आहार के लिए चुना है। ब्राह्मण ने चेतावनी दी कि पुत्र को काटते समय यदि माता पिता की आंखों में आंसू आए तो सिंह भोजन ग्रहण नहीं करेगा।

इसके बाद राजा ने आरा उठाया और अपने इकलौते पुत्र के सिर पर रख कर भगवान का स्मरण करते हुए अपने पुत्र को चीर दिया और ब्राह्मण से कहा कि वह सिंह को भोजन करवाएं। सिंहराज ने आगे बढ़कर ताम्रध्वज के शरीर का दायां भाग खाना शुरू किया। तभी ताम्रध्वज की माता विद्याचारिणी की आंखों से आंसू टपक पड़े। ब्राह्मण ने महारानी से पूछा कि यह आंसू किस लिए ? तब रानी ने कहा कि ताम्रध्वज के दाहिने अंग को तो आपने स्वीकार कर लिया परन्तु उसका बायां अंग किसी के काम न आया, इसी कारण मेरे आंसू निकल पड़े थे।

समर्पण की ऐसी भावना देखकर अर्जुन आश्चर्यचकित रह गए। ऐसा भक्तिभाव अर्जुन ने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था। इस दृश्य को देख अर्जुन का घमंड चूर चूर हो गया। तभी ब्राह्मण ने राजा से कहा कि अपनी दाहिनी तरफ देखें आपके अलौकिक कार्य का फल मिल चुका है। जैसे ही राजा

ने अपनी दाहिनी तरफ देखा ताम्रध्वज जीवित खड़ा था। माता पिता ने अपने पुत्र को गले से लगा लिया।

राजा मयूरध्वज ने अनुनय पूर्वक ब्राह्मण से पूछा कि आप कौन हैं प्रकट होइए और बताने की कृपा करें कि किस कारण आपने मेरी इतनी कठिन परीक्षा ली?

उनकी इस बात पर मयूरमुकुटी, गदाधारी, चतुर्भुज, पीताम्बर पहने हुए अपने रूप में प्रकट हुए और ताम्रध्वज के सिर पर हाथ रखा। उनका स्पर्श पाते ही ताम्रध्वज का शरीर पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर एवं बलिष्ठ हो गया। राजा मयूरध्वज, उनकी पत्नी और पुत्र श्रीप्रभु के चरणों पर गिरकर स्तुति करने लगे। श्री कृष्ण ने उन्हें वर मांगने को कहा। उन्होंने भगवान के चरणों में अविचल प्रेम रहने के साथ ही वरदान मांगा कि वह आगे से अपने किसी भक्त की ऐसी कठिन परीक्षा न लें। श्री कृष्ण ने राजा मयूरध्वज से कहा कि तुम्हारे पुत्र को बैकुंठ में स्थान मिलेगा। दान से ईश्वर अति प्रसन्न होते हैं और वह कभी अपने भक्तों का अहित नहीं करते हैं।

भगवान ने कठोरता का लांछन लेकर भी अपने भक्त की महिमा बढ़ाई। अर्जुन भी सब लीला देख रहे थे। उन्होंने मयूरध्वज के चरणों पर गिरकर अपने गर्व की बात स्वीकार की और भक्तवत्सल की इस लीला का रहस्य अपने गर्व को दूर करना बतलाया। अंत में तीन दिनों तक उनका आतिथ्य स्वीकार करने के पश्चात घोड़ा लेकर वे दोनों चले गए।

इस कारण से भी नगर का नाम आरा हुआ है। आरा के संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि यहां पहले काफी अरण्य (जंगल) हुआ करते थे, जिसकी वजह से धीरे धीरे अरण्य से इस शहर का नाम आरा होता गया। वहीं आरा में मां अरण्य देवी का मंदिर भी है जिसके कारण ऐसी मान्यता है कि आरा का नाम उनके नाम पर रखा गया। आज भी इस इतिहास को वहां के अधितर लोग आज भी गर्व से बताते हैं।

प्राचीन ग्रंथों के अनुसार

महाभारत और रामायण के अनुसार आरा का प्राचीन नाम आराम नगर था। संस्कृत, प्राकृत तथा पालि में आराम शब्द का अर्थ वाटिका यानि बगीचा होता है। ऐसा माना जाता है कि वनों, उपवनों के इस मनोरम क्षेत्र में आस पास के राजा आराम करने के लिए आते थे।

रामायण में उल्लेख मिलता है कि अयोध्या के राजा दशरथ ने अपने प्रिय राजकुमारों को शिक्षा लेने के लिए इसी पथ से महर्षि विश्वामित्र के पास भेजा था। जब युवराज सीता स्वयंबर में भाग लेने हेतु मिथिलापुरी जाने लगे तो करूषदेश (वर्तमान में कारीसाथ) से होते हुए, वैशाली का सौन्दर्य निहारते हुए आगे बढ़े थे। इसे भगवान राम के जनकपुर गमन के प्रसंग से भी जोड़ा जाता है। यह भी कहा जाता है कि भगवान राम, लक्ष्मण और विश्वमित्र जब बक्सर से जनकपुर धनुष यज्ञ के लिए जा रहे थे तो अरण्य देवी की पूजा–अर्चना करने के पश्चात ही उन्होंने सोनभद्र नदी को पार किया था।

इसका नगर का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। यह 'अरण्य क्षेत्र' के नाम से भी जाना जाता था। कहा जाता है कि पांडव वनवास के क्रम में आरा में भी ठहरे थे। देवी मां ने युधिष्ठिर को स्वप्न में संकेत दिया कि वह अरण्य देवी की प्रतिमा स्थापित करें। तब धर्मराज युधिष्ठिर ने मां अरण्य देवी की प्रतिमा स्थापित की और पांडवों ने यहां आदिशक्ति की पूजा–अर्चना की थी।

वहीं पकड़ी मुहल्ले के बारे में कहा जाता है कि

पाण्डवों ने अज्ञात वास के दौरान बाकासुर का वध किया था। उस जगह पर बाकासुर के पिंडी पर आज भी कुछ वर्गों द्वारा विधि विधान से पूजा की जाती है। आज भी इस क्षेत्र में महाभारत कालीन अवशेष देखे जा सकते हैं।

जनरल कनिंघम के अनुसार, युवानच्वांग द्वारा उल्लिखित संदर्भो में, सम्राट अशोक ने इस क्षेत्र में कुछ स्थानीय जनजातियों के बौद्धधर्म स्वीकार करने के स्मारक स्वरूप एक बौद्ध स्तूप बनवाया था। आरा के निकट मसार गांव में मिले जैन अभिलेखों में इस नगर को "आरामनगर" के नाम से भी उल्लिखित किया गया है।

बुकानन ने इस नगर के नामकरण में भौगोलिक कारण बताते हुए कहा कि गंगा के दक्षिण ऊंचे स्थान पर आड़ या अरार में स्थित होने के कारण, इसका नाम "आरा" पड़ा।

इस नगर को 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख सेनानी बाबू कुंवर सिंह की कार्यस्थली होने का गौरव भी प्राप्त है। आरा स्थित 'द लिटल हाउस' एक ऐसा भवन है, जिसकी रक्षा अंग्रेज़ों ने 1857 के विद्रोह में बाबू कुंवर सिंह से लड़ते हुए की थी।

गिरीराज किशोर की किताब "पहला गिरमिटिया" में भी आरा के बारे में चर्चा है। किताब के अनुसार गिरमिटियों में से पहला शख्स जिसने विदेश की धरती पर कदम रखा था वो आरा का ही था। साथ हीं पहले आरा के बारे में 'आरा जिला घर बा त कवना बात के डर बा' जैसी बातें भी बोली जाती थी, जो लोगों के बीच काफी प्रसिद्ध थी। गाहे–बगाहे आज भी राज्य के बुजुर्ग लोग अन्यत्र स्थानों पर बिहारियों के सामने यही लोकोक्ति कहते हैं।

आरा में पर्यटन स्थल...

आरा के दर्शनीय पर्यटन स्थलों में अरण्य देवी, मढ़िया का राम मन्दिर प्रसिद्ध है। शहर में बुढ़वा महादेव, पातालेश्वर मंदिर, रमना मैदान का महावीर मंदिर, सिद्धनाथ मंदिर प्रमुख हैं।

अरण्य देवी का मंदिर : नगर के शीश महल चौक से उत्तर–पूर्वी छोर पर स्थित अरण्य देवी का मन्दिर है। यह देवी नगर की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। बताया जाता है कि उक्त स्थल पर प्राचीन काल में सिर्फ आदिशक्ति की प्रतिमा थी। इस मंदिर के चारों ओर वन था। विक्रमी संवत 2005 यानि 1949 में स्थापित इस मंदिर की वास्तुकला को संगमरमर में उकेरा गया है। मुख्य द्वार के ठीक सामने मां की भव्य प्रतिमा है। मंदिर तो बहुत पुराना नहीं लगता है पर यहां प्राचीन काल से पूजा का वर्णन मिलता है। इस मंदिर में छोटी प्रतिमा को महालक्ष्मी और बड़ी प्रतिमा को सरस्वती का रूप माना जाता है।

आरा रेलवे स्टेशन से उत्तर में शीश महल चौक से लगभग दो सौ मीटर उत्तर–पूर्व की ओर स्थित प्राचीन अरण्य देवी का मंदिर जाने के लिए आवागमन के साधन सुलभ हैं। मंदिर के आस–पास पूजा सामग्रियों की दुकानें सजी रहती है। वैसे तो यहां भक्तों की बराबर ही भीड़ लगी रहती है, लेकिन शारदीय व चैत्र नवरात्र पर भक्तगण विशेष पूजा अर्चना करने अथवा कराने के लिए आते हैं। दूसरे प्रदेशों से भी यहां काफी संख्या में भक्त आते हैं।

शारदीय नवरात्र की सप्तमी को भोर में चार बजे ही विशेष आरती की जाती है और विशेष प्रसाद की व्यवस्था रहती है। मंदिर की सजावट और मां का भव्य श्रृंगार करने के लिए कोलकाता से माली बुलाए जाते हैं। विशेष फूलों से पूरे मंदिर की सजावट की जाती है।

शहर में बड़ी मठिया नामक विशाल धार्मिक स्थान है। शहर के बीचोबीच स्थित बड़ी मठिया रामानंद सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र है। वाराणसी की तर्ज पर मानस मंदिर भी निर्माणाधीन है।

बुढ़वा महादेव

स्थानीय महादेव रोड के दक्षिण में स्थित है श्री श्री 108 बाबा जागेश्वर महादेव जी उर्फ बुढ़वा महादेव जी का मंदिर। यह मंदिर लगभग पांच सौ साल से भी अधिक पुराना है। यहां स्वयंभू शिवलिंग है। मंदिर में शिवलिंग के अलावा पूरब में नंदी और पश्चिम में गणेश व पार्वती की प्रतिमा है। शिवरात्रि व सावन माह में यहां श्रद्धालुओं की अधिक भीड़ होती है। महाशिवरात्रि के दिनों में इस मंदिर की साज सज्जा और रात के समय रोशनी देखने योग्य होती है।

पातालेश्वर मंदिर

प्रत्येक महाशिवरात्री के मौके पर पातालेश्वर मंदिर में पूजा अर्चना के बाद विशाल शिव बारात निकाले जाने की परंपरा है। शिव बारात में भूत,पिशाच, अघोर सहित विभिन्न भाव भंगिमा में भक्तगण शामिल होकर कई तरह की झांकी और बैंड–बाजों के साथ झूमते गाते पूरे शहर का भ्रमण करते हैं। यह बारात सुबह लगभग 10 बजे निकलती है और पूरे शहर का भ्रमण करते हुए शाम छः बजे वापस मन्दिर में पहुंचती है जहां भागीदारों के सम्मान समारोह के बाद इसका समापन हो जाता है।

आरा हाउस

यह एक विशाल और शानदार इमारत है जो महाराजा कॉलेज आरा के पास स्थित है तथा आरा रेलवे स्टेशन से दो कि.मी. दूर है। यह इमारत वीर कुंवर सिंह के घर के रूप में प्रसिद्ध है। बिहार का शेर के नाम से प्रसिद्ध, पूर्व जगदीशपुर जागीर के राजा, वीर कुंवर सिंह ने 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के साथ बहादुरी से युद्ध करते हुए 18 ब्रिटिश नागरिकों और ब्रिटेन के 50 हिन्दुस्तानी सैनिकों के एक समूह को आरा के लिटिल हाउस में कैद कर लिया था। उस समय उनके साथ ढाई–तीन हजार सशस्त्र सैनिक ही थे और लगभ आठ हजार ग्रामीण उनके साथ समर्थन में खड़े थे।

वीर कुंवर सिंह के युद्ध की प्रभावकारिता को देखें तो शिवाजी के बाद वह पहले भारतीय योद्धा थे जो अपने बुढ़ापे के बावजूद बहादुरी से लड़े इतना ही नहीं उन्होंने अपने गुरिल्ला युद्ध से ब्रिटिश सेनाओं को लगभग एक साल तक परेशान कर दिया।

महाराजा कॉलेज स्थित वीर कुंवर सिंह की इमारत के बंद गुफा द्वारों को आज भी देखा जा सकता है।

जगदीशपुर किला

राष्ट्रीय राजमार्ग–34 पर आरा से 15 कि.मी. दूर स्थित जगदीशपुर उप–मंडल शहर है जो वीर कुंवर सिंह का जन्म स्थान है। हर साल 24 अप्रैल को बिहार के अनेक सामाजिक संगठन वीर कुंवर सिंह की याद में 'विजयोत्सव' मनाने के लिए यहां आते हैं।

सूर्या मंदिर चंदवा

आरा शहर से दो कि.मी. पश्चिम में भारत के जाने माने राजनेता पूर्व उप प्रधान मंत्री बाबू जगजीवन राम का जन्म स्थान है। यहां महान नेता की 'समाधि' है। यहां एक विशाल सूर्या मंदिर है जहां प्रतिवर्ष एक बड़े मेले का आयोजन किया जाता है।

आरा के आसपास कई जैन मंदिर हैं। जेल रोड पर रेलवे स्टेशन से 2.5 कि.मी. दूर जैन संग्रहालय स्थित है। संग्रहालय में जैन साहित्यिक कृतियों का दुर्लभ संग्रह है जो देखने लायक हैं।

कैसे पहुंचा जाये

रेल मार्ग : पटना से ट्रेन द्वारा 50 कि.मी. आरा पटना–दिल्ली मुख्य रेल मार्ग पर स्थित है। लगभग हर मेल और एक्सप्रेस ट्रेन आरा रेलवे स्टेशन पर ठहरती है।

सड़क मार्ग : आरा पटना–बक्सर मुख्य सड़क पर स्थित है।आरा पहुंचने के लिए पटना से टैक्सी भी ली जा सकती है। स्थानीय परिवहन में टैक्सियां, बसें, ऑटो–रिक्शा, साइकिल–रिक्शा, घोड़ागाड़ी–तांगा आदि उपलब्ध हैं।

निकटतम हवाई अड्डा : जयप्रकाश नारायण अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, पटना यहां से 55 कि. मी. दूर है।

कहां ठहरें: आरा में कई अच्छे बजट होटल उपलब्ध हैं।

शुभकामनाएँ

इस तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी जनवरी–मार्च, 2019

क्र.सं.	नाम	पद	माह
1.	श्री करण सिंह	एम.टी.एस	जनवरी, 2019
2.	श्री एम.एम. सडाना	संयुक्त महानिदेशक	फरवरी, 2019
3.	श्री एम. थनियारासु	पर्यटक सूचना अधिकारी	फरवरी, 2019
4.	श्री रमेश चन्द्र	स्टाफ कार ड्राईवर	मार्च, 2019
5.	श्री द्वारका प्रसाद	एम.टी.एस	मार्च, 2019

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

पर्यटन सलाह

रायसेन का किला : स्थापत्यकला का बेजोड़ नमूना

– वीना सबलोक पाठक

भारत के हृदयस्थल मध्य प्रदेश के रायसेन में भारत की सांस्कृतिक विरासत का जीवंत उदाहरण एक भव्य ऐतिहासिक दुर्ग अपनी वास्तुकला,शिल्पकला और इतिहास से समृद्ध और संपन्न है। रायसेन का किला भारत के प्राचीन मंदिर, महल और तत्कालीन स्थापत्य कला का एक खूबसूरत बेजोड़ नमूना है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से लगभग 45 कि. मी. दूर रायसेन में स्थित इस विशाल और वैभवशाली किले की गिनती देश के महत्वपूर्ण किलों में की जाती रही है। विंध्य पर्वतमाला के उत्तरी खंड की 520 फीट ऊंची बलुआ पत्थर की पहाड़ी पर स्थित यह किला करीब 10 वर्ग कि.मी. के विशाल क्षेत्र में फैला है।

अनेक युद्धों तथा ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी रहे रायसेन के किले के निर्माण को लेकर अलग अलग मत दिए जाते रहे हैं। वर्ष 1932 में मिले एक शिलालेख से यह अनुमान लगाया जाता है कि इस किले का निर्माण दूसरी सदी में हुआ होगा। एक जनश्रुति के अनुसार यह किला गोंड राजा रायसिंह के द्वारा बनवाया गया था यही वजह है कि किले के समीप बसी बस्ती का नाम रायसेन पड़ा। रायसेन का इलाका उस समय के ताकतवर गोंडवाना राज्य का हिस्सा था। खुदाई से मिले अवशेष बताते है की पांचवी सदी के दौरान इस इलाके में घनी बस्ती रही होगी।

रायसेन के किले का सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण निर्माण, इसके आरम्भ से ही इतिहासकारों की जिज्ञासा का केंद्र बना रहा है। पुरातत्ववेत्ता आज तक इस किले का इतिहास नहीं बता पाए हैं क्योंकि कालिदास के एक ग्रंथ में भी यहां स्थित भव्य शिवमंदिर श्री सोमेश्वर धाम का उल्लेख मिलता हैं। कुछ इतिहासकार इसका निर्माणकाल एक हजार ई. पू. (BC) मानते हैं। तभी तो कभी इस पर राजाओं की नजर पड़ी और उन्होंने इस पर कब्ज़ा किया तो कभी इसने नवाबों को ललचाया। कहा जाता है कि रायसेन के किले पर 14 से भी अधिक बार आक्रमण हुए थे।

अपनी विरासत को जानने–समझने के लिए किसी किले की यात्रा को हम पर्यटन ही कहते हैं। इन किलों से ही हमें अपने देश प्रदेश के इतिहास के बारे मे जानकारियां मिलती हैं। आजकल कम ही लोग इन किलों में जाना पसंद करते हैं, जिससे हमें इनके महत्व का अहसास नहीं होता, लेकिन इनके निकट पहुंचने पर यह पर्यटकों को अपनी ओर खींचने लगते हैं। मध्य प्रदेश में भोपाल के पास स्थित रायसेन का किला हमारे इतिहास की झलक दिखाती विरासत है। ऐसा किला जिसका न केवल शानदार इतिहास है बल्कि इसकी सुन्दरता भी बेजोड़ है।

रायसेन का किला प्राचीन समृद्ध स्थापत्य और वास्तुकला की अनूठी मिसाल है। अबुल फजल के अनुसार किले की तलहटी के करीब पचास फ़ीट नीचे नगर बसा हुआ था। आज भी किले के चारों ओर बड़ी मजबूत चट्टानों की दीवारें है कभी इन दीवारों पर नौ दरवाजे बने थे जिनके चारों ओर तेरह बुर्ज थे। किले तक पहुंचने के लिए तीन द्वार बने थे जिनकी खासियत

*स्वतंत्र लेखिका, भोपाल

यह थी कि एक दरवाजे से अन्य दरवाजों को आसानी से देखा जा सकता था। उत्तरी दरवाजा "दिल्ली द्वार", दक्षिण दरवाजा "चोपड़ा द्वार" और पश्चिम में बने दरवाजे को "भोपाल द्वार" नाम दिया गया था। किले तक पहुंचने के लिए उत्तर और दक्षिण द्वार पर सीढियां बनाई गई थीं जबकि किले के "भोपाल द्वार" पर तेरह मजबूत चौकियां स्थापित की गई थीं जिन पर तोपें रखी थीं। आज भी यहां जीर्णशीर्ण अवस्था में रखी कुछ तोपें इस किले की समृद्धि की दस्तान बयां करती हैं। इनके ऊपर की ओर अरबी भाषा में लिखी जानकारी के अनुसार सन् 1742 के आसपास किसी तुर्की व्यक्ति के भोपाल स्थित कारखाने में इनका निर्माण किया गया था। जबकि एक अन्य तोप पर फैज मोहम्मद नाम लिखा है।

रायसेन के किले में मुख्य रूप से आठ हिस्से है इनमें बादल महल, राजा रोहिणी महल, धोबी महल, मंजरी महल, इत्रदान प्रमुख है। इसके अलावा किला परिसर में सोमेश्वर महादेव मंदिर, हवा महल, रानी महल, बारादरी, शीलादित्य की समाधी, कचहरी, मदागन तालाब है। सतिस्थल मंदिर सहित अन्य भवनों के भग्नावशेष भी इस किले की कहानी बताते प्रतीत होते हैं।

किले में बने इत्रदान को देख कर पुरातत्वेत्ता भी आश्चर्य में पड़ जाते हैं क्योंकि इसमें बने 500 खंडो में अलग अलग तरह के देशी विदेशी इत्र रखे जाते थे। इत्रदान के पूर्व में बने मंजरी महल को देख कर लगता है तीन मंजिलों और सात तल वाले इस महल में शासक रहते होंगे। मंजरी महल के उत्तर में रनिवास बना था। किले के बदल महल के बारे में अनुमान

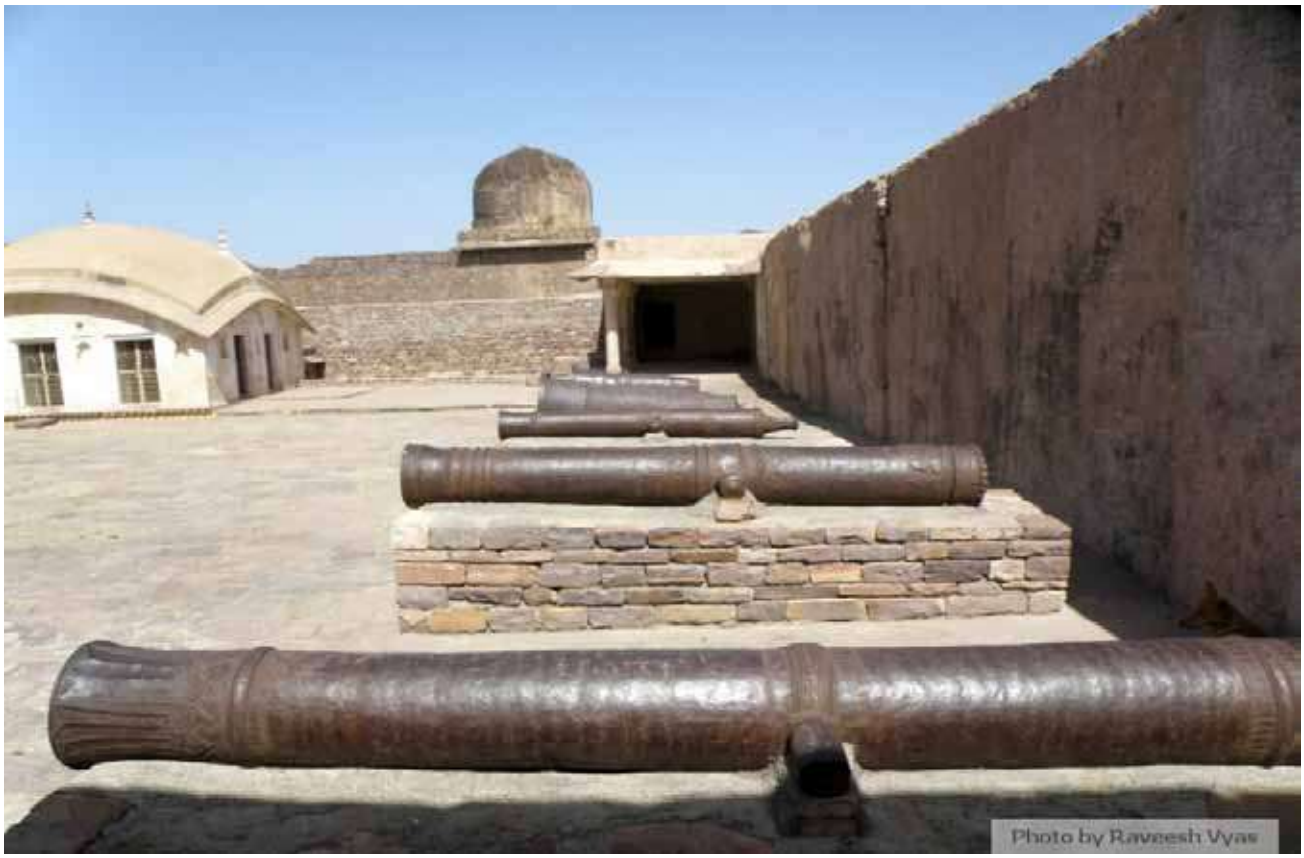

लगाया जाता है कि यहां राज्य के विशेष अधिकारियों के रहने की व्यवस्था रही होगी।

रायसेन के किला की चार दीवारी में वह सभी साधन और भवन हैं, जो अमूमन भारत के अन्य किलों में भी मौजूद होते हैं। लेकिन यहां कुछ खास भी है, जो अन्य किलों में नजर नहीं आता। वह है तत्कालीन समय का "वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम" और इत्र दान महल का ईको साउंड सिस्टम इसे अन्य किलों से तकनीकी मामलों में अलग करते हैं।

इसे देख कर हम जान सकते हैं कि किस तरह से वर्षा के पानी को इकट्ठा कर बाद में उसका उपयोग किया जाता होगा। लगभग दस वर्ग कि.मी. में फैले किले की पहाड़ी पर गिरने वाला बारिश का पानी भूमिगत नालियों के जरिए किला परिसर में बने तालाबनुमा एक कुंड में एकत्र होता था। आश्चर्यजनक बात यह है कि किले के परिसर में छोटे बड़े चार तालाब और 48 कुओं के साथ जल प्रबंध तथा संरक्षण का एक उत्तम तंत्र मौजूद था जिसे आज भी देखा जा सकता है। छोटी बड़ी ढेरों नालियां बनी है जो तत्कालीन जल संरक्षण व्यवस्था का एक अनूठा उदाहरण है। नालियां कहां से बनी हैं, उनमें पानी कहां से समा रहा है, कितनी नालियां हैं। यह सब आज तक कोई नहीं जान पाया। सदियों पुरानी इस "जल संरक्षण व्यवस्था" से तत्कालीन शासकों की दूर दृष्टि और ज्ञान का अंदाजा लगाया जा सकता है।

किले के भव्य द्वार

किले के दो भागों से किला परिसर में पहुँचने की व्यवस्था हैं। ऐसा लगता है कि उस काल में इन द्वारों पर सैनिकों की सख्त चाक–चौबंद व्यवस्था रहती थी। प्राचीन काल के इतिहास को समेटे हुए यह भव्य द्वार आज भी खड़े हुए हैं।

किले का सर्वाधिक आकर्षक हिस्सा है बारादरी जिसमें 12 दरवाजे बने हैं। आज भी यहां खड़े होकर देखने में पूरे भोपाल का अदभुत नज़ारा दिखाई देता है। कहा जात है कि यहां से विदिशा और सांची भी आसानी से दिखाई देते थे। फोटोग्राफर्स का तो यह पसंदीदा स्थान है क्योंकि बादलों के बीच किले के फोटो लेने के लिए अनेक बेहतर दृश्य होते हैं। रायसेन किले में शेरशाह द्वारा बनवाई एक मस्जिद है जिसकी तलहटी में मज़ार बनी हुई है।

धर्म के प्रति आस्था रखने वाले पर्यटकों के लिए भी रायसेन किले के ऐतिहासिक दुर्ग में पहाड़ी पर

प्राचीन शिव मंदिर, सोमेश्वर धाम

सोमेश्वर धाम महादेव का मंदिर साल में एक ही बार महाशिवरात्रि पर खोला जाता है। पुरातत्व विभाग के अधीन आने पर मंदिर को बंद कर दिया था। 1974 में नगर के लोगों ने एकजुट होकर मंदिर खोलने और यहां स्थित शिवलिंग की प्राणप्रतिष्ठा के लिए आंदोलन किया था। तब तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाशचंद्र सेठी ने महाशिवरात्रि के दिन स्वयं आकर शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा कराई। तब से ही रायसेन किले की इस ऐतिहासिक पहाड़ी पर स्थित सोमेश्वरधाम महादेव के ताले वर्ष में एक बार श्रद्धालुओं के लिए खोले जाते हैं और यहां विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि पर्व का परंपरागत तरीके से आयोजन किया जाता है। रात्रि से ही जागरण भजन मंडलियों के रहने खाने आदि की व्यवस्था की जाती है और प्रातः भोर में ही सोमेश्वर महादेव के शिवलिंग का विधि विधान से विशेष श्रृंगार कर अभिषेक कराया जाता है। वहां एकत्र होने वाली भीड़ को सम्भालने के लिए नगर सुरक्षा समिति तथा सोमेश्वरधाम मंदिर समिति के वालेंटियरों की भी मदद ली जाती है।

किले के अंदर बने विशाल शिवमंदिर का निर्माण भूरे पत्थर से किया गया था। सूरज की रोशनी पड़ते ही मंदिर में बनी शिवजी, गणेश जी और कार्तिकेय जी की मूर्तियां भी जगमगा उठती हैं। मंदिर के दोनों किनारों पर तलघर बने दिखाई देते हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि यहां से दूसरी पहाड़ियों में जाने के लिए यह सुरंगें बनाई गई थी।

विंध्य पर्वत श्रृंखला की तलहटी में बसा, रायसेन मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र का मध्यकालीन नगर है। मध्यकाल में रायसेन सिलहारी राजपूत सरदारों का मज़बूत गढ़ था। बाबर के समय यहां शिलादित्य का शासन था, जो ग्वालियर के विक्रमादित्य, चित्तौड़ के राणा सांगा, चंदेरी के मेदनी राय तथा अन्य राजपूत नरेशों के साथ खानवा के युद्ध में बाबर के विरुद्ध लड़े थे।

1543 ई. में रायसेन के दुर्ग पर शेरशाह ने अधिकार कर लिया था। लेकिन राजपूत शेरशाह के शत्रु बन गए थे और कालिंजर के युद्ध में उन्होंने शेरशाह को मार डाला था। मुग़लों के काल में रायसेन एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केन्द्र था। अकबर के शासनकाल में यह नगर उज्जैन के सूबे में शामिल 'सरकार' था।

यहां की वास्तुकला इतिहास का वर्णन करती

हैं। किले में स्थित इस मंदिर का मुख्यद्वार और मंदिर के अंदर की दीवारों की सुंदर शिल्पकला देखते ही बनती हैं। मंदिर का विशाल प्रांगण इसका साक्षी है कि प्राचीन काल में यहां पर बहुत अधिक संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होकर पूजा अर्चना करते रहे होंगे। आज भी यहां पर शिवरात्रि के दिन रायसेन जिले के साथ ही आसपास के जिलों एवं बाहर से भी श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित इस किले की इमारतों को देखने के लिए आपको पैदल ही चलना पड़ता है। ऊंची दीवारें और बुर्ज किले को और भी दिलचस्प बनाते हैं। इन दीवारों के नौ द्वार तथा तेरह बुर्ज हैं। इसलिए इस किले को जानने के लिए समय तो निकालना ही पड़ेगा।

इस किले पर शेरशाह सूरी ने भी शासन किया था। तारीख–ए–शेरशाही में उल्लेख मिलता है कि दिल्ली का शासक शेरशाह सूरी चार महीने की घेराबंदी के बाद भी किले को नहीं जीत पाया था। तब उसने तांबे के सिक्कों को गलवा कर यहीं पर तोपें बनवाईं और उसके बाद ही शेरशाह को किले में प्रवेश मिला और उसकी जीत हुई। लेकिन कुछ इतिहासकारों का कहना है कि शेरशाह ने दो पहरेदारों को मिला कर धोखे से रात में किले के द्वार खुलवा लिए थे।

1543 ई. में जब शेरशाह ने इस किले का घेरा डाला तब यहां राजा पूरनमल का शासन था। लेकिन जब राजा को धोखे का पता चला तो उसने स्वयं ही अपनी पत्नी रत्नावली का सिर काट दिया था ताकि वह शत्रुओं के हाथ न लगे।

इस किले की एक विशेषता तो यही है कि यह बलुआ पत्थर का बना हुआ है। इसके साथ ही इस किले की एक और दूसरी विशेषता है। रायसेन के किले के बारे में कहा जाता है कि यह प्रेतबाधित है। इस किले में पारस पत्थर है, जिसकी रखवाली जिन्न करते हैं।

क्या आप जानते हैं कि पारस पत्थर क्या होता है? जी हां, भारतीय पौराणिक ग्रन्थों तथा लोक कथाओं में पारस पत्थर का उल्लेख मिलता है। यह

प्रांगण सोमेश्वर धाम

एक ऐसा पत्थर माना गया है जिससे छूकर कोई भी चीज सोने की बन जाती थी। लेकिन अब वो पत्थर कहां है, इसको लेकर बड़ी–बड़ी खोजें चल रही हैं। ऐसा माना जाता है कि रायसेन के किले के राजा के पास भी एक पारस पत्थर था और उसी पारस पत्थर को लेने के लिए यहां पर कई युद्ध हुए। ऐसे ही एक युद्ध में राजा रायसेन हार गए। तब यह सोचकर कि वह पत्थर किसी गलत आदमी के हाथ में न चला जाए, उन्होंने वह पारस पत्थर किले के अंदर ही किसी तालाब में फेंक दिया था। युद्ध में राजा की मृत्यु हो गई। मरने से पहले उन्होंने पारस पत्थर के बारे में किसी को नहीं बताया। यहां के लोगों का विश्वास है कि इस समय कोई जिन्न उस पारस पत्थर की रक्षा कर रहा है।

कैसे पहुंचे :

वायुमार्ग : निकटम हवाई अड्डा भोपाल है। यहां से रायसेन की दूरी लगभग 48 कि.मी. है। यहां से रायसेन के किले के लिए टैक्सियां और बसें मिल जाती है।

रेलमार्ग : रायसेन जाने के लिए निकटम रेलवे स्टेशन विदिशा (22 कि.मी.), भोपाल (48 कि.मी.), हबीबगंज (39 कि.मी.) हैं। यह सभी स्टेशन देश के लगभग सभी बड़े रेलमार्गों से जुड़े हैं।

सड़क मार्ग : सड़क मार्ग से रायसेन जाना भी आसान है क्योंकि यह नगर राष्ट्रीय राजमार्ग–86 तथा राष्ट्रीय राजमार्ग –12 से जुड़ा है।

कहां ठहरें :

वैसे तो रायसेन में भी बजट होटल्स, अच्छे गैस्ट हाउस तथा दो सितारा होटल उपलब्ध हैं, फिर भी अधिकतर सैलानी भोपाल में रूकना ही पसंद करते हैं।

क़िले की दीवारों पर शिकार के दृश्य अंकित है। किले के आसपास के क्षेत्र में भी कई प्राचीन गुफाएं एवं भित्ति चित्र हैं जो हमारे देश के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति के बारे में बताते हैं।

शिवमंदिर मंदिर के पास मदागन ताल है जो की साल भर पानी से भरा रहता है। यह किले का सबसे विशाल ताल है। कहते हैं यह ताल बहुत ही गहरा हैं और इसके बीच में एक विशाल कुआं है।

यहां विलक्षण शैलचित्र भी मिले है। रायसेन दुर्ग पर स्थित यह शैलचित्र यहां की सभ्यता की ओर इंगित करते हैं। गौर से देखने पर इन शैलचित्रों में भगवान शिव की प्रतिमा, शेर का चित्र, घोड़े का चित्र, हाथी का चित्र आदि चित्र दिखाई देते हैं जैसे की यह चित्रकला पुरातन काल के किसी युद्ध का या फिर किसी अनजान बात का संकेत देती है।

किले की दीवारों पर अनेक शिलालेख मिले हैं जिनमें अधिकांश नागरी भाषा में है जबकि एक दो पर फ़ारसी भाषा में लिखा हुआ है। यहां जितने भी शासकों राजाओं या नवाबों ने शासन किया उनकी छाप कहीं न कहीं इस किले पर दिखाई देती है। अब न राजा रहे न रजवाड़े बचे परन्तु अनेक युद्धों का साक्षी रहा यह किला खड़ा है अपने समृद्ध अतीत की दस्तां बयां करता।

और भी बहुत कुछ हैं इस भव्य ऐतिहासिक किले पर एक बार अवश्य पधारें।

आंध्रप्रदेश

जाने अनजाने पर्यटन स्थल : चित्तूर

– अनिरूद्ध सिंह

वैसे तो हमारे देश में गणेश जी के कई रूप है और देश में ऐसे अनेक गणेश मंदिर हैं जो श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। लेकिन चित्तूर का विघ्नहर्ता कणिपक्कम गणपति मंदिर इन सबसे अलग है। यह मंदिर अन्य मंदिरों से अलग अपने आप में एक अनोखा धाम है। कहा जाता है यहां आने वाले हर भक्त के कष्टों को विघ्नविनाशक दूर कर देते हैं। खुद में आस्था और चमत्कार की ढेरों कहानियां समेटे कणिपक्कम विनायक का यह मंदिर आंध्रप्रदेश के रायलसीमा क्षेत्र के चित्तूर जिले में मौजूद है। इस मंदिर की प्रसिद्धी का एक कारण यह है कि यह विशाल मंदिर नदी के बीचों बीच स्थित है और दूसरे कि यहाँ स्थित गणपति की मूर्ति का आकार लगातार बढ़ रहा है।

चमत्कारिक कणिपक्कम गणपति मंदिर लगातार बढ़ा रहा है मूर्ति का आकार

*ब्लॉगर, अतुल्य भारत के लिए सहयोग

आस्था

आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि यहां के लोगों का विश्वास है कि इस मंदिर में स्थापित विनायक की मूर्ति का आकार धीरे धीरे बढ़ रहा है। जिसे 2002 में 3 फीट 5 इंच और 2006 में 3 फीट 10 इंच नापा गया था। कुछ बुजुर्गो के अनुसार प्रति माह इसका आकार एक सूत (1 सूत=3.17 मि.मी.)यानि 0.12480 इंच बढ़ रहा है। इस बात का प्रमाण उनका पेट और घुटना है, जो पहले की अपेक्षा बढ़े हैं। यह भी बताया गया कि लक्षम्मा नाम के किसी भक्त ने विनायक के लिए एक चोला (वस्त्र) कवच भेंट किया था, लेकिन प्रतिमा का आकार बढने़ की वजह से अब उसे पहनाना मुश्किल हो गया है।

चित्तूर आन्ध्र प्रदेश के बिल्कुल दक्षिण में है। इसके उत्तर में अनंतपुर और कड़प्पाह जिले हैं तो पूरब में बंगाल की खाडी, दक्षिण में तमिलनाडु और पश्चिम में कर्नाटक राज्य। यह शहर राष्ट्रीय राजमार्ग –4 पर बेंगलुरू और चेन्नई शहरों से सीधे ही जुड़ा है।

मंदिर की कथा ....

मंदिर के निर्माण की कहानी बेहद रोचक है। कहा जाता है कि तीन भाई थे। उनमें से एक गूंगा, दूसरा बहरा और तीसरा अंधा था। तीनों ने मिलकर अपने जीवन व्यापन के लिए जमीन का एक छोटा सा टुकड़ा खरीदा। जमीन पर खेती के लिए पानी की जरुरत थी। इसलिए तीनों ने वहां एक कूआं खोदना शुरू किया और काफी खुदाई करने के बाद भी पानी

नही निकला। हार कर उन्होंने गणेशजी का नाम लेकर फिर खोदना शुरू किया उसके बाद थोड़ा और खोदने पर अचानक उन्हें एक पत्थर दिखाई दिया। जिसे हटाने पर खून की धारा निकलने लगी। थोड़ी ही देर में पूरे कूएं का पानी लाल हो गया। यह चमत्कार

हमारे देश में भगवान गणेश के प्रथम देवता के रूप मे माना जाता है। कोई भी कार्य शुरू करने से पहले भगवान गणेश की पूजा की जाती है। इसी के चलते पूरे देश मे कई सारे गणेश मंदिर है। अनेक बार हमें गणेश जी के चमत्कारों के बार मे सुनने को मिलता है। लेकिन आज हम आपको एक ऐसे गणेश मंदिर के बार मे बता रहे हैं, जिसके बार में जानकर आप चौंक जाएंगे।

होते ही गूंगे को लगा कि वह बोल सकता हे ओर थोड़े से प्रयास के उसका गला खुल गया और बाद वह बोलने लगा। बहरे को सुनाई देने लगा और जन्मांध को दिखाई देने लगा। जब गांव के लोगों को पता चला, तो लोग यह चमत्कार देखने के लिए वहां आ गए। तभी सभी को वहां प्रकट स्वयंभू गणेशजी की एक छोटी प्रतिमा दिखाई दी और सबने मिलकर निर्णय किया कि उसे वहीं कूएं के बीच ही स्थापित कर दिया जाए। इस प्रकार प्रतिमा को वहीं पानी के बीच ही स्थापित किया गया। वहां पुरातत्व साक्ष्यों के अनुसार इसकी स्थापना 11वीं सदी में चोल राजा कुलोत्तुंगा चोल प्रथम के समय में की गई थी। कूएं को और चौड़ा कर उसे झील का आकार देकर मंदिर का विस्तार 1336 में विजयनगर साम्राज्य में किया गया। बाद में उसे नदी से जोड़ा गया ताकि पानि की कमी न रहे।

नदी से जुड़ी भी है एक अनोखी कहानी

विनायक मंदिर जिस नदी में है उससे जुड़ी भी एक अनोखी कहानी है। कहते हैं संखा और लिखिता नाम के दो भाई थे। वह दोनों कणिपक्कम की यात्रा के लिए जा रहे थे। लंबी यात्रा की वजह से दोनों थक गए और चलते–चलते लिखिता को जोर की भूख लगी। रास्ते में उन्हें आम का एक बाग दिखाई दिया तो वह पेड़ से आम तोडने लगा। उसके भाई संखा ने बाग के मालिक से पूछू बिना फल तोड़ने से मना किया लेकिन वह नहीं माना। इसके बाद संखा ने गांव की पंचायत में लिखिता की शिकायत कर दी और आम के फल चुराने की सजा के रूप में पंचों ने उसके दोनों हाथ काट दिए गए। कहते हैं लिखिता ने कणिपक्कम के पास स्थित इसी नदी में अपने हाथ डाले थे, जिसके बाद उसके हाथ फिर से जुड़ गए। तभी से इस नदी का नाम बहुधा रख दिया गया, जिसका मतलब होता है आम आदमी का हाथ। यह इस नदी का महत्व ही है कि कणिपक्कम मंदिर को बहुधा नदी के नाम से भी जाना जाता है।

कहा जाता है कि कोई इंसान कितना भी परेशान हो यदि वह कणिपक्कम गणेश जी के दर्शन कर ले तो उसकी समस्त कठिनाईयां स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। इस मंदिर में दर्शन से जुड़ा एक नियम है। माना जाता है कि इस नियम का पालन करने पर ही मुश्किलें खत्म होती हैं। नियम है कि व्यक्ति को यहां नदी में स्नान करने से पहले गणेश जी से अपने कर्मों की, यह कहते हुए कि जाने अनजाने में कोई ऐसा पाप हो गया हो, जिससे किसी भी प्राणी को क्षति हुई हो

उनके लिए क्षमा मांगनी होती है। उसके बाद नदी में स्नान कर यह प्रण लेना होगा कि वह फिर कभी उस तरह का कोई काम नहीं करेगा। इसके बाद ऊपर आकर गणेश जी के दर्शन कर उनके सामने प्रण कर अपनी परेशानियों के बारे में बताते हुए उन से मुक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना की जाती है। अधिकतर लोगों का मानना है कि उनके कष्ट दूर हुए हैं। मंदिर में अर्चना कराने वाले एक पुजारी के अनुसार, ज्यादातर भक्त नौकरी या अच्छी नौकरी, व्यापार ठीक न चलने, घर में लड़ाई या कुछ माता पिता लड़कियों के विवाह, आदि के लिए पूजा अर्चना करते हैं।

चित्तूर का विघ्नहर्ता कणिपक्कम गणपति मंदिर अपने आप में एक अनूठा धाम है। इसकी विशेषता यह है कि एक तो विशाल मंदिर नदी के बीचों बीच स्थित है और दूसरे यहां स्थापित गणपति कीमूर्ति का आकार लगातार बढ़ रहा है।कहा जाता है कि विघ्नहर्ता यहां आने वाले हर भक्त के कष्टों को हर लेते हैं। आस्था और चमत्कार की ढेरों कहानियां खुद में समेटे है कनिपक्कम विनायक का यह मंदिर।

यह इस नदी का महत्व ही है कि कणिपक्कम मंदिर को बहुधा नदी के नाम से भी जाना जाता है।

कैसे पहुंचे

हवाई मार्ग : हैदराबाद पहुंचकर वहां से सड़क मार्ग से चित्तूर पहुंचा जा सकता है।

रेल मार्ग : चित्तूर देश के लगभग सभी मुख्य रेलमार्गों से जुड़ा है। चित्तूर रेलवे स्टेशन से कणिपक्कम गणपति मंदिर 12 कि.मी. दूर है। वहां से बसें, टैक्सियां तथा ऑटो रिक्शा मिल जाते हैं।

सड़क मार्ग : चित्तूर आंध्र प्रदेश के सभी बड़े शहरों सहित राष्ट्रीय राजमार्ग–16 के द्वारा कोलकाता, भुबनेश्वर, चैन्नई आदि से जुड़ा है।

कहां ठहरें :

चित्तूर शहर में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। गणपति मंदिर के आसपास भी कुछ अच्छे बजट होटल उपलब्ध है।

मंदिर में प्रवेश का समय

प्रातः 4.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक फिर सायं 4.00 बजे से– रात्रि 8.00 बजे तक

दर्शन : प्रातः 6.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक, सायं 4.00 बजे से– रात्रि 8.00 बजे तक

प्रवेश शुल्क : कुछ नहीं है। लेकिन मंदिर में पूजा करने के लिए अनुष्ठान के प्रकार के आधार पर पूजा और सेवाओं की दरें रू.116 से रू.7500 तक हैं।

चित्तूर में अन्य प्रसिद्ध पर्यटन स्थल

गुर्रामकोंडा दुर्ग : चित्तूर जिले में गुर्रामकोंडा किला एक पहाड़ी किला है। यह गांव गुर्रमकोंडा मंडल में है। इसे देश के सबसे पुराने किलों में से एक माना जाता है। सूत्रों के मुताबिक यह किला विजयनगर राज्य के दौरान बनाया गया था और बाद में यह 1714 ईस्वी में कड़प्पा के नवाब अब्दुल नबी खान के नियंत्रण में आया जिसने इस किले का पुनर्निमाण कराया। किले में शिलालेख से पता चलता है कि इसकी विशाल दीवारें और अंदर की इमारतें और कार्यालय की इमारत "रंगीन महल" अब्दुल नबी खान द्वारा बनाई गई थीं।

इतिहास

आज भी इस किले को एक बार देखने के बाद, यहां आने वाले लोग इसके बारे में दूसरे लोगों को बताते हुए लोग गर्व का अनुभव करते हैं। बीजापुर सल्तनत के गवर्नर के रूप में नवाब अब्दुल नबी खान

का जिक्र मिलता है। वह अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय थे। नवाब अब्दुल नबी खान मौजूदा "रंगीन महल" का अपने कार्यालय के रूप में उपयोग करता था। लगभग तीन सौ वर्षों के बाद भी, इसका निर्माण तथा वास्तुकला पर्यटकों को अपनी ओर खींचने में सक्षम है। आज भी इस किले को देखने प्रदेश के ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों के तथा विदेशी पर्यटक भी बड़ी मात्रा में आते हैं।

किले के अन्दर देख सकते हैं : मीर रज़ा अली खान का (टिपू सुल्तान की मामा) का मक़बरा, रंगीन महल, सैयद शाह किरमानी की दरगाह, सैयद कांची बियाबानी का स्थान, अनंत पद्मनाभ मंदिर और पहाड़ी की चोटी पर पानी का तालाब।

हार्सिली हिल्स

आंध्रप्रदेश के हिलस्टेशनों में से एक बेहद खूबसूरत स्थान है हार्सिली हिल्स। स्थानीय लोगों में यह स्थान हार्सिली कोन्डा के नाम से प्रसिद्ध है। चित्तूर शहर से लगभग 120 कि.मी. दूर मदनपल्ली के करीब एक पहाडी क्षेत्र है। यहां आने में लगभ दो घंटे का समय लगता है और चित्तूर से सरकारी बसों के अलावा टैक्सियां मिलती है। यहां की ऊँची पहाड़ी से आप सूर्योदय और सूर्यास्त के लुभावने दृश्यों को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार इसका नाम 'एनुगु मल्लम्मा कोंडा' है। एक स्थानीय कहानी के अनुसार एक लड़की मल्लम्मा थी जो प्रतिदिन हाथियों को चारा दिया करती थी। एकदिन वह अचानक कहीं चली गई। इसके बाद हाथियों ने बड़ा उत्पात मचाया तब लोगों ने उसी स्थान पर हाथियों को चारा देना शुरू किया और उसके बाद लोगों ने वहां मल्लम्मा मंदिर बना कर आराधना करने लगे, इससे क्षेत्र के हाथी शान्त रहने लगे। बाद उसी के नामसे इस गांव का नाम भी एनुगुमल्लम्मा यानि हाथियोंको पालने

वाली मल्लम्मा हो गया। सन् 1870 में ब्रिटिश राज के एक अंग्रेज अधिकारी डब्ल्यू.डी. हार्सिली ने यहां अपना कार्यालय तथा आवास बनाया और कुछ अंग्रेज भी बसाए गए जिससे इस का नाम हार्सिली हिल्स पड़ गया।

इस पहाडी क्षेत्र में बहुज ही सुंदर जंगल हैं। यहां युकलिप्टस के पेड़ बहुतायत में हैं। जंगली जानवर, जैसे कि हिरन, भालू, चीता देखे जा सकते हैं। पक्षी विज्ञानियो के अनुसार इस क्षेत्र में पक्षियों की लगभग 133 प्रजातियां पाई गई हैं।

यहां ठहरने के लिए बजट होटल मिलते हैं। इसके अलावा होम–स्टे की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

श्री तिरुपति बाला जी ..

चित्तूर रेलवे स्टेशन से मात्र 12 कि.मी. दूर है भगवान श्रीविष्णु का प्रसिद्ध तिरुपति श्री वैंकटेश्वर मन्दिर। तिरुमला के सात पर्वतों में से एक वेंकटाद्रि पर बना श्री वैंकटेश्वर मन्दिर देश का सबसे बड़ा तीर्थस्थल तथा पर्यटन स्थान है। इसलिए इसे सात पर्वतों का मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मन्दिर में प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में भक्तजन दर्शनों के लिए आते हैं। कई शताब्दी पूर्व बने इस मन्दिर की सबसे ख़ास बात इसकी दक्षिण भारतीय वास्तुकला और शिल्पकला का अदभुत संगम है। तिरुपति देश के सबसे प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में से एक है, इसलिए यहां स्थित वैंकटेश्वर मन्दिर को दुनिया में सबसे अधिक

पवित्र स्थान माना गया है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार, इस मन्दिर में स्थापित भगवान वैंकटेश्वर की मूर्ति में ही भगवान बसते हैं और वह समूचे कलियुग में यहां विराजमान रहेंगे। वैष्णव परम्पराओं के अनुसार यह मन्दिर 108 दिव्य दर्शनम् का एक अंग है। कहा जाता है कि इस मन्दिर के निर्माण में चोल, होयसाल और विजयनगर के राजाओं का आर्थिक रूप से बहुत योगदान रहा है।

मान्यता

माना जाता है कि प्रभु श्री विष्णु ने कुछ समय के लिए तिरुमला स्थित स्वामी पुष्करणी नामक तालाब के किनारे निवास किया था। मन्दिर से सटे पुष्करणी पवित्र जलकुण्ड के पानी का प्रयोग केवल मन्दिर के कार्यों, जैसे भगवान की प्रतिमा को साफ़ करने, मन्दिर परिसर को साफ़ करने आदि के कार्यों में ही किया जाता है। इस कुण्ड का जल पूरी तरह से स्वच्छ और कीटाणुरहित है। श्रद्धालु ख़ासकर इस कुण्ड के पवित्र जल में डुबकी लगाते हैं। यह भी माना जाता है कि जो भी इसमें स्नान कर ले, उसे सभी सुख प्राप्त होते हैं। यहां एक डुबकी लगाए बिना कोई भी मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता है। दरअसल, तिरुमला के चारों ओर स्थित पहाड़ियाँ, शेषनाग के सात फनों के आधार पर बनी सप्तगिरि कहलाती हैं। श्री वैंकटेश्वर का यह मन्दिर सप्तगिरि की सातवीं पहाड़ी पर स्थित है, जो वैंकटाद्रि के नाम से प्रसिद्ध है।

श्रद्धालुओं का आगमन

प्रतिदिन इस मन्दिर में एक से दो लाख श्रद्धालु आते हैं, जबकि कुछ विशेष अवसरों या त्योहारों जैसे कि वार्षिक ब्रह्मोत्सवम में श्रद्धालुओं की संख्या पांच लाख से भी अधिक तक पहुंच जाती है।

चंद्रगिरि दुर्ग

तिरुपति के निकट चंद्रगिरि नामक स्थान पर स्थित एक दुर्ग है। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार, 11वीं शताब्दी में श्रीकृष्ण देवराय ने इस दुर्ग का निर्माण करवाया गया था। यह किला तीन सौ वर्षों तक देवराय राजवंश के अधिकार में रहा। सन् 1367 में यह विजयनगर के शासन में चला गया। उस समय चंद्रगिरि राज्य के चार बड़े नगरों में से एक था। 1646 में चंद्रगिरि गोलकुंडा के अधीन आ गया और बाद में मैसूर राज्य का भाग बना। आजकल राजा–रानी महल भवन में भारतीय पुरात्त्व सर्वेक्षण का तिमंजिला संग्रहालय है।

चित्तूर शहर से चंद्रगिरि की दूरी लगभग 57 कि. मी. है। यहां पहुंचने में लगभ एक घंटे का समय लगता है और चित्तूर से सरकारी बसों के अलावा टैक्सियां मिलती है।

तालकोना जलप्रपात :

तालकोना जलप्रपात यानि झरना आंध्र प्रदेश के सुन्दर और मशहूर झरनों में से एक है। यह चित्तूर जिले में येर्रावारिपालेम मंडल के नेराबैलु गांव में तिरुपति–तिरूमला के क़रीब श्रीवेंकटेश्वर नेशनल पार्क में स्थित है। तालकोना आंध्र प्रदेश राज्य का सबसे ऊंचा झरना है। जिसकी ऊंचाई करीब 270 फुट है। यहां आने पर प्रकृति के काफी करीब होने का अहसास होगा। गर्मी में काफी राहत मिलेगी। चंदन के वृक्षों और कुछ मूल्यवान औषधीय पौधों के कारण तालाकोना झरने का पानी चिकित्सा में काफी अच्छा माना जाता है। चूंकि यह एक वन क्षेत्र है, इसलिए यहां कई तरह के वन्य जीव, रंग–बिरंगी तितिलियां और पक्षी देखने को मिलते हैं। यहां हरियाली के अलावा गुफाएं भी हैं। यहां के रमणीक दृश्य मनमोह लेते हैं। इसीलिए यहां पर्यटकों की बहुत भीड़ लगी रहती है। निकट ही सिद्धेश्वर स्वामी मंदिर है।

तालकोना का साधारण अर्थ है सिर से ऊंची पहाड़ी यानी (ताल – सिर और कोना – पहाड़ी)। लेकिन इसका शास्त्रीय एवं पौराणिक अर्थ है "शेषचलम पहाड़ियों का प्रमुख" क्योंकि इन पहाड़ों को तिरुमाला पर्वत श्रृंखला का शुरुआती बिंदु माना जाता है।

270 फीट ऊंचाई से गिरता झरना

यद्यपि यह बहुत सुन्दर और मनमोहक झरना है। सड़क पर कार पार्किंग क्षेत्र से लगभग डेढ़ कि. मी. तक पैदल चलना पड़ता है। पानी गिरने का मार्ग पेड़ों से भरा हुआ है। इस स्थान पर बहुत सी हिंदी और दक्षिण भारतीय फिल्मों की शूटिंग की गई है। लेकिन अच्छी तरह से रखरखाव नहीं किया गया है। यदि आप यहां रहना चाहें तो रात भर ठहरने के लिए रिसॉर्ट भी हैं।

चित्तूर शहर से तालकोना झरने की दूरी लगभग 95 कि.मी. है। यहां पहुंचने में लगभ एक घंटे का समय लगता है और चित्तूर से सरकारी बसों के अलावा टैक्सियां मिलती है।

श्रीकालहस्ती

श्रीकालहस्ती चित्तूर जिले में तिरुपति से 38 कि.मी. उत्तर में श्रीकालहस्ती नामक कस्बे में पेन्नार नदी की शाखा स्वर्णामुखी नदी के तट पर बसा है। यहां एक भव्य शिव मंदिर है। दक्षिण भारत में स्थित भगवान शिव के तीर्थस्थानों में इसका विशेष महत्व है। यह तीर्थ नदी के तट से पर्वत की तलहटी तक फैला हुआ है और लगभग दो हजार वर्षों से इसे "दक्षिण कैलाश" या "दक्षिण काशी" के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर के पीछे तिरुमलई की पहाड़ी दिखाई देती हैं। मंदिर का शिखर दक्षिण भारतीय शैली में सफ़ेद रंग में बना है। इस मंदिर के तीन विशाल गोपुरम हैं जो स्थापत्य की दृष्टि से अनुपम हैं। मंदिर में एक अनोखा सौ स्तंभों वाला मंडपम तथा 120 फीट ऊंचा मुख्य गोपुरम है जिसका निर्माण 1516 ई. में विजयनगर के राजा श्रीकृष्ण देवराय द्वारा कराया गया था। अंदर सहस्रशिवलिंग स्थापित है। यहां भगवान कालहस्तीश्वर के संग देवी ज्ञानप्रसूना अंबा भी स्थापित हैं। मुख्य मंदिर के बाहरी परिसर में देवी की मूर्ति स्थापित है। मंदिर का अंदरूनी भाग 12वीं शताब्दी का बनाहै और बाहरी भाग बाद में बनाया गया था।

मान्यता अनुसार इस स्थान का नाम तीन प्राणियों – श्री यानी – मकड़ी, काल यानी सर्प तथा हस्ती यानी हाथी के नाम पर रखा गया है। तीनों ने ही यहां शिव की आराधना करके मुक्ति पाई थी। एक जनुश्रुति के अनुसार मकड़ी ने शिवलिंग पर तपस्या करते हुए जाल बनाया था और सांप ने शिवलिंग से लिपटकर आराधना की और हाथी ने शिवलिंग को जल से स्नान करवाया था। यहां पर इन तीन जीवों

की मूर्तियां भी स्थापित हैं।

श्रीकालहस्ती का उल्लेख स्कंद पुराण और शिव पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है। यह भारत का एकमात्र मंदिर है जो सूर्य और चंद्र ग्रहणों के दौरान भी खुला रहता है। जबकि, अन्य सभी मंदिर बंद कर दिए जाते हैं। यह मंदिर विशेषकर राहु–केतु की पूजा के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि इस पूजा को करने से लोगों को राहु और केतु के ज्योतिषीय प्रभाव से मुक्ति मिलती है।

महा शिवरात्रि यहां का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है, जब भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद लेने के लिए लाखों भक्त पहुंचते हैं। महाशिवरात्रि ब्रह्मोत्सव 13 दिनों के लिए महाशिवरात्रि के साथ मनाया जाता है, जिसके दौरान मंदिर की सड़कों के आसपास शिव और पार्वती की मूर्तियों के साथ जुलूस निकाले जाते हैं।

श्रीकालाहस्ती में ठहरने के लिए अच्छे बजट होटल उपलब्ध हैं।

कैलाश कोना

"कैलासकोना" या "कोना जलप्रपात" चित्तूर के नारायणवनम मंडल में है। इसके निकट ही भगवान शिव और पार्वती का मंदिर है। इस प्रपात की ऊंचाई लगभग 40 फीट है। इसकी विशेषता है कि यहां पूरे वर्ष भर पानी होता है। भगवान शिव और पार्वती के मंदिर के पास मुख्य जलप्रपात के अलावा, यहां आधे रास्ते पर कुछ दूरी पर दो और छोटे प्रपात हैं, जिनका पानी छोटे तालाबों में गिरता है। यहां पर अधिकतर पर्यटक स्नान करना पसंद करते हैं। इन दोनों झरनों तक जाने के लिए पक्की सड़क नहीं है।

कैलासकोना फॉल्स उत्तुकोट्टई – पुत्तुर – तिरुपति रोड पर स्थित है। मुख्य फॉल्स तक कार से पहुंचा जा सकता है। कार पार्किंग की पर्याप्त जगह है। कार पार्किंग से, मुख्य प्रपात पांच मिनट की पैदल दूरी पर, सुव्यवस्थित सीढियां हैं। इस स्थागन को रात में रंग बिरंगी लाइटों से रोशन किया जाता है।

कड़प्पा– चेन्नई राष्ट्रीय राजमार्ग–40 पर स्थित कैलासकोना, चित्तूनर से 44 कि.मी. दूर है। चित्तूर से सरकारी बसें, टैक्सियां उपलब्ध है।

उबलंबदुगु अथवा टाडा जलप्रपात

टाडा जलप्रपात चित्तूर जिले के वरदैयापल्लम मंडल में, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की सीमा पर है। स्थानीय रूप से इस झरने को "उबलंबदुगु फॉल्स" भी कहा जाता है। आप कालाहस्ती से भी इस स्थान पर पहुंच सकते हैं। यह वास्तव में एक ट्रैकिंग स्थान है। वैसे तो यह थोड़ा दुर्गम स्थान है लेकिन रोमांच के रसिया पर्यटक इस ओर जरूर आते हैं।

बेस कैम्प से टाडा तक पहुंचने के लिए 20 कि.मी. का पैदल सफर करना होता है। यहां चलना थोड़ा मुश्किल है क्योंकि पहले लगभग चार कि.मी. का रास्ता चट्टानी है और यह आखिरी जगह है जहां आप आराम से बैठ सकते हैं या भोजन नहीं किया हो तो भोजन करते हुए, निकट बहती हुई छोटी नदी की धारा की कलकल करती मधुर आवाज का आनंद लें। यहां से, कच्चा रास्ता होने के कारण कानखजूरे बहुत मिलते हैं। ट्रेक मुश्किल होने लगता है। रास्ता दर्शाने के लिए कोई साइन बोर्ड वगैरा भी नहीं हैं।

इस स्थान पर अभी तक व्यवसायीकरण नहीं हुआ है। फिर भी टाडा की ओर जाने से पहले चाय–नाश्ते और किराने की दो चार छोटी दुकानें हैं, जहां आप स्नैक्स या पानी खरीद सकते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक दो होटल हैं जो आपको अच्छा दक्षिण भारतीय और चीनी भोजन प्रदान करते हैं।

आस्था के पर्यटन

उत्तर प्रदेश : मुज़फ्फरनगर

शुक्रताल

– रूपेश कुमार

शुक्रताल पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में गंगा के किनारे बसा एक विख्यात पौराणिक आस्था स्थल है। प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर यहां एक बड़ा मेला आयोजित किया जाता है जिसमें लाखों की संख्या में लोग गंगा स्नान करते हैं और धार्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं। यह वही तीर्थ स्थान है जहां पांच हजार वर्ष से भी पूर्व, संत शुकदेव जी ने राजा परीक्षित को जीवन–मृत्यु के मोह से मुक्त करते हुए मोक्ष की प्राप्ति का ज्ञान दिया था।

महाभारत युद्ध में अभिमन्यु वीरगति को प्राप्त हुए और उनकी पत्नी उत्तरा के गर्भ को नष्ट करने के लिये अश्वत्थामा ने ब्रह्मास्त्र छोड़ा, परंतु श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उत्तरा के गर्भ की रक्षा की। उत्तरा के गर्भ में जो शिशु पल रहा था वही आगे चलकर राजा परीक्षित के रूप में विख्यात हुए। गर्भावस्था में ही प्रभु के दर्शन होने का सौभाग्य मात्र परीक्षित जी को ही बताया जाता है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार, कहा जाता है कि कलियुग के आरंभ के समय एक बार राजा परीक्षित आखेट के लिए जंगल में गए थे। शिकार की तलाश में घूमते–घूमते वह भूख–प्यास से व्याकुल हो गए और पानी की खोज में वह शमीक ऋषि के आश्रम में आ पहुंचे। परन्तु ऋषि समाधि में थे। राजा ने कई बार ऋषि से पानी की याचना की मगर कोई उत्तर न मिलने पर, राजा ने एक मरे हुए सांप को धनुष की नोंक से उठाकर, शमीक ऋषि के गले में डाल दिया। चूंकि ऋषि समाधि में थे इसलिए उन्हें कुछ पता नहीं लगा।

ऋषि शमीक के पुत्र श्रृंगी ऋषि आश्रम में आए और जब अपने पिता के गले में मरा हुआ सांप पड़ा देखा तो रोने लगे और उन्होंने क्रोधित होकर शाप दे दिया कि जिसने भी मेरे पिता के गले में मरा हुआ सांप डाला है इसी सांप के काटने से, आज से सातवें दिन उसकी मृत्यु हो जाए। उनके रोने की आवाज सुनकर शमीक मुनि की समाधि खुली और अपने गले में सांप पड़ा होने का पता लगा। ऋषि ने ध्यान लगाया और दुःखपूर्वक श्रृंगी को बताया कि वह हमारे देश का राजा है। साथ ही समझाया कि राजा के पास सत्ता का बल होता है। राजा उस सत्ता के बल का दुरुपयोग कर सकता है। परंतु ऋषि के पास साधना का बल होता है और ऋषि को अपने साधना बल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। इसलिए तुम्हें राजा को शाप नहीं देना चाहिए था।

शुकदेव जी मंदिर परिसर का रास्ता

उधर राजा परीक्षित को जब श्राप के बारे में पता लगा तब उन्हें अपनी गलती का भान हुआ और वह अपने पुत्र जनमेजय को राजपाट सौंपकर हस्तिनापुर

*पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

से शुक्रताल पहुंच गए। गंगा जी के तट पर वट वृक्ष के नीचे बैठ कर परीक्षित श्रीकृष्ण भगवान का ध्यान करने लगे। वहीं परम तेजस्वी शुक्राचार्य जी प्रकट हुए और अनेक ऋषि–मुनियों के मध्य एक शिला पर आकर बैठ गये। मातृ–शुद्धि (माता के कुल की महानता), पितृ–शुद्धि (पिता के कुल की महानता), द्रव्य–शुद्धि (सम्पत्ति का सदुपयोग) अन्न–शुद्धि और आत्म–शुद्धि (आत्मज्ञान की जिज्ञासा) एवं गुरु कृपा के कारण ही परीक्षित जी भागवत कथा सुनने के अधिकारी हुए।

परीक्षित को सात दिनों में मृत्यु का भय था। सप्ताह के सात वार होते हैं। राजा परीक्षित श्राप मिलते ही मरने की तैयारी करने लगे थे। इस बीच उन्हें व्यासजी उनकी मुक्ति के लिए श्रीमदभागवत्कथा सुनाते हैं। व्यास जी उन्हें बताते हैं कि मृत्यु ही इस संसार का एकमात्र सत्य है।

प्रतिशोध के कारण जनमेजय ने नागदाह यज्ञ किया जिसके चलते एक एक करके सांप उस यज्ञ की आहुति में जलने लगे। लेकिन अगत्स्य मुनि ने पंचमी के दिन आकर नागवंश की रक्षा की इसी कारण नागपंचमी के दिन नागों की पूजा की जाती है।

वह अक्षय वट वृक्ष जिसकी छाया में बैठकर राजा परीक्षित को मोक्ष प्राप्ति का रास्ता बताया गया था

इस महत्वपूर्ण पवित्र स्थान पर जाने के लिए दिल्ली से हरिद्वार जाते समय लगभग 120 कि.मी. पर आपको मुजफ्फरनगर बाई पास से गुजरना होता है। इस रूट पर मोरना–बिजनौर की सड़क पर चलते हुए कुल 26 कि.मी. की यात्रा में आप शुक्रताल पहुँच सकते हैं। रास्ता बहुत सरल है और मुज़फ्फरनगर बाई पास से मात्र 35 मिनट का समय लगता है।

शुक्रताल में जिस स्थान पर शुक देव जी ने राजा को कथा सुनाई थी, वह अक्षय वट वृक्ष आज भी अपनी विशाल जटाओं को फैलाये खड़ा है। अदभुत रूप से फैली इन जटाओं की श्रद्धालुजन पूजा अर्चना करते हैं। समय–समय पर आयोजित होने वाली भागवत कथाओं में दूर दूर से भक्त आते हैं। यह पूरा परिसर ही एक तीर्थ के रूप में जाना जाता है। यहां अन्य प्राचीन मंदिर, धर्मशालाएं, समागम स्थल स्थापित हैं।

उस समय नदी का प्रवाह निकट ही था परन्तु वर्तमान में इसने अपना रास्ता बदल लिया है और नदी वहां से काफी दूर हो गई है। मंदिर में जाने के लिए काफी सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाना होता है।

यह छोटा सा शहर पवित्र गंगा नदी की एक शाखा के किनारे पर बसा है। इस पवित्र स्थान पर शुकदेव जी महाराज ने अक्षय वट के नीचे बैठकर लगभग 5000 साल पहले राजा परीक्षित को श्रीमद भागवत की कथा सुनाई थी।

शुकतीर्थ – भागवत पीठ शुक्देव आश्रम 5100 वर्ष से भी अधिक पुराना अक्षय वट वृक्ष है। शुक देव गोस्वामी जी ने इसी अक्षय वट के नीचे बैठकर महाराजा परीक्षित तथा ऋषियों को श्रीमद भगवत की कथा सुनाई थी। इस अक्षय वट वृक्ष की विशिष्टता है कि यह कभी अपनी पत्तियों को नहीं छोड़ता है। वृक्ष

की शाखाएं 150 फुट तक ऊँची है और सभी दिशाओं में फैली है। यहां तक कि पेड़ की शाखाएं ठीक नीचे पहाड़ी के किनारे से भी बाहर आ रही है। एक शाखा तो देखने में भगवान गणेश के समान लगती है। आश्रम के इस परिसर में कई देवताओं के मंदिर स्थापित है। जिसमें वृक्ष के करीब एक मंदिर में शुकदेव गोस्वामी जी राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए की मूर्ति भी स्थापित है।

पांच हज़ार से अधिक वर्ष पूर्व का महाभारत कालीन वट वृक्ष

शुकदेव जी मंदिर परिसर से थोड़ी दूर पर ही एकादश रूद्र शिव मंदिर स्थित है जिसका निर्माण सन 1401 में किया गया बताया जाता है। अभी भी मंदिर परिसर में उस समय की मूर्तियां, भित्तिचित्र तथा संरचनाएं मौजूद है। कहते हैं कि लाला तुलसीराम जी के पूर्वज रोशनलाल जी जब एकादश रूद्र शिव मंदिर का निर्माण करा रहे थे तब अचानक ही गंगा मैया का प्रवाह मंदिर की ओर हो गया। उस समय भक्त रोशनलाल जी ने गंगा मैया की पूजा अर्चना की तथा उनसे अपना प्रवाह स्थल बदलने की प्रार्थना की और भक्त रोशनलाल जी की विनती सुनकर गंगा मैया ने अपना प्रवाह स्थल बदल लिया। रोशनलाल जी ने श्रद्धापूर्वक शिव मंदिर के साथ गंगा मंदिर का भी निर्माण कराया।

बाद में स्थापित गंगा मंदिर

शुकतीर्थ के पूर्व में गंगा की एक धारा बहती है। ऋषिकेश और हरिद्वार में अपनी तेजगति की तुलना में यहां गंगा का बहाव काफी शांत है। तीर्थयात्री यहां आकर पवित्र स्नान करते हैं। हालांकि, यह गंगा की एक शाखा है जो गांव के आगे बहती है, जबकि गंगा की मुख्य शाखा यहां से लगभग तीन कि.मी. दूर है। यह वही क्षेत्र है जहां राजा परीक्षित ने अपना शरीर छोड़ा था।

गणेशधाम शुक्रताल

इस मंदिर के परिसर में श्री गणेश जी को समर्पित गणेशधाम एक बहुत प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर का मुख्य आकर्षण गणेशजी की 35 फुट ऊंची भव्य प्रतिमा है। इस मूर्ति की स्थापना दो मुख्य स्थानीय व्यक्तियों ने कराई थी। गणेशधाम के पास दो नदियां बहती हैं जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता को और अधिक बढ़ा देती हैं।

हनुमंत धाम :

शुक्रताल में हनुमान जी की विशाल मूर्ति स्थापित होने का भी रिकार्ड है। यह मूर्ति चरण से मुकुट तक लगभग 65 फीट ऊंची है। श्री हनुमंत धाम परिसर में स्थित यह मूर्ति सन 1987 में स्थापित की गई थी। मूर्ति की एक खास बात यह है कि इसके भीतर कागज पर विभिन्न लिपियों में राम नाम लिखे

सात करोड़ से भी अधिक भगवन्नाम समाहित किए गए हैं। इसमें कुल 14 टन वजन कागज का उपयोग किया गया है और उसे एक विशेष आवरण में संजोया गया है। परिसर में इस मूर्ति के आस पास विश्व में पाई जाने वाली वानरों की विभिन्न प्रजातियों की भी मूर्तियां भी बनाई गई हैं। यहां स्थित हनुमान जी के मंदिर में दूर–दूर से लोग दर्शनों को आते हैं। समय–समय पर प्रवचनों का भी आयोजन किया जाता है।

शुकदेव मंदिर परिसर से हनुमंत धाम में स्थापित हनुमान जी की विशाल मूर्ति के दृश्य

मराठों के समय का नीलकंठ शिवमंदिर (खिचड़ी वाले बाबा के समीप) शुक्र ताल से लगभग डेढ़ कि.मी. की दूरी पर है।

बस सेवा

कुछ समय पहले तक इस ऐतिहासिक तीर्थनगरी से दिल्ली के लिए सीधी बस सेवा नहीं थी। तीर्थयात्रियों को जानसठ और मुजफ्फरनगर होकर ही दिल्ली आना जाना पड़ता था। काफी समय से शुक्रताल के साधु संत दिल्ली के लिए सीधी बस सेवा की मांग कर रहे थे ताकि आने जाने में समय और धन दोनों की बचत हो सके। अंततः सरकार ने उनकी मांग पर विचार करते हुए, 01 जून 2017 से शुक्रताल से दिल्ली के लिए सीधी बस सेवा शुरू की है। अब, शुक्रताल से दिल्ली के लिए तथा दिल्ली से भी शुक्रताल के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। इससे तीर्थ यात्रियों को काफी सुविधा हुई है।

कैसे पहुंचे :

रेल मार्ग : दिल्ली/नई दिल्ली से मुजफ्फरनगर तक रेलगाडियां उपलब्ध हैं। मुजफ्फरनगर रेलवे स्टेशन से शुक्रताल लगभग 30 कि.मी. दूर है। वहां से भी टैम्पो ही मिलते हैं। बस सेवाएं कम हैं।

बस मार्ग : दिल्ली से सीधे ही शुक्रताल के लिए सुबह 10 बजे तक बसें उपलब्ध हैं। दिल्ली से मुज़फ्फरनगर शहर लगभग 150 किमी दूर है। शुक्रताल मुज़फ्फरनगर से 28 कि.मी. दूर है।

भोपा प्राइवेट बस स्टैंड और मुज़फ्फरनगर रोडवेज बस स्टैंड से शुक्रताल के लिए नियमित बस सेवा है।

शुक्रताल के आसपास एक दो आश्रम हैं जहां भक्तों की ठहरने की सुविधा भी है।

नक्षत्र वाटिका:

महाभारतकालीन पौराणिक तीर्थनगरी शुक्रताल में गंगा किनारे स्थापित हनुमद्धाम नक्षत्र वाटिका नक्षत्र, नवग्रह व पंचवटी वृक्षों के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। यहां का सौंदर्य लोगों को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। हरियाली से परिपूर्ण नक्षत्र वाटिका पर्यावरण के दृष्टिकोण से भी बेहतर साबित हो रही है। नक्षत्र वाटिका के सौदर्यीकरण, समय–समय पर सुधार तथा देखरेख के लिए एक पांच सदस्यीय समिति गठित है। वही इसकी निगरानी करती है। पौराणिक नगरी शुक्रताल आने वाले पर्यटक व श्रद्धालु नक्षत्र वाटिका जरूर जाते हैं। नक्षत्र वाटिका की सुंदरता पर्यटकों को अपनी ओर खींच ही लेती है। दूरदराज के क्षेत्रों से शुक्रताल आने वाले श्रद्धालु इसे देखने जरूर आते हैं।

बच्चों के मनोरंजन को बनी है पशु पक्षियों की प्रतिमाएं

पीठाधीश्वर स्वामी केशवानंदजी महाराज का कहना है कि भारतीय संस्कृति में वृक्षों और नक्षत्रों को मानव जीवन की उत्कर्ष आनंदानुभूति का एक अभिन्न अंग माना गया है। ऋषियों की संस्कृति के अनुसार प्रत्येक नक्षत्र का वृक्ष भी निश्चित है जो मनुष्य अपने जन्म नक्षत्र वृक्ष का सेवा भाव से पालन–पोषण और रक्षा करता है उस मानव के जीवन में हर प्रकार से कल्याण होता है। इस नक्षत्र वाटिका में आंवला, गूलर, जामुन, खैर, शीशम, बांस, पीपल, नागकेसर, बरगद, ढाक, रीठा, बेल, अर्जुन, विकंकत, मौलश्री, चीड़, साल, जलवेतस, कटहल, मदार, शमी, कदंब, आम, नीम, महुआ के साथ देवताओं का वृक्ष कल्पवृक्ष भी लगाए गए हैं।

नक्षत्र वाटिका में बच्चों के मनोरंजन को पशु पक्षियों जैसे मोर, मगरमच्छ, शेर, सर्प, डाइनासोर, मछलियां, जिराफ, हाथी व मेंढक आदि की पत्थरों से बनी मनमोहक मूर्तियां लगाई गई हैं। वाटिका में आने वाले बच्चे इन मूर्तियों के साथ साथ खूब फोटो खिंचवाते हैं।

आज भी मुजफ्फरनगर से शुक्रताल जाने वाले रास्ते पर कोई विशेष ट्रैफिक नहीं मिलता। इस ओर अधिक चहल पहल नहीं होती है। शुक्रताल में सूर्यास्त के बाद सन्नाटा छा जाता है। केवल मंदिर के पुजारी, उनके शिष्य तथा कार्यकर्ता ही वहां देखे जा सकते हैं। मंदिर परिसर में गीता प्रेस गोरखपुर का प्रकाशित धार्मिक साहित्य तथा स्मृति चिन्ह तथा प्रसाद की कुछ दुकानें है। इसी प्रकार हनुमंधाम में भी यह दुकानें मिल जायेंगी जहाँ से भगवान जी को भोग लगाया जा सकता है तथा यादगार के लिए कुछ खरीददारी की जा सकती है।

आस्था और रोमांच

हाटू मंदिर : नरकंडा

– संतोष सिल्पोकर

नरकंडा शिमला जिले में छोटा सा शहर है। यह हिमाचल प्रदेश में हिंदुस्तान–तिब्बत रोड (एनएच–22) पर 2708 मीटर की ऊंचाई पर है। यह शिमला से करीब 65 कि.मी. दूर है और शिवालिक रेंज से घिरा हुआ है।

नरकंडा की औसत ऊंचाई 8599 फीट है और नरकंडा से आठ कि.मी. दूर समुद्र तल से 11,152 फीट की ऊंचाई पर हाटू शिखर है। नरकंडा से 18 कि.मी. दूर कुमार्सन निकटतम शहर है जो नरकंडा सब–डिविजन में आता है।

भारी हितपात के दौरान कृत्रिम बेल्ट पर स्केटिंग करते लोग

नरकंडा एक शान्तिपूर्ण स्थान

यहां सर्दी में एक स्कीइंग रिसॉर्ट है। नरकंडा से 16 कि.मी. दूर कोटगढ़ है जो सेब के बागानों के लिए प्रसिद्ध है। अगले गोल चक्कर से एक रास्ता हिमाचल प्रदेश की प्रमुख सेब बेल्ट थानेधर जाता है जहां सत्यनंद स्टोक्स ने सेब संस्कृति शुरुआत की थी।

सत्यनंद स्टोक्स ने पहली बार इस स्थान पर सेब के बाग लगाए थे जिससे इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था मजबूत बनाने में मदद मिली। आज यह क्षेत्र सेब उत्पादन से 3,000 करोड़ रुपये की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आय अर्जित करता है। लेकिन आजकल सेब के उत्पादक अपने बागों में सेब के स्थान पर चेरी लगाने पर जोर दे रहे हैं क्योंकि चेरी के ज्यादा दाम मिलते हैं। श्री स्टोक्स के पोते बेहतर उत्पादन के लिए सेब की नई–नई किस्में विकसित करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं।

इस शहर में पूरे साल एक सुखद मौसम का अनुभव होता है। गर्मी के समय अप्रैल से जून तक, अधिकतम तापमान लगभग 30 डिग्री तथा न्यूनतम तापमान 10 डिग्री होता है। जुलाई से सितंबर के महीनों में, नरकंडा में मानसून का मौसम होता है और अक्तूबर से फरवरी तक यह शहर बर्फ की चादर

*संयुक्त निदेशक (रा.भा.), पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

में लिपटा होता है। इस समय के दौरान अधिकतम तापमान 15 डिग्री और दिन में 10 डिग्री तक आ जाता है।

हाटू शिखर शिमला जिले की दूसरी सबसे ऊंची चोटी है। यह समुद्र तल से 11,152 फीट की ऊंचाई पर घने जंगलों से घिरी है। नरकंडा विशेष रूप से हाटू मंदिर के लिए प्रसिद्ध है।

एचपीपीडब्ल्यूडी डिवीजन कुमारसन साइन बोर्ड हाटू शिखर की ऊंचाई दिखा रहा है

दर्शनीय दृश्य

शिवालिक पहाड़ियों की सुंदरता हाटू चोटी के लिए जाने वाली खड़ी सड़क पर देखी जा सकती है।

हाटू चोटी की यात्रा नरकंडा से दो कि.मी. आगे से शुरू होती है और चोटी तक की दूरी लगभग आठ कि.मी. है। हाटू चोटी एक एकांत स्थान है और इसलिए चोटी पर सुविधाएं न के बराबर ही हैं। हिमाचल प्रदेश पर्यटन निगम द्वारा हाटू मंदिर से एक कि.मी. ऊपर एक पर्यटक आवासगृह बनाया गया है, जिसका उपयोग सामान्य सुविधाओं और आवास के लिए किया जा सकता है। मंदिर से ऊपर थोड़ी दूरी पर हिमाचल प्रदेश पर्यटन निगम का एक पर्यटक लॉज है जिसका उपयोग सामान्य सुविधाओं और आवास के लिए किया जा सकता है।

हाटू चोटी हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में दूसरी सबसे ऊंची चोटी है। यह समुद्र तल से 11,152

हाटू चोटी से आस पास की चोटियों का नजारा

फीट की ऊंचाई पर स्थित है। चोटी कोनीफर्स, ओक और मेपल के घने जंगल से घिरी हुई है।

हाटू चोटी शिमला से लगभग 50 कि.मी. दूर शिमला–रामपुर राजमार्ग पर स्थित है। नरकंडा तक की सड़कें अच्छी स्थिति में हैं। यहां से आप या तो आठ कि.मी. तक पैदल या ट्रैकिंग कर सकते हैं। बाइक या कार से भी जा सकते हैं। मगर संकरी सड़क होने के कारण चोटी तक बाइक या कार से जाने में कुछ मुश्किल होती है क्योंकि एक समय में केवल एक ही कार ऊपर चढ़ सकती है। कुछ कुछ दूरी पर चार–पांच स्थानों पर पहाड़ी कुछ चौड़ी होने से वहां रुक कर फिर आगे जा सकते हैं।

हाटू मंदिर

चोटी के शीर्ष पर एक छोटा लकड़ी का मंदिर है जिसे हटू या हाटू मंदिर कहा जाता है। स्थानीय मान्यता के अनुसार प्रसिद्ध हाटू माता मंदिर मां काली का मंदिर है। यहां पर ज्येष्ठ के पहले रविवार को बड़ी संख्या में श्रृद्धालु अनुष्ठान करने के लिए आतेहैं।मंदिर के पास चट्टानों का निर्माण जैसा एक प्राचीन चूल्हा है। स्थानीय लोगों का मानना है कि इसका उपयोग पांडवों ने अपना भोजन पकाने के लिए किया था। भगवद्गीता से उपजी एक किंवदंती है कि पांडवों के भाइयों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय हिमालय पर्वत की इस चोटी पर भी बिताया था। यहां दो विशाल पत्थर हैं, जिन्हें "भीम चुल्ला" कहा जाता है, इसके आसपास के क्षेत्र में एक सबूत के रूप में खड़ा है।

दर्शनीय दृश्य

हाटू शिखर के लिए खड़ी सड़क पर शिवालिक पहाड़ियों की सुंदरता का आनंद लिया जा सकता है।

हाटू शिखर के रास्ते में शिखर के आसपास की पड़ोसी चोटियां दिखाई देती हैं।

वन

शिखर और आसपास के क्षेत्र में समशीतोष्ण जंगल है। जिसमें ज्यादातर कॉनिफ़र, ओक, मेपल, पॉपुलस, एस्कुलस, हॉली जैसे वृक्षों की प्रजातियां पाई जाती हैं। यही विभिन्न प्रजातियां जंगल के पर्याप्त हिस्से को कवर करती हैं। फूल पौधे क्षेत्र में बढ़ रहे हैं। लेकिन हाल ही में, सेब के बागों के लिए जंगल साफ किए गए हैं।

कैसे पहुंचे

वायुमार्ग : शिमला में एक छोटी हवाई पट्टी है जो शहर से लगभग 22 कि.मी. दूर पास की एक पहाड़ी जुब्बर हट्टी में है। लेकिन यह हवाई पट्टी बहुत छोटी है, इसलिए एकमात्र उपलब्ध सेवा जैगसन एयरलाइंस की है जो सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को दिल्ली से शिमला में एकल उड़ान सेवा प्रदान करती है।

रेलमार्ग : कालका से शिमला तक एक छोटी लाइन (नैरो गेज) पर "टॉय ट्रेन" सेवा चलती है। इस सेवा से हिल स्टेशन तक जाने में लगभग चार घंटे लगते हैं और रास्ते में हिमालय के शानदार नजारों का आनंद लिया जा सकता है।

सड़क मार्ग : शिमला से दिल्ली, मनाली और चंडीगढ़ के लिए प्रतिदिन हिमाचल प्रदेश के अलावा जम्मू व कश्मीर, पंजाब और हरियाणा राज्यों की कई बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

हाटू मंदिर और शिखर - अध्यात्म और रोमांच

हाटू माता मंदिर : शिमला के नरकंडा क्षेत्र में हाटू चोटी पर स्थित मंदिर हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंदिरों में से एक है। हाटू, एक आम पर्यटक स्थल होने के नाते और बाइकर्स के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह इस क्षेत्र की पक्की सड़क वाली सर्वोच्च चोटियों में से एक है, हालांकि सर्दियों में भारी हिमपात के कारण यह क्षेत्र एक तरह से दुनिया के अन्य हिस्सों से कट जाता है।

हाटु शिखर

नरकंडा से 3400 मीटर और आठ कि.मी. की दूरी पर, जब आप पहाड़ी के ऊपर चीड़ और स्प्रूस के पेड़ों से घिरी सड़क से यात्रा करते हैं, तो एक प्राचीन हाटू माता मंदिर स्थित है। यह चोटियां पूरी हिमालय पर्वतमाला, बर्फ से ढंके पहाड़ों और घने जंगलों, हरे भरे खेतों और सेब के बागों के शानदार नजारे प्रस्तुत करती हैं। एक तरफ गहरी और खड़ी घाटियां हैं जिनमें ऊंचे ऊंचे देवदार के आकर्षक पेड़ों की कतारें हैं तो दूसरी ओर घाटी में चट्टान के ठोस पहाड़ों को देख सकते हैं। सड़क के हर मोड़ के साथ, आपको एकदम खड़ी चढ़ाई महसूस होती है और आपके आसपास के दृश्य बदलते जाते हैं।

हिमपात के दौरान हाटू मंदिर का एक दृश्य

यदि आप भग्यशाली है और मौसम साफ हो तो आपको हाटू से बर्फ से ढके श्रीखंड महादेव की चोटियों का विहंगम दृश्य भी देखने को मिल सकता है। इसलिए हम तो यही सलाह दें सकते हैं कि शिखर के एकदम ऊपर तक जाएं।

हाटू मंदिर का इतिहास...

हाटू घने जंगल में स्थित 11000 फीट के क्षेत्र में सबसे ऊंची चोटी है। यहां के आकर्षक और विस्मयकारी परिदृश्य लोगों को बार–बार आने के लिए मजबूर करते हैं। हाटू में एक छोटा सा सुंदर लकड़ी का मंदिर है। लोग अपनी इच्छा से मंदिर आते हैं। एक विश्वास है कि यहां सच्चे दिल से मांगने पर आपकी इच्छा निश्चित रूप से पूरी होगी।

मान्यताएं

हालांकि इस मंदिर के निर्माण काल के बारे में कोई भी स्पष्ट रूप से कुछ नहीं बता पाया है, किंतु स्थानीय मान्यता के अनुसार पुराणों में प्रसिद्ध हाटू माता मंदिर 'रावण' की पत्नी 'मंदोदरी' का मंदिर है।

मंदोदरी को लेकर अनेक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। मंदोदरी भी उसकी ही भांति अत्यंत मायाविनी और तपस्विनी थी। रावण ने मंदोदरी से बलपूर्वक विवाह किया था। कहा जाता है कि इस मंदिर में मंदोदरी पूजा करने आती थी। ऐसा भी कहा जाता है कि रावण की रक्षा के लिए वह यहां आकर पूजापाठ करती थी।

यद्यपि यह स्थान लंका से काफी दूर है, लेकिन कहा जाता है कि मंदोदरी हाटू माता की भक्त थी। वह अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की दयालु स्त्री थी। जिसकी वजह से वह दान–पुण्य में भी यकीन करती थी। जिसकी वजह से ही उसने यह मंदिर बनवाया और प्रति माह यहां पूजन के लिए आती थी।

यह मंदिर देखने में अत्यंत आकर्षक और पूरी तरह लकड़ी का बना हुआ है। सम्पूर्ण लकड़ी से बने होने के कारण लोग इसे देखकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं। आसपास देवदार के पेड़ सुंदरता को और बढ़ा देते हैं। प्राकृतिक सुंदरता इस मंदिर के आकर्षण को दोगुना कर देती है।

नवंबर–दिसम्बर से फरवरी तक यह मंदिर बन्द रहता है क्योंकि इस दौरान इस क्षेत्र में भारी हिमपात होता है। फिर बसंत पंचमी के दिन यह मंदिर खोला जाता है। इस दिन आस–पास के क्षेत्रों से हज़ारों लोग, अधिकतर पैदल चलकर ही, यहां दर्शन करने आते हैं। यहां रस्म अदा करने के लिए 'जेठ' महीने के पहले रविवार भी बड़ी संख्या में श्रृद्धालू आते हैं।

हाटू शिखर ट्रेक एक दिवसीय ट्रेक है। कुछ ट्रेक ऐसे होते है जिनके बारे में सभी ट्रेकर्स जानते हैं और कुछ ट्रेक होते है जिनके बारे में ज्यादातर लोगों को पता नहीं होता है।

हाटू शिखर एक ऐसा ही ट्रेक है। यह एक दिन की बढ़ोतरी है, लेकिन आपको एक पूर्ण हिमालयी ट्रेक में मिलने वाली हर चीज़ है – देवदार के घने जंगल, शानदार पहाड़ों के दृश्य, मनमोहक सैर और बर्फ पर चलने का रोमांच, बशर्ते आपको सही समय मिले।

शिमला की सैर पर आने वाले पर्यटकों को इसे देखने जरूर जाना चाहिए।

भारत रत्न पुरस्कार : 2019

प्रस्तुति– **मोहन सिंह**

1. कलम और आवाज के जादूगर भूपेन हजारिका

भारत में ऐसे विलक्षण कलाकार बहुत कम हैं जो स्वयं गीत लिखते, संगीतबद्ध करते और गाते थे। ऐसे ही एक कलाकार थे भूपेन हजारिका। उन्होंने गीत लेखन, पत्रकारिता, गायन, फिल्म निर्माण आदि अनेक क्षेत्रों में काम किया और लाखों लोगों के दिलों को छुआ। उनकी असरदार आवाज में जिस किसी ने उनके गीत "दिल हूम हूम करे" और "ओ गंगा तू बहती है क्यों" सुने वह भूपेन दा का मुरीद हो गया। अपनी मातृ भाषा असमिया के अलावा भी भूपेन हजारिका ने हिंदी, बंगला समेत कई अन्य भारतीय भाषाओं में गीत गाए हैं। उन्होंने फिल्म "गांधी टू हिटलर" में महात्मा गांधी का पसंदीदा भजन "वैष्णव जन" गाया था।

जाने–माने संगीतकार, गायक और फ़िल्मकार भूपेन हज़ारिका को पूर्वोत्तर भारत की आवाज़ के रूप में जाना जाता है और असम में उनका बहुत सम्मान रहा है।

भूपेन दा का जन्म असम के तिनसुकिया जिले की सदिया में 8 सितंबर, 1926 को हुआ था। भूपेन का संगीत के प्रति लगाव अपनी माता शांतिप्रिया के कारण ही हुआ, जिन्होंने उन्हें असम के पारंपरिक संगीत की शिक्षा दी। वर्ष 1936 में मात्र दस वर्ष की आयु में उन्होंने अपना पहला गीत लिखा और मंच पर गाया।

असमिया सांस्कृतिक जागरण की विख्यात हस्ती और जाने माने फिल्म निर्माता ज्योतिप्रसाद अग्रवाल ने एक कार्यक्रम में उनकी आवाज सुनी तो उन्हें बहुत पसंद आई और उन्होंने 13 साल के भूपेन को अपनी असमिया फिल्म 'इंद्रमालती' में बाल कलाकार के रूप में अभिनय करने के साथ ही इस फिल्म में दो गीत भी गाने को कहा। बस यहीं से उनके गीतकार, गायक और संगीतकार बनने का सफर शुरू हो गया था।

भूपेन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1946 में राजनीति विज्ञान में एम.ए. करने के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए अमेरीका चले गए और वहां न्यूर्यार्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से उन्होंने पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। यहां उनकी मुलाकात प्रियम्वदा पटेल से हुई और वर्ष 1950 में दोनों ने शादी कर ली।

भारत आकर भूपेन दा ने गुवाहाटी यूनिवसिर्टी में अध्यापन किया किन्तु ज्यादा समय तक यह नौकरी नहीं कर पाए और रिजाइन दे दिया। भूपेन दा ने 'आकाशवाणी' (ऑल इंडिया रेडियो), गुवाहाटी में गाना शुरू कर दिया। इसके साथ हजारिका असमिया और बंगाली गीतों का हिंदी में अनुवाद कर उन्हें अपनी आवाज देने लगे।

---

*कंसल्टेंट एवं पत्रिका के प्रबंध सम्पादक

सम्मान

हजारिका को 1975 में सर्वोत्कृष्ट क्षेत्रीय फिल्म के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार, 1992 में सिनेमा जगत के सर्वोच्च पुरस्कार दादा साहब फाल्के सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें 2009 में असम रत्न और इसी साल संगीत नाटक अकादमी अवॉर्ड, 2011में पदमभूषण जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 2019 में देश के 70वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भूपेन हजारिका को देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से मरणोपरान्त सम्मानित किया गया है।

गीत संगीत का सफर

उन्हें कई भारतीय भाषाओं का ज्ञान था। समय बीतने के साथ वह स्टेज परफॉर्मेंस भी देने लगे। इसके बाद हजारिका ने म्यूजिक को ही अपना साथी बना लिया। सुर सम्राट हज़ारिका ने क़रीब 60 साल तक अपनी आवाज़ से पूर्वोत्तर के साथ बॉलीवुड में भी छाए रहे। हज़ारिका ने 1956 में अपनी फ़िल्म 'एरा बतर सुर' का निर्देशन किया।

उन्होंने 'रुदाली', 'मिल गई मंजिल मुझे', 'साज', 'दरमियां', 'गजगामिनी', 'दमन' और 'क्यों' जैसी सुपरहिट हिंदी फिल्मों में गीत दिए। हजारिका ने अपने जीवन में एक हजार गाने और 15 किताबें लिखीं।

सिनेमा में उपलब्धि

भूपेन हजारिका को देश के अग्रणी फिल्म निर्माताओं में स्थान दिया जाता है। वह संभवतः एकमात्र ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने भारत और विश्व सिनेमा के मानचित्र पर असमिया सिनेमा को एक पहचान दी थी और सिनेमा के माध्यम से आदिवासी संस्कृति के साथ ही उत्तर–पूर्व के सातों राज्यों को एक मंच पर लाए। बिहू के गीतों को अपनी चिरजीवी आवाज़ से उनकी लोकप्रियता बढ़ी और इस प्रसिद्धि ने उन्हें 1967 से 1972 के बीच एक निर्दलीय सदस्य के रूप में चुनकर विधान सभा में स्थान दिलाया था। उन्होंने असम के गुवाहाटी में राज्य स्वामित्व के अधीन भारत में अपनी तरह का पहला फिल्म स्टूडियो स्थापित कराया था।

उनके गंगा नदी पर लिखे और गाए गीत काफ़ी प्रसिद्ध हुए। हज़ारिका ने बंगाली, असमिया और हिंदी समेत कई भारतीय भाषाओं में गीत गाए हैं। 'रूदाली' के गीत 'दिल हूंम हूंम करे' और 'ओ गंगा बहती हो क्यों' का जादू बखेरने वाली यह अमर आवाज 5 नवम्बर, 2011 के दिन सदा के लिए शान्त हो गई।

2. नानाजी देशमुख

नानाजी देशमुख भारत देश के एक ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता थे। जिन्होंने बिना किसी प्रचार के देश में फैली कुप्रथाओं को समाप्त करने, ग्रामीण क्षेत्र के विकास के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के लिए अनेक काम किए थे। भारत के गांवों में ही सारी सुख सुविधा मिल सकें इसी के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया।

नानाजी लोकमान्य तिलक जी को अपना आदर्श मानते थे। वह उनकी राष्ट्रीय विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित थे। इसी विचारधारा के प्रचार में देश सेवा के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था।

प्रारंभिक जीवन...

1916 में महाराष्ट्र के छोटे से गांव में जन्मे नानाजी देशमुख का नाम चंडिकादास अमृतदास देशमुख रखा गया था। वह लगभग चार वर्ष के ही थे कि उनके माता–पिता कर देहांत हो गया और उनके मामा ने उनकी देखरेख की थी। नानाजी किसी पर बोझ नहीं बनना चाहते थे, इस लिए बचपन में उन्होंने सब्जी बेचने का भी काम किया।

नानाजी को पढ़ने का बहुत शौक था। पैसों की कमी के बावजूद नानाजी की यह इच्छा कम नहीं हुई थी। नानाजी ने खुद मेहनत करके, जैसे तैसे कर

पैसे जुटाए और अपनी शिक्षा जारी रखी। नानाजी ने हाई स्कूल की पढाई राजस्थान के सीकर जिले से की थी। इसी दौरान उनकी मुलाकात डॉक्टर हेडगेवार से हुई। डॉ. हेडगेवार ने उनकी मदद करनी चाही, लेकिन स्वाभिमानी नानाजी ने सादर उन्हें इंकार कर दिया। इसके बाद नानाजी ने कुछ साल खुद मेहनत की और पैसे जमा किए तथा 1937 में बिरला कॉलेज में दाखिला ले लिया।

1940 में नानाजी ने उत्तर प्रदेश का रुख किया और प्रचारक के रूप में कार्य करने लगे। 1943 में उत्तर प्रदेश में एक कार्यक्रम में नानाजी की मुलाकात राष्ट्रवादी विचारधारा रखने वाले महान नेता दीनदयाल उपाध्याय से हुई थी। नानाजी देशमुख ने विनोबा भावे द्वारा शुरू किये गए भूदान आन्दोलन में भी बढचढ कर हिस्सा लिया था। 1980 में नानाजी ने राजनीति छोड़ करसामाजिक और रचनात्मक कार्यों को करने का फैसला किया।

नानाजी बहुत ही शांत और विनम्र व्यक्तित्व के धनी थे। सभी से बड़ी नम्रता से बात करते थे। इसी कारण से दूसरे दलों के लोग भी उनका बहुत आदर करते थे।

सामाजिक कार्य

पहली बार जब नानाजी चित्रकूट आए तो उन्हें यह स्थान बेहद अच्छा लगा। उस समय चित्रकूट के हालात अच्छे नहीं थे, राम की कर्मभूमि में विकास कार्य नहीं के बराबर थे। उन्होंने अपना जीवन यही बिताने का फैसला लिया था। 1969 में नानाजी ने रामभूमि चित्रकूट में ही बस गए। चित्रकूट को ही अपने सामाजिक कार्यों का केंद्र बना दिया था। उसी समय से उन्होंने दलितों के विकास के लिए काम शुरू किया था।

राजनीति से सन्यास लेने के बाद नानाजी ने 1969 में दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की थी। नानाजी ने अपना समय इसके निर्माण में ही लगा दिया उनका उद्देश्य था कि यह संस्थान भारत को मजबूत बनाने के लिए कार्यरत रहे। नानाजी गांवों में कृषि क्षेत्र में सुधार, गांव में कुटीर उद्योग लगाने, ग्रामवासियों को शिक्षा प्राप्त करने और अपने घर में ही सारी सुविधाएं लाने के लिए प्रेरित करते थे। इस कार्य के निमित्त सरकार को भी लिखते रहते थे। इसके अलावा गाँव का पूरा विकास, लोगों की रोजमर्रा की जरूरतें जैसे ग्रामीण स्वास्थ्य, शिक्षा, बिजली, सड़क, पानी आदि के लिए भी बहुत मेहनत की थी। नानाजी ने मुख्यरूप से उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश के लगभग 500 गांवों में विकास कार्य किये थे।

योगदान

नानाजी देशमुख ने 12 फरवरी, 1991 को "महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय", चित्रकूट की स्थापना की। यह भारत का पहला ग्रामीण विश्वविद्यालय है। वही इस विश्वविद्यालय के प्रथम कुलाधिपति भी थे। NAAC द्वारा इसे ग्रेड। की मान्यता प्रदान की गई है।

नानाजी काफी समय से बीमार चल रहे थे लेकिन इलाज के लिए चित्रकूट छोड़कर नहीं गए और चित्रकूट विश्वविद्यालय में, सन 2010 में 93 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ था।

सम्मान

नानाजी को देश विदेश में बहुत से सम्मान

मिले है, नानाजी को 1999 में पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया था। इसके 20 साल बाद 2019 में भारत सरकार ने देश का सबसे बड़ा पुरस्कार भारत रत्न नानाजी को देकर मरणोपरान्त सम्मानित किया है।

3. प्रणव कुमार मुखर्जी

देश के जाने माने राजनेता तथा भारत के तेरहवें राष्ट्रपति रह चुके श्री प्रणब मुखर्जी को 26 जनवरी 2019 को भारत रत्न से सम्मानित किया गया है।

श्री प्रणव मुखर्जी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रहे हैं। कांग्रेस के नेतृत्व में बने संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने उन्हें अपना उम्मीदवार घोषित किया और उन्होंने 25 जुलाई 2012 को भारत के 13वें राष्ट्रपति के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ ली थी।

श्री मुखर्जी का जन्म पश्चिम बंगाल के वीरभूम जिले में किरनाहर शहर के निकट स्थित मिराती गाँव में 11 दिसम्बर 1935 को हुआ था। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से इतिहास और राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर के साथ साथ कानून की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने पहले एक कॉलेज प्राध्यापक के रूप में और बाद में बांग्ला पत्रिका "देशेर डाक" में काम कर एक पत्रकार के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। प्रणव मुखर्जी बंगीय साहित्य परिषद के ट्रस्टी एवं अखिल भारत बंग साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष भी रहे।

उनका संसदीय कैरियर 1969 में कांग्रेस पार्टी के राज्यसभा के सदस्य रूप में से शुरू हुआ था। वह सन् 1973 से 2012 तक कई महत्वपूर्ण मंत्रालयों के कैबिनेट मंत्री रहे हैं। सन् 1984 में 'यूरोमनी पत्रिका' के एक सर्वेक्षण में उनका विश्व के सबसे अच्छे वित्त मंत्री के रूप में मूल्यांकन किया गया था।

श्री पी.वी. नरसिंह राव ने पहले उन्हें योजना आयोग का उपाध्यक्ष नियुक्त किया और 1991 से 1996 तक वह योजना आयोग के उपाध्यक्ष रहे। पद पर आसीन के रूप में और बाद में एक केन्द्रीय कैबिनेट मन्त्री के तौर पर करने का फैसला किया। सन उन्होंने राव के मंत्रिमंडल में 1995 से 1996 तक पहली बार विदेश मन्त्री के रूप में कार्य किया। 1997 में उन्हें उत्कृष्ट सांसद चुना गया। सन 2004 में, श्री मुखर्जी को लोकसभा में सदन का नेता बनाया गया। उन्हें रक्षा, विदेश, विदेश, राजस्व, आर्थिक मामले, वाणिज्य और उद्योग, समेत विभिन्न महत्वपूर्ण मन्त्रालयों का मन्त्री होने का गौरव प्राप्त है। वह कांग्रेस संसदीय दल और कांग्रेस विधायक दल के नेता रह चुके हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका

वह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक और अफ्रीकी विकास बैंक के प्रशासक बोर्ड के सदस्य भी रहे हैं।

श्री मुखर्जी को पार्टी के भीतर तो आदर मिला ही, सामाजिक क्षेत्र में भी काफी सम्मान मिला है। प्रचार माध्यमों में उन्हें बेजोड़ स्मरणशक्ति वाला, आंकड़ा प्रेमी और अचूक इच्छाशक्ति रखने वाले एक राजनेता के रूप में वर्णित किया जाता रहा है।

मुखर्जी की अमोघ निष्ठा और योग्यता को देखते हुए उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारतरत्न से सम्मानित किया गया है।

पाठक की प्रतिक्रिया

राजीव रंजन जारुहार 18 दिसम्बर, 2018
भूतपूर्व मेम्बर इंजीनियरिंग रेलवे बोर्ड एवं पदेन् सचिव भारत सरकार
Email : rajiv.jaruhar@gmail.com

महोदय,

अतुल्य भारत के अप्रैल–जून, 2018 अंक में प्रकाशित 'देव का सूर्य मंदिर' पर, कप्तान प्राण रंजन का लेख पढ़ कर बहुत प्रसन्नता हुई।

मैं स्वयं देव का निवासी हूं। मेरे दादाजी स्व. धनुषधारी शरण देव राज्य के मुख्य सचिव थे। वहां के राजा जग्रनाथ सिंह अपने जमाने के प्रोग्रेसिव राजा थे जिनका जिक्र भी लेख में किया गया है। इस लेख से बचपन की यादें ताजा हो गई हैं और इसीलिए इस लेख के कवरेज पर प्राण जी को बधाई देना चाहता हूँ। मेरी अपनी जानकारी के मुताबिक, ऐसी मान्यता है कि यह बौद्ध मंदिर था जिसमें बाद में सूर्य देव की स्थापना की गई। इसीलिए इसका द्वार पश्चिम में है। दूसरी ओर लोग कहते हैं कि 1932 के भूकंप के दौरान इसका द्वार घूम कर पश्चिम दिशा में हो गया। मैं एक सिविल इंजीनियर के नाते, ऐसा संभव हो, नहीं मानता हूं। मेरे पिताजी जो स्वयं इंग्लैंड से प्रशिक्षित सिविल इंजीनियर थे वे भी ऐसा नहीं मानते थे। भूकंप के बाद उन्हें राजा साहब ने कहा था कि भूकंप के बाद मंदिर के शीर्ष पर जहाँ कमल के फूल (52 पंखुड़ियां हैं) में दरारें पड़ गईं जिससे ऊपर से पानी सूर्य देव की मूर्ति पर गिरता था। पिता जी ने उस पर चढ़ कर मरम्मत कराई थी। उसी दौरान उन्होंने इसके निर्माण की विधि का भी अध्ययन किया। दो पत्थरों को लोहे के चौकोर पट्टी से जोड़ा गया है। उन्होंने एक रेती से बहुत घंसने के बाद भी उस पट्टी पर कोई निशान भी नहीं बना पाए। माना जा सकता है कि इसका निर्माण निश्चित रूप से लौह युग के बाद हुआ है। उस युग की लौह उत्पादन की टेक्नोलोजी भी विलक्षण रही होगी।

दो और बातें – वहां 52 का अंक बड़ा ही प्रचलित है। मंदिर की ऊंचाई 52 हाथ लगभग 102 फीट। मंदिर के शीर्ष पर कमल के फूल की 52 पंखुड़ियां। देव में छोटे बड़े 52 मंदिर एवं तालाब और भी अन्य।

देव का पानी खारा है आसपास कोई भी मीठा पानी नहीं है। कहते हैं कि सूर्य देव का रथ जब यहाँ रुका तो घोड़ों के मूत्र से सब जल खारा हो गया।

मंदिर के मुख्य द्वार पर निर्माण हाल के वर्षों का है। मैं 1957 तक था तब तक यह नहीं था।

बहुत आकर्षक लेख के लिये आपको एवं लेखक को कोटीश धन्यवाद और अभिनन्दन।

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियाँ एवं समाचार

मेघालय में पहली 'स्वदेश दर्शन' परियोजना का उद्घाटन

9 जनवरी, 2019 को मेघालय के मुख्यमंत्री श्री कॉनराड के. संगमा ने पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की 'स्वदेश दर्शन' योजना के तहत लागू "पूर्वोत्तर सर्किट का विकास : उमियम (झील दृश्य) – यू लुम सोहपेटबिनेंग– माउदिआंगडियांग – आर्किड लेक रिज़ॉर्ट" परियोजना का उमियम में उद्घाटन किया। इस अवसर पर मेघालय के पर्यटन मंत्री श्री मेटबाह लिंगदोह, पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी और मेघालय पर्यटन विकास निगम लिमिटेड के अध्यक्ष, श्री सम्बोर शुल्लाई भी उपस्थित थे।

पर्यटन मंत्रालय ने जुलाई, 2016 में 99.13 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना को मंजूरी दी थी। इस परियोजना के तहत मंत्रालय ने पारंपरिक स्वास्थ्य केंद्र, जनजातीय कायाकल्प केंद्र, पर्यटक सूचना केंद्र, बहुउद्देशीय हॉल, लॉग हट्स, कैफेटेरिया, साउंड एंड लाइट शो, स्मारिका दुकानें, वाटर स्पोर्ट्स जोन, जिप लाइन, कैनोपी वॉक, ट्रेकिंग रूट, साइकिलिंग ट्रैक, अंतिम मील तक जुड़ाव, कारवां पार्किंग, सार्वजनिक शौचालय, और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी सुविधाएं विकसित की हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र का विकास, पर्यटन मंत्रालय का मुख्य ध्यानकेन्द्रित क्षेत्र है। मंत्रालय ने इस क्षेत्र में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के विकास के लिए अनेक पहलें की हैं। इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास में मुख्य चुनौतियों में गुणवत्तापरक अवसंरचना सेवाएं और इस क्षेत्र के पर्यटन उत्पादों के बारे में जागरूकता की कमी शामिल है।

मंत्रालय उपर्युक्त मुद्दों से निपटने के लिए अनेक गतिविधियां चला रहा है। मंत्रालय ने 'स्वदेश दर्शन' और 'प्रशाद' जैसी प्रमुख योजनाओं के तहत इस क्षेत्र में पर्यटन अवसंरचना को बहुत महत्व दिया है और दूसरी ओर मंत्रालय ने अपनी इन्हीं योजनाओं के तहत सभी पूर्वोत्तर राज्यों को शामिल करके 1349.04 करोड़ रुपये की 16 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। पर्यटन मंत्रालय, पूर्वोत्तर विकास, संस्कृति, सड़क परिवहन और राजमार्ग तथा नागर विमानन जैसे अन्य मंत्रालयों के साथ इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। मंत्रालय इस क्षेत्र की विविधताओं, पर्यटन उत्पाद और समृद्ध संस्कृति पर विशेष जोर देते हुए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विशेष प्रोत्साहन कार्यक्रम चला रहा है। मंत्रालय ने इस क्षेत्र में पर्यटन और आतिथ्य सत्कार क्षेत्र में कुशल कर्मचारी उपलब्ध कराने के लिए होटल प्रबंधन संस्थान और पाक कला संस्थान भी स्थापित किए है।

मंत्रालय के प्रयासों ने सकारात्मक परिणाम दर्शाने शुरू किए है और पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों के आगमन में भी वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में वर्ष 2017 के दौरान कुल 1.69 लाख विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ, जो वर्ष 2016 में आए 1.5 लाख पर्यटकों की तुलना में 16.7 प्रतिशत बढ़ोतरी को दर्शाता है। 2017 में घरेलू पर्यटकों का आगमन 95.7 लाख रहा, जबकि वर्ष 2016 में 77.7 लाख घरेलू पर्यटक आए थे। इस प्रकार वर्ष 2016 की तुलना में 22.8 प्रतिशत की दोहरे अंकों वाली प्रभावशाली बढ़ोतरी हुई। पर्यटकों की बढ़ती हुई संख्या ने इस क्षेत्र के स्थानीय लोगों के लिए बेहतर रोजगार के अवसर उत्पन्न किए हैं।

स्वदेश दर्शन योजना पर्यटन मंत्रालय की महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। यह योजना एक सुनियोजित और प्राथमिकता वाले तरीके से विषयक सर्किटों के विकास के लिए शुरू की गई है। इस योजना के तहत सरकार एक ओर पर्यटकों को बेहतर अनुभव और सुविधाएं उपलब्ध कराने और दूसरी ओर आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश में गुणवत्तायुक्त अवसंरचना के विकास पर ध्यान केन्द्रित कर रही है। यह योजना वर्ष 2014–15 में शुरू की गई थी और आज तक मंत्रालय ने 30 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में 5932.05 करोड़ रुपये लागत की 74 परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इन परियोजनाओं में से 30 परियोजनाओं के इस वर्ष तक पूरे होने की आशा की जा रही है।

पर्यटन मंत्रियों द्वारा 2019 को आसियान-भारत- पर्यटन वर्ष घोषित

17 जनवरी 2019 को तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री श्री के.जे. अल्फोंस वियतनाम के हा–लोंग शहर में आसियान देशों तथा भारत के पर्यटन मंत्रियों की सातवीं बैठक में शामिल हुए। उन्होंने वियतनाम के संस्कृति, खेल तथा पर्यटन मंत्री श्री एनगुयेन एनगोक थियेन के साथ पर्यटन मंत्रियों की बैठक की सह–अध्यक्षता की। पर्यटन मंत्रियों ने 2018 में आसियान तथा भारत के पर्यटन प्रदर्शन पर विचार किया। 2018 में आसियान तथा भारत में 139.5 मिलियन पर्यटकों का आगमन हुआ जो पिछले वर्ष की तुलना में 7.4 प्रतिशत अधिक है।

बैठक के दौरान सिंगापुर में 15 नवम्बर 2018 को आसियान–भारत अनौपचारिक ब्रेक फास्ट सम्मेलन के निर्णयों का स्वागत किया। पर्यटन मंत्रियों ने आसियान–भारत पर्यटन सहयोग वर्ष 2019 लांच किया और आशा व्यक्त की कि दोतरफा पर्यटन आगमन की दृष्टि से सहयोग बढ़ेगा और आसियान तथा भारत के बीच लोगों के आदान–प्रदान को प्रोत्साहन मिलेगा। इससे पहले, 2018 में आसियान–भारत स्मृति सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री ने 2019 को आसियान–भारत पर्यटन वर्ष घोषित करने का प्रस्ताव किया था। इस विषय पर थाईलैंड में 20वें आसियान–भारत पर्यटन कार्यसमूह की बैठक में विचार किया गया था और आसियान–भारत पर्यटन वर्ष की गतिविधियों पर

कलैंडर तैयार करने का निर्णय लिया गया। तदनुसार, पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन वर्ष मनाने के लिए विभिन्न आयोजनों को शामिल करते हुए एक कलैंडर तैयार कर साझा किया है।

पर्यटन मंत्रियों ने पर्यटन सहयोग मजबूत बनाने पर आसियान तथा भारत के बीच 2012 के समझौता ज्ञापन के तहत पर्यटन के क्षेत्र में आसियान–भारत सहयोग को और बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। बैठक में 2018 में किये गये समझौता ज्ञापन को लागू करने के काम में प्रगति पर भी विचार किया गया।

इस बैठक में ब्रुनेई, दारेसलाम, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस गणराज्य, मलेशिया, म्यांमार, फिलिपिंस, सिंगापुर तथा थाईलैंड के पर्यटन मंत्री भी शामिल हुए।

दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले पर आयोजित 'भारत पर्व' 2019 का रंगारंग उत्सव

26 जनवरी, 2019 को गणतंत्र दिवस 2019 के जश्न के एक भाग के हिस्से के तौर पर, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को दर्शाने वाले कार्यक्रम 'भारत पर्व' का लाल किले के प्रांगण में शुभारंभ किया गया। पर्यटन मंत्रालय के तत्कालीन महानिदेशक श्री सत्यजीत राजन ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया। पर्यटन मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों और राज्य सरकारों के सहयोग से 26 से 31 जनवरी 2019 तक इस पर्व का चौथी बार आयोजन किया गया।

'भारत पर्व' आम लोगों के लिए प्रति दिन दोपहर के 12 बजे से रात 10 बजे तक खुला था। एक पहचान पत्र दिखाने पर इसमें प्रवेश निःशुल्क था।

इस साल के आयोजन की प्रमुख सुर्खियों में मूर्तिकार डॉ. राम वनजी सुतार द्वारा बनाई गई 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' की प्रतिकृति और गांधी ग्राम थे, जिसमें 10 चित्रकारों ने 'महात्मा गांधी की विचारधारा' की थीम पर पेंटिंग्स बनाईं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की इस वर्ष के खास आकर्षणों में गणतंत्र दिवस परेड की झांकी, सशस्त्र बलों के बैंडों का चल और अचल प्रदर्शन था। विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा भी एक फोटो प्रदर्शनी लगाई गई थी। इस कार्यक्रम में आईआरसीटीसी द्वारा विशेष पर्यटक रेलगाड़ियों का प्रचार, 'जागो ग्राहक जागो' उपभोक्ता जागरूकता अभियान और शिल्प वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं बिक्री भी मुख्य आकर्षण रहे। राज्य सरकारों के मंडपों में अपने अपने क्षेत्र के पर्वों की थीम को प्रस्तुत करते हुए, राज्यों के पर्यटन उत्पादों को खूबसूरती के साथ प्रदर्शित किया गया। एक बहु–व्यंजन फूड कोर्ट, शिल्प मेला और देश के विभिन्न भागों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी अन्य आकर्षण रही थीं। फूड कोर्ट में राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों और भारतीय स्ट्रीट वेंडरों के राष्ट्रीय संघ द्वारा स्टॉल लगा कर, विभिन्न क्षेत्रों के स्ट्रीट फूड को प्रदर्शित किया गया था। इसके अलावा भारत के विभिन्न राज्यों जैसे केरल, छत्तीसगढ़, राजस्थान, ओडिशा और कर्नाटक के व्यंजनों का प्रचार करने के लिए, इन विशेष व्यंजनों को बनाने के साथ ही, इस फूड कोर्ट में रसोई से प्रत्यक्ष भोजन पकाने का सीधे ही प्रदर्शन भी किया गया। 27 जनवरी 2019 को उत्तराखंड के भोजन प्रदर्शित किए गए। उत्तरी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों ने नृत्य की प्रस्तुत किए।

दिल्ली में लाल किले के प्रांगण में पांच दिन चलने वाले 'भारत पर्व' में इस साल के प्रमुख आकर्षण थे स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की प्रतिकृति और गांधी ग्राम।

पर्यटन मंत्रालय ने इस पर्व में पहली बार एक डिजिटल प्रदर्शनी भी लगाई थी जिसमें भारत सरकार की डिजिटल पहल जैसे अतुल्य भारत की वेबसाइट, मोबाइल ऐप, वर्चुअल रिएलिटी के जरिए भारत के आकर्षक पर्यटन स्थलों को दिखाकर देश में पर्यटन को बढ़ावा देने की कोशिश की गई थी। इन्क्रेडिबल इंडिया के डिजिटल प्रदर्शनी बूथ में पर्यटन मंत्रालय ने वर्चुअल रिएलिटी पूर्वाभ्यास और दूसरे कंटेंट के लिए गूगल आर्ट और कल्चर के साथ तालमेल किया है। इसके अलावा वर्चुअल रिएलिटी के जरिए भारतीय पर्यटन स्थलों के नजारे तैयार करने के लिए एक नए स्टार्टअप एम/एस आउट साइड वीआर को मौका दिया गया है।

इस साल का दूसरा आकर्षण पर्यटन मंत्रालय का 'धरोहर को गोद लो' योजना का स्टॉल रहा, जहां वीडियो के जरिए 'स्मारक मित्र' अपने स्मारक के बारे में बताते/ अपनी योजना के बारे में वीडियो के जरिए जानकारी देते या फिर अपने गोद लिए धरोहर के अनुभव को साझा करते नजर आए।

झारखंड से आए कलाकारों ने छऊ नृत्य, कर्नाटक के कलाकारों ने डोलू कुनिथा और जगलगे, सिक्किम के कलाकारों ने तमांग सेलो तथा मध्यप्रदेश के कलाकारों ने गणगौर लोकनृत्य और मैहर बैंड का प्रदर्शन किया। जबकि उत्तराखंड के कलाकारों द्वारा चपेली का प्रदर्शन किया गया। 29 जनवरी 2019 को तेलंगाना, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश और ओडिशा के व्यंजन बनाते हुए प्रदर्शित किए गए। इसके अलावा पर्व क्षेत्र में असम, उत्तर प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, केरल और हरियाणा के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

पर्यटन मंत्रालय ने इस आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

26 जनवरी, 2019 को दिल्ली के लाल किले के प्रांगण में गणतंत्र दिवस 2019 "भारतपर्व" समारोह के उद्घाटन के अवसर पर तत्कालीन महानिदेशक (पर्यटन) श्री सत्यजीत राजन।

भारत को मिला न्यूयॉर्क टाइम्स ट्रैवल शो 2019 में 'बैस्ट इन शो' के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार

भारत को न्यूयॉर्क टाइम्स ट्रैवल शो 2019 में 'बैस्ट इन शो' के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया है। न्यूयॉर्क, अमेरिका में 25 से 27 जनवरी तक आयोजित उत्तरी अमेरिका का यह सबसे बड़ा ट्रैवल शो है।

पर्यटन मंत्रालय ने अमरीका में भारत के पर्यटन के संवर्धन तथा पर्यटकों को आकर्षित करने के अपने प्रयासों को तेज करने के साथ जैकब के जेविट्स सेंटर, न्यूयॉर्क में आयोजित न्यूयॉर्क टाइम्स ट्रैवल शो–2019 में 'प्रजेंटिंग पार्टनर' के रूप में भाग लिया था ताकि भारत में पर्यटन, विरासत एवं संस्कृति आदि के बारे जानकारियां देकर अमेरिकी निर्गामी यात्रा बाजार में उसकी हिस्सेदारी बढ़ाई जा सके।

सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधमंडल और भारत के पर्यटन उद्योग के अनेक हितधारकों ने इस शो में भाग लिया। इस शो में 'फोकस ऑन इंडिया' सहित भारत पर केन्द्रित अनेक गतिविधियों और उपभोक्ता सेमिनारों, भारत के सांस्कृतिक कार्यक्रमों, भारतीय व्यंजनों और स्वादिष्ट भोजन का आयोजन किया गया। सचिव महोदय ने शो के दौरान व्यापार–सत्र में अमेरिका के जाने–माने अनेक यात्रा व्यावसायियों के साथ बातचीत की और अमेरिका में भारतीय पर्यटन को स्थापित करने के लिए उनसे लया गातार सहयोग देने का आग्रह किया।

पर्यटन मंत्रालय में सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

सिक्किम में पहली स्वदेश दर्शन परियोजना का उद्घाटन

30 जनवरी, 2019 को गंगटोक, सिक्किम में पूर्वोत्तर परिपथ विकास : रंगपो–रोराथंग–अरितार–फड़मचेन–नाथांग–शेराथांग–त्सोंगमो–गंगटोक–फोदोंग–मंगन–लाचुंग–यमथांग–लाचेन–थांगु–गुरुडोंगमर–मंगन–गंगटोक–तुमिनलिंगी–सिंगटम परियोजना का तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री श्री के. जे. अल्फोंस द्वारा उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर सिक्किम राज्य के पर्यटन और नागर विमानन मंत्री श्री उगेन टी ग्यात्सोम भी उपस्थिति थे।

इस परियोजना को मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत जून, 2015 में 98.05 करोड़ रुपये की लागत से स्वीकृति प्रदान की गई थी। स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत सिक्किम में यह पहली परियोजना है। इस योजना के तहत मंत्रालय ने पर्यटन अवसंरचना जैसे पर्यटन सूचना केन्द्र, ध्यान केन्द्र, ऑर्गेनिक इको पर्यटन केन्द्र, लॉग हट, जिप लाइन, फूलों की प्रदर्शनी लगाने के लिए एक केन्द्र, उद्यान पथ, हस्तशिल्प की दुकानें, कैफेटेरिया, बारिश से बचने के लिए शेड, सड़क के किनारे सुविधाएं, अंतिम मील तक संपर्क, पार्किंग, सार्वजनिक शौचालय आदि की सुविधाएं विकसित की है।

परियोजना का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन पर्यटन राज्यमंत्री जी ने परियोजना को पूरा करने में राज्य द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की और कहा कि गंगटोक इतना साफ सुथरा है कि वह सफाई और मेजबानी के अपने स्तर में दुनिया के किसी भी

शहर की बराबरी कर सकता है। पिछले वर्ष पर्यटन क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों के बारे में बताते हुए हुए उन्होंने कहा कि देश डब्ल्यूटीटीसी ट्रेवल और वर्ष 2017 में पर्यटन में वृद्धि के लिए 'टूरिज्म पावर एंड परफॉर्मेंस रिपोर्ट' द्वारा तीसरे नंबर पर रहा और साथ ही विदेशी पर्यटकों के आगमन के मामले में वर्ष 2017 में भारत की वृद्धि दर 14 प्रतिशत रही, जबकि विश्व के पर्यटन में सात प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई थी। सिक्किम में होम स्टे को बढ़ावा देने में राज्य सरकार की पहल के बारे में बताया गया, जिससे सभी वर्गों के नागरिकों को रोजगार मिले हैं। पर्यटन के निरंतर संवर्धन और छितरे हुए स्थानों के बारे में नीति के लिए राज्य सरकार के कदमों की सराहना की और बताया कि पर्यटन मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत सिक्किम में एक अन्य परियोजना को मंजूरी दी है, जिसका 75 प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है।

मंत्रालय ने सितंबर, 2016 में 95.32 करोड़ रुपये की लागत से सिक्किम में चल रही स्वदेश दर्शन परियोजना 'पूर्वोत्तर परिपथ का विकास : सिंगटम–माका–तेमी–बरमोइक टोकल–फोंगिया–न ामची–जोरथंग–ओखारी–सोमबारिया–दारामदीन–जोरेथांग–मेल्ली' को मंजूरी दी थी। परियोजना के अंतर्गत कार्य प्रगति पर है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के विकास पर पर्यटन मंत्रालय प्रमुखता से जोर दे रहा है। क्षेत्र में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के विकास के लिए मंत्रालय ने अनेक पहलें की है। पर्यटन के विकास में क्षेत्र को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है उनमें से एक गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना का अभाव और क्षेत्र में सेवाओं तथा पर्यटन उत्पादों के बारे में जागरूकता की कमी है। मंत्रालय सभी मोर्चों पर अनेक कार्य कर रहा है। एक तरफ मंत्रालय ने 'स्वदेश दर्शन' और 'प्रशाद' की अपनी प्रमुख योजनाओं के तहत क्षेत्र में पर्यटन की अवसंरचना निर्माण को गति प्रदान की है। इसके लिए इस योजना के अंतर्गत सरकार देश में गुणवत्तापूर्ण संरचना के विकास पर विशेष जोर दे रही है ताकि इससे एक तरफ आगुंतक पर्यटकों को बेहतर अनुभव और सुविधाएं दी जा सकें और दूसरी तरफ आर्थिक विकास में गति लाई जा सके।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए मंत्रालय ने क्षेत्र की विविधता, पर्यटन उत्पादों और उसकी समृद्ध संस्कृति को उजागर करते हुए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विशेष प्रचार किया है। पर्यटन मंत्रालय ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन और आतिथ्य सत्कार के क्षेत्र में कामगारों के कौशल को बढ़ाने के लिए होटल प्रबंधन और पाक कला संस्थानों की स्थापना की है।

पर्यटन मंत्रालय के प्रयासों से पूर्वोत्तर क्षेत्र में विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है इससे क्षेत्र की स्थानीय आबादी को रोजगार के बेहतर अवसर मिले हैं।

यदि हमें संपूर्ण विश्व में किसी ऐसे देश कि खोज करनी हो जिसमें प्रकृति की सर्वाधिक सम्पदा, शक्ति और सौंदर्य निहित हो और जिसके कुछ भाग तो वस्तुतः धरती पर स्वर्ग हों तो मैं भारत का नाम लूंगा। –**मैक्स मुलर**

केरल में 'इको सर्किटः पथनमथिट्टा–गवी–वागामोन–थेक्कडी' परियोजना का उद्घाटन

17 फरवरी 2019 को केरल सरकार के पर्यटन मंत्री श्री के. सुरेंद्रन की उपस्थिति में तत्कालीन पर्यटन राज्यमंत्री श्री के.जे. अल्फोंस ने पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के तहत केरल के वागामोन में इको सर्किट का विकास : पथनमथिट्टा – गवी – वागामोन – थेक्कडी परियोजना का उद्घाटन किया।

दिसंबर 2015 में 76.55 करोड़ रुपये की इस इको सर्किट परियोजना को मंजूरी दी गई थी। इस परियोजना के तहत किए गए प्रमुख कार्यों में वागामोन में इको एडवेंचर टूरिज्म पार्क, कदमानीट्टा में सांस्कृतिक केंद्र, पीरुमेदु, इडुक्की में इको लॉग हट्स, पाइन वैली फॉरेस्ट में प्रवेश मार्ग, पगडंडियां, रेन शेल्टर, थेक्कडी, कुमिली, मझियार बांध, पेनस्टॉक और काकी डैम शामिल हैं।

पर्यटन मंत्रालय ने राज्य की पर्यटन क्षमता की पहचान करते हुए स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजनाओं के तहत केरल राज्य में 550 करोड़ की अनुमानित राशि के साथ सात परियोजनाओं को मंजूरी दी है।

"स्टैच्यू ऑफ यूनिटी", केवडिया, गुजरात में राष्ट्रीय पर्यटन सलाहकार परिषद (एनटीएसी) की दूसरी बैठक

21 फरवरी,2019 को तत्कालीन पर्यटन मंत्री श्री के. जे. अल्फोंस ने "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी", केवडिया, गुजरात में राष्ट्रीय पर्यटन सलाहकार परिषद (एनटीएसी) की दूसरी बैठक की अध्यक्षता की। एनटीएसी पर्यटन मंत्रालय की वैचारिक संस्था के रूप में कार्य करती है और सरकार को पर्यटन से संबंधित विभिन्न नीतिगत मामलों में सलाह देती है। इस बैठक में पर्यटन मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, यूएनडब्ल्यूटीओ के प्रतिनिधि और पर्यटन से संबंधित विभिन्न हितधारकों, जैसे केंद्रीय मंत्रालयों के प्रतिनिधियों, पर्यटन उद्योग से संबंधित संस्थाओं के प्रतिनिधियों, पर्यटन क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों आदि ने भाग लिया।

इस बैठक को संबोधित करते हुए, मंत्रीजी ने मंत्रालय की उपलब्धियों और पर्यटन के विकास एवं संवर्धन के लिए सरकार द्वारा की गई हालिया पहलों की व्यापक रूप से तैयार रूपरेखा के बारे में विस्तार से बताया। हाल के वर्षों में वैश्विक स्तर पर देश के उत्कृष्ट प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि भारत विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद (डब्ल्यूटीटीसी) पावर और प्रदर्शन सूचकांक में 2017 में सातवें स्थान से बढ़कर 2018 में तीसरे स्थान पर आ गया है जिसका हमारे नागरिक विमानन क्षेत्र पर भी तेजी से प्रभाव पड़ा है। उन्होंने आगे कहा, 'समाज के सभी वर्गों को रोजगार देते हुए पर्यटन क्षेत्र ने पिछले चार वर्षों में देश में लगभग 14 मिलियन रोजगार सृजित किए हैं और आशा की जाती है कि देश की अतुल्य पर्यटन क्षमता और उत्कृष्ट आतिथ्य एवं तेजी से विकसित हो रही अवसंरचना तथा अच्छे सम्पर्क के कारण आने वाले समय में बेहतर विकास हासिल हो सकेगा।

इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने इस प्रभावी विचार मंथन सत्र के लिए सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद देते हुए कहा कि मंत्रालय एक समर्थक के रूप में कार्य करता है और सभी सुझावों और सिफारिशों को आगे बढ़ाने का काम करता है। सचिव महोदय ने आगे कहा कि मंत्रालय द्वारा अपनी दो प्रमुख योजनाओं, स्वदेश दर्शन और प्रसाद के माध्यम से बहुत ही विशिष्ट पर्यटन अवसंरचना विकास किया गया है, जिसके तहत क्रमशः 6121.69 करोड़ रूपए की लागत से 77 और 832.35 करोड़ रूपए की

लागत की 27 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

परिषद के दूसरे सत्र में गुजरात पर्यटन के अधिकारियों को शामिल किया गया था, जिसमें चर्चा का मुख्य विषय स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के लिए पर्यटकों की संख्या बढ़ाना उद्देश्य था और साथ ही कैसे इसे प्रति वर्ष पांच मिलियन तक पहुंचाया जाए, इस पर भी विचार करना था। सत्र के दौरान, मेजबान राज्य गुजरात ने इस मामले पर प्रस्तावित पहल की व्याख्या करते हुए एक प्रस्तुति दी। परिषद की बैठक हितधारक प्रतिनिधियों द्वारा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' के दौरे से पहले की गई थी ताकि इस स्थल पर पर्यटकों की संख्या को बढ़ाने के लिए आवश्यक कदमों पर प्रभावी ढंग से चर्चा की जा सके।

वर्तमान एनटीएसी का गठन 27 अक्टूबर, 2016 को 3 वर्षों के कार्यकाल के लिए पर्यटन मंत्री की अध्यक्षता में किया गया था। वर्तमान में, पर्यटन मंत्रालय के अलावा 12 हितधारक केंद्रीय मंत्रालय, यात्रा और पर्यटन प्रबंधन के क्षेत्र के 16 विशेषज्ञ और समिति के सदस्यों के रूप में उद्योग संघों से जुड़े 7 पदेन सदस्य हैं। वर्तमान परिषद की पहली बैठक 12 अप्रैल, 2018 को आयोजित की गई थी।

आईटीबी, बर्लिन में भारत को मिला प्रथम पुरस्कार

'टीवी सिनेमा स्पॉट' श्रेणी में अंतर्राष्ट्रीय 'गोल्डन सिटी गेट टूरिज्म् अवॉर्ड, 2019'

पर्यटन मंत्रालय को "टीवी सिनेमा स्पॉट' श्रेणी में प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय 'गोल्ड्न सिटी गेट टूरिज्म अवॉर्ड, 2019' का प्रथम पुरस्कार मिला है। पर्यटन मंत्रालय में सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी ने आईटीबी, बर्लिन में 08 मार्च, 2019 को पुरस्कार प्राप्त किया। यह कार्यक्रम 06 मार्च से 10 मार्च, 2019 तक आयोजित किया गया था।

अतुल्य भारत 2.0 अभियान के एक भाग के रूप में मंत्रालय द्वारा तैयार की गई निम्नलिखित संवधर्नात्मक फिल्मों/टेलीविजन कमर्शियल फिल्मों को पुरस्कृत किया गया है:

1. योगी ऑफ द रेसट्रैक
2. दि रिइन्कार्नेशन ऑफ मिस्टरर एंड मिसेज जॉन्स
3. सेंन्चूअरी पेरिस
4. महारानी ऑफ मैनहट्टन, और
5. दि मसाला मास्टर शेफ

पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न श्रेणियों में प्रतिवर्ष गोल्डन सिटी गेट टूरिज्म मल्टी–मीडिया पुरस्कार दिए जाते हैं। 'गोल्डन सिटी गेट' देशों, महानगरों, क्षेत्रों और होटलों के लिए एक सृजनात्मणक मल्टी–मीडिया अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता है। प्राप्त प्रविष्टियों के आधार पर फिल्म और पर्यटन क्षेत्रों के विशेषज्ञों से बनी एक अंतर्राष्ट्रीय ज्यूरी द्वारा पुरस्कार के लिए निर्णय लिया जाता है। आईटीबी, बर्लिन में वार्षिक पुरस्कार समारोह आयोजित किया जाता है। यह विश्व का एक अग्रणी पर्यटन व्यापार शो है।

पर्यटन मंत्रालय ने सितम्बर, 2017 में अतुल्य भारत 2.0 अभियान शुरू किया था। 2.0 अभियान विश्व भर में जेनेरिक प्रमोशनों से बाजार आधारित प्रमोशनल योजनाओं एवं विषय–सामग्री सृजन में बदलाव का प्रतीक है। इनमें योग, स्वास्थ्य, वन्य जीव, विलासिता एवं खानपान पर आधारित उपर्युक्त टेलीविजन कमर्शियल फिल्में शामिल हैं। इन कमर्शियल फिल्मों को अंग्रेजी में तैयार किया गया है और जर्मन, फ्रैंच, स्पेनिश, इटालियन, रूसी, चीनी, जापानी, कोरियन और अरबी जैसी नौ अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में वॉइसओवर द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

जनजातीय मामलों के तत्कालीन मंत्री श्री जुएल उरांव ने 01 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस से भेंट की।

4 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे और बिहार के पर्यटन मंत्री श्री प्रमोद कुमार ने तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे.अल्फोंस के साथ एक बैठक की। इस अवसर पर मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

11 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में तृतीय भारत–जापान संयुक्त कार्य समूह/पर्यटन परिषद की बैठक और भारत–जापान पर्यटन शिखर सम्मेलन में भाग लेते हुए सचिव (पर्यटन) श्री योगेंद्र त्रिपाठी, जापान पर्यटन एजेंसी के आयुक्त श्री हिरोशी ताबाता और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

16 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में मिजोरम के पर्यटन मंत्री श्री रॉबर्ट रोमाविया राल्टे ने तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे.अल्फोंस से भेंट की।

दिल्ली के लाल किले के प्रांगण में गणतंत्र दिवस 2019 समारोह– "भारतपर्व" केउद्घाटन के अवसर पर मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

दिल्ली के लाल किले के प्रांगण में गणतंत्र दिवस 2019 समारोह– "भारतपर्व" केउद्घाटन के अवसर पर मंच पर आसीन मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

31 जनवरी, 2019 को नई दिल्ली में दक्षिण कोरिया के मीडिया प्रतिनिधिमंडल के साथ तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा अन्य अधिकारीगण।

मालदीव के पर्यटन मंत्री श्री अली वहीद ने 22 फरवरी, 2019 को तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस से भेंट की। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय होटल प्रबंध एवं केटरिंग तकनालॉजी परिषद, नोएडा के कार्यालय में 8 तथा 9.2.2019 को ''आतिथ्य उद्योगः दृश्य 2025 आधुनिक प्रवृत्तियाँ, नवीन अन्वेषण एवं भविष्य'' इस विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। माननीय श्री योगेंद्र त्रिपाठी, सचिव (पर्यटन) भारत सरकार ने दीप प्रज्जवलित करके सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री उपाली रत्नायके, महानिदेशक, श्रीलंका पर्यटन एवं सुविख्यात शेफ श्री हेमंत ओबरॉय भी उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में प्रकाशित पुस्तक का विमोचन करते हुए माननीय श्री योगेंद्र त्रिपाठी, सचिव (पर्यटन) एवं उनके साथ है श्री लेरी यू, प्रोफेसर, जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी, श्री ज्ञान भूषण, मुख्य कार्यकारी अधिकारी – एनसीएचएमसीटी, श्री उपाली रत्नायके, महानिदेशक, श्रीलंका पर्यटन विभाग तथा श्री हेमंत ओबरॉय सुविख्यात शेफ

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा केरल में आध्यात्मिक सर्किट का विकासः परियोजना का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 14 जनवरी 2019 को केरल में 'आध्यात्मिक सर्किट का विकासः श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर–अरनमुला–सबरीमाला' परियोजना का उद्घाटन किया। यह परियोजना पर्यटन मंत्रालय की 'स्वदेश दर्शन योजना' के तहत कार्यान्वित की जा रही है। इस अवसर पर केरल के राज्य पाल श्री पी.सदाशिवम, केरल के मुख्यमंत्री श्री पी.विजयन और तत्कालीन पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री के.जे. अल्फोंस भी पर उपस्थित थे।

'आध्यात्मिक सर्किट का विकासः श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर–अरनमुला–सबरीमाला' परियोजना को पर्यटन मंत्रालय द्वारा 92.22 करोड़ रुपये की लागत के साथ वर्ष 2016–17 में मंजूरी दी गई थी। इस परियोजना के तहत श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर से जुड़े ज्यादातर कार्य पूरे हो चुके हैं।

श्री पद्मनाभ स्वामी मंदिर को भगवान विष्णु के 108 दिव्यदेशमों में से एक माना जाता है। इस मंदिर के दर्शन के लिए पूरे साल बड़ी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। लेकिन मंदिर परिसर में पर्यटकों के आगमन की दृष्टि से इसे एक प्रतिष्ठित गंतव्य के रूप में स्थापित नहीं किया जा सका था। जिससे यहां पर्यटकों के लिए पर्याप्त सुविधाओं का भी अभाव रहा है। इस परियोजना के तहत मंत्रालय ने धरोहर से जुड़ी विशेषताओं और सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इस मंदिर और आसपास के क्षेत्रों का विकास एवं पुनरुद्धार किया है।

स्वदेश दर्शन योजना नियोजित ढंग से एवं प्राथमिकता के साथ देश में विषयगत पर्यटन सर्किटों के विकास के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित की जा रही प्रमुख योजनाओं में से एक है।

स्वच्छता में योगदान दे

✔ क्या करें

✘ क्या न करें

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, कमरा नं. 18, सी–1 हटमेंटस,
दाराशिकोह मार्ग, नई दिल्ली–110011, ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24×7